एम.पी.एच.आई.एन.२०१२/४५०६९

।।ओ३म्।।

डाक पंजीयन : एम.पी./.आई.डी.सी./१४०५/२०२४-२६

प्रत्येक माह दिनांक २५ को प्रकाशित एवं २५ को प्रेषित

हिन्दी-मासिक

वैदिक संसार

● वर्ष : १३ ● अंक : ७ ● २५ मई २०२४, इन्दौर (म.प्र.) ● मूल्य : ५०/- ● कुल पृष्ठ : ३६

उस देश की, उन व्यक्तियों की अत्यन्त दुर्दशा क्यों नहीं होगी जो एक परमात्मा को छोड़कर इतर की उपासना करते हैं। -महर्षि दयानन्द सरस्वती

सनातन धर्म-संस्कृति तथा राष्ट्र की स्वतन्त्रता में अतुलनीय योगदान देने वाली महान् विभूतियों को उनके जयन्ती एवं पुण्यतिथि/बलिदान दिवस पर 'वैदिक संसार' की ओर से श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए शत-शत नमन...

वैदिक धर्म के साथ अनेक मतों के गूढ़ ज्ञाता, अनेक भाषाविद्, शिक्षाविद्

साहित्यकार पं. चमूपति एम.ए.

जन्म	निधन
१५ फरवरी १८९३	१५ जून १९३७

भीमराव अम्बेडकर के सवर्ण मार्गदर्शक, महान दलितोद्धारक, शिक्षाविद्, साहित्यकार

मास्टर आत्माराम अमृतसरी

जन्म	निधन
१८६६	१९३८

भारतीय शास्त्रार्थ परम्परा के संवाहक शास्त्रार्थ महारथी

पण्डित गणपति शर्मा

जन्म	निधन
१८७३	२७ जून १९१२

सरदार भगतसिंह को आदर्श के केन्द्र में रखकर अमर बलिदानी

हरिकिशन सरहदी

जन्म	बलिदान
१९०८	९ जून १९३१

अद्‌भुत, विलक्षण, संग्रहणीय, ऐतिहासिक वैदिक संसार 'विशेषांक' की प्रतियाँ कुछ महानुभावों को प्रत्यक्ष भेंट की गईं

आर्य समाज विजयनगर, जिला अजमेर के प्रधान श्री जगदीश प्रसादजी सेन को विशेषांक प्रति भेंट की गई।

आर्य समाज नागदा जंक्शन, जिला उज्जैन के सक्रिय सेवाभावी सदस्य श्री भँवरलालजी पांचाल के आवास पर यज्ञशाला में देवयज्ञ किया और आपको व आपकी धर्मपत्नी श्रीमती शान्तिदेवी को विशेषांक प्रति भेंट की गई।

अधिवक्ता श्री रमेशचन्द्र जी चन्देल, नागदा जंक्शन को आपके कार्यालय पर विशेषांक प्रति भेंट की गई। साथ में हैं श्री भँवरलालजी पांचाल।

ब्याईजी श्री मोहनलालजी शर्मा भुसावल, महाराष्ट्र को गृह प्रवेश अवसर पर उपहार स्वरूप विशेषांक प्रति भेंट की गई।

वैदिक संसार के अभिन्न सहयोगी, वरिष्ठ समाजसेवी, योगाचार्य श्री नरेन्द्र जी भारतीय द्वारा ग्राम डोकवा, जिला चुरू, राजस्थान के विद्यालय को विशेषांक प्रति भेंट की गई।

श्री सुमनकुमार जी सुदर्शन, रावतभाटा को आर्य समाज रावतभाटा के सक्रिय सदस्य पंकज कुमार विशेषांक प्रति भेंट करते हुए।

आर्य समाज रावतभाटा के यशस्वी प्रधान श्री विनोद कुमारजी त्यागी क्रमशः श्री गौरव जी शर्मा, श्री मंजुल मयंक जी व अनुप्रिया त्यागी, श्रीमती नूपुर वार्ष्णेय, गीतांजलि व रुषिर जी तथा शिक्षाविद् गणेशी लालजी को विशेषांक प्रति भेंट करते हुए।

आर्य जगत् की सम्पन्न विविध गतिविधियाँ

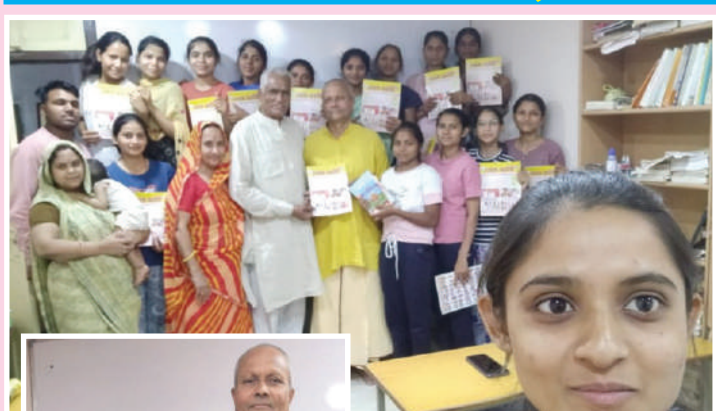

दर्शनाचार्य मुनि सत्यव्रत जी अपने इन्दौर प्रवास से समय निकालकर दिनांक २८ अप्रैल को महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम बड़वानी पधारे और आपने अपने अमृत प्रवचनों से विद्यार्थियों को लाभान्वित किया तथा स्वाध्याय हेतु वैदिक साहित्य प्रदान किया। इस अवसर पर सभी विद्यार्थियों को वैदिक संसार अप्रैल मासिक प्रति भी प्रदान की गई।

१०१ वर्षीय शिक्षाविद् श्री कन्हैयालालजी रतावजिया, नीमच (म.प्र.) के निधन पर आर्य समाज के प्रधान श्री मनोज जी सोनी के ब्रह्मत्व में शुद्धि यज्ञ किया गया। श्री प्रवीण आर्य भी इस अवसर पर उपस्थित रहे। विस्तृत विवरण पृष्ठ संख्या ३४ पर पढ़ें।

जो बिना भूख के खाते हैं और जो भूख लगने पर भी नहीं खाते, वे रोग सागर में गोता लगाते हैं। –महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्राणिमात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

वर्ष : १३, अंक : ७

अवधि : मासिक, भाषा : हिन्दी

प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ मई, २०२४

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर
०९४२५०६९४९१

सम्पादक
आचार्य ओमप्रकाश आर्य
आर्य समाज रावतभाटा (राज.)
चलभाष : ९४६२३१३७९७

पत्र व्यवहार का पता
महर्षि दयानन्द स. विद्यार्थी आवास आश्रम
४७, जांगिड भवन, कालिका माता रोड,
बड़वानी (म.प्र.) पिन–४५१५५१

अक्षर संयोजन–
नितिन पंजाबी (वी.एम. ग्राफिक्स), इन्दौर
चलभाष : ९८९३१२६८००

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

अति विशिष्ट संरक्षक सहयोग	५१,०००/–
पुण्यात्मक विशेष सहयोग	११,०००/–
पंचवार्षिक सहयोग	२,१००/–
त्रैवार्षिक सहयोग	१,३००/–
वार्षिक सहयोग	५००/–
एक प्रति	५०/–

(पंजीकृत डाक व्यय पृथक् से देय होगा।)

विज्ञापन : रंगीन पृष्ठ (भीतरी) ११,०००/–

खाता धारक का नाम : **वैदिक संसार**
बैंक का नाम : यूको बैंक
शाखा : ग्राम पिपलियाहाना, तिलक नगर, इन्दौर
चालू खाता संख्या : 05250210003756
आई एफ एस सी कोड : **UCBA**0000525
कृपया खाते में राशि जमा करने के पश्चात् सूचित अवश्य करें।

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज : **'वैदिक संसार'**

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ क्र.
अमृतमयी वेदवाणी : साम–अथर्ववेद शतक पुस्तक से	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	०४
...आर्यावर्त भूमण्डल के विशेष पर्व एवं दिवस	संकलित	०४
वैदिक संसार पत्रिका के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
सम्पादकीय : सर्वविनाशकारी जाति–पाँति का भयावह खेल कब तक?	आचार्य ओमप्रकाश आर्य	०५
अनूठा ग्रन्थ : वैदिक संसार विशेषांक	पुष्पा शर्मा	०६
महान् विभूतियाँ : ... : पं. गणपति शर्मा	साभार : परोपकारी	०७
: ...अमर बलिदानी : हरिकिशन सरहदी	डोंगरलाल पुरुषार्थी	०७
आओ! जानें परमपिता परमेश्वर के निज और मुख्य नाम 'ओ३म्' को	सुरेशचन्द्र शास्त्री	०९
प्रतिक्रिया : मध्यप्रदेश सरकार का सराहनीय, स्वागत योग्य निर्णय	सुखदेव शर्मा	१०
भारतीय संस्कृति की रीढ़ गुरुकुल शिक्षा प्रणाली	डॉ. गंगाशरण आर्य	११
मातृशक्ति विशेष : वेद और नारी सम्मान	सत्यकेतु आर्य	१३
'ओ३म्' जपो रे मनमा	डॉ. रवीन्द्र कुमार शास्त्री सोम	१३
श्री सुखदेव शर्मा और वैदिक संसार/ईश्वर भक्त महान् बनो	पं. नन्दलाल निर्भय	१४
जातिवाद–साम्यवाद का शत्रु : चिन्तनीय विषय	पं. उम्मेदसिंह विशारद	१५
ज्ञानरूपी परमात्मा	आर्यपथिक रमेशचन्द्र भाट	१६
आज का मनुष्य	राधेश्याम गोयल	१७
जगत् गुरु ऋषि दयानन्द	देवकुमार प्रसाद आर्य	१७
मैं कौन?	सुन्दरलाल चौधरी	१८
क्या ये ही न्यायकारी विक्रमादित्य का देश है?	आर्य पी.एस. यादव	१८
एक अभिनव योजना : आर्य बाल संस्कार शाला	वेदप्रकाश आर्य	१९
युवा वर्ग विशेष : अनमोल मोती	बंशीलाल आर्य	१९
क्या मनु के विरोधी इसे पढ़ना चाहेंगे?	रामफलसिंह आर्य	२०
आपकी भावनाएँ/शुभेच्छाएँ	पाठक पाती	२२
धर्मात्माओं से डरें, अधर्मात्माओं से नहीं	राजेन्द्र व्यास	२३
कैसे होगा रामराज्य का सपना साकार, हम जा रहे किस ओर?	मोहनलाल दशोरा	२४
स्वास्थ्य विशेष : आँवला, सेब, बेल, अनन्नास व अंगूर से बनाए मुरब्बे	डॉ. श्वेतकेतु शर्मा	२५
गणस्वामी	रमेशचन्द्र चौहान	२७
वैदिक संसार	सुन्दरलाल चौधरी	२७
पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश	खुशहालचन्द्र आर्य	२८
हे प्रभु! एक दयानन्द और भेजो	राजेन्द्र बाबू गुप्त	२८
जीवन दर्शन है पुरुषार्थ चतुष्टय	डॉ. श्वेतकेतु शर्मा	२९
सम्बन्ध	गोपीदास रामावत	३१
पुस्तक परिचय : संस्कृत साहित्य में स्वमूल्य परम्परा	देवमुनि	३१
आर्य जगत् की सम्पन्न गतिविधियाँ	संकलित	३२
महर्षि दयानन्द आश्रम, बड़वानी पर मासिक अतिथि यज्ञ सम्पन्न	वैदिक संसार	३४
नहीं रहे वयोवृद्ध शिक्षाविद् कन्हैयालालजी रतावजिया...	सुखदेव शर्मा	३४

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों की असहमति की स्थिति में पाठकगण सीधे लेखक से वार्ता करें, सम्पादक या प्रकाशक से नहीं।

अमृतमयी वेदवाणी

साम–अथर्व वेद शतक पुस्तक से

स्वामी शान्तानन्द सरस्वती

(एम.ए. दर्शनाचार्य)

प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दर नगर, रोहतक (हरियाणा)
सन्त औधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर (कच्छ), गुजरात
चलभाष : ९९९८५९४८१०, ९६६४६३०११६

इन्द्रमीशानमोजसाऽभि स्तोमैरनूषत।
सहस्त्रं यस्य रातय उत वा सन्ति
भूयसीः।।(४९)

–सामवेद उत्तरार्चिक.५.१.२०.३

शब्दार्थ : हे मनुष्यो! आप लोग **ओजसा ईशानम्** = अपने अद्‌भुत बल से सब पर शासन करने वाले महाऐश्वर्यवान् प्रभु की **स्तोमैः** = स्तुति बोधक वेदमन्त्रों से **अभि अनुषत** = सब प्रकार से स्तुति करो, **यस्य सहस्त्रम्** = जिस प्रभु के हजारों **उत वा भूयसीः** = अथवा हजारों से भी अधिक **रातयः सन्ति** = दिये हुए दान हैं।

विनय : हे महादानी, महादेव, परम ब्रह्म परमेश्वर! आप संसार के समस्त जीवों को हजारों, लाखों, करोड़ों और उससे भी अधिक असंख्य प्रकार के दान देने वाले अनन्त ऐश्वर्यवान् हैं। अत: जितना भी दान करें, आपमें किसी प्रकार की न्यूनता या कमी नहीं होती है। आप परमात्मा भौतिक सम्पत्ति व आध्यात्मिक सम्पत्ति इन दोनों सम्पत्तियों से परिपूर्ण हैं और आप पूर्ण प्रभु से सम्पूर्ण सम्पत्ति भी हमें मिल जाये तो भी आप सम्पूर्ण ही रहने वाले हैं। इसलिए आप दिव्य ईश्वर की हम सुन्दर वेद के मन्त्रों से स्तुति करें, आपकी उपासना करें और आपसे भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार की सम्पत्ति को प्राप्त करें।

हे परमज्ञानी, सर्वज्ञ, सभी पर अपना शासन करने वाले सब राजाओं के भी राजा तथा सब विद्वानों के भी विद्वान् परमात्मा! आप तो सब भाषाओं को जानने–समझने वाले हो। किसी भी भाषा में भक्तजन श्रद्धा और प्रेमपूर्वक अनन्य भाव से आपको पुकारते हैं तो उनकी पुकार को सुनने वाले हो। अत: हम संस्कृत के वेद मन्त्रों के साथ अपनी मातृभाषा में भी आपसे प्रार्थना करते हैं। आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार करिये व हमारी शुभ मनोकामनाओं को पूर्ण करिये।

पद्यार्थ

हे महान् प्रभु सत्ताधारी,
दाता, रक्षक, पितु, महतारी।
अद्‌भुत दान बड़ा महादानी,
करो स्तुति वर विज्ञानी।
है अनन्त उपकार कहें क्या,
विमल वेदगायन से प्रभु ध्या।।

दर्शनाचार्या विमलेश बंसल (विमल वैदेही), दिल्ली
चलभाष : ८१३०५८६००२

विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त जून २०२४ के कुछ महत्वपूर्ण पर्व-दिवस

१. विश्व दुग्ध दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय बाल सुरक्षा दिवस, वैश्विक माता–पिता दिवस। २. तेलंगाना राज्य स्थापना दिवस। ३. विश्व साइकल दिवस। ४. आक्रामकता से पीड़ित बच्चों का अन्तर्राष्ट्रीय दिवस। ५. गुरु गोलवलकर पुण्यतिथि, विश्व पर्यावरण दिवस, सम्पूर्ण क्रान्ति दिवस। ७. विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस, ८. विश्व महासागर दिवस, विश्व मस्तिष्क ट्यूमर दिवस। ९. महाराणा प्रताप व महाराणा छत्रसाल जयन्ती, बिरसा मुण्डा बलिदान दिवस। १०. **स्वामी दीक्षानन्द जयन्ती,** गुरु अर्जुनदेव पुण्यतिथि, विश्व रक्तदाता दिवस। १५. **आर्य पं. चमूपति एम.ए. पुण्यतिथि,** विश्व बुजुर्ग दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस, विश्व पवन दिवस, एशियन डेंगू दिवस। १६. विश्व पितृ दिवस, सिन्ध सम्राट् महाराजा दाहिरसेन बलिदान दिवस। १७. विश्व सूखा एवं मरुस्थली नियन्त्रण दिवस। १८. **महान् दलितोद्धारक आर्य मास्टर आत्माराम अमृतसरी जयन्ती,** गोवा क्रान्ति दिवस, घृणास्पद भाषण के विरोध का वैश्विक दिवस, महारानी लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस। १९. संघर्ष में यौन हिंसा उन्मूलन हेतु वैश्विक दिवस। २०. विश्व सौहार्द्र दिवस, विश्व शरणार्थी दिवस। २१. अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस, विश्व संगीत दिवस, विश्व हाइड्रोग्राफी दिवस। २२. सन्त कबीर जयन्ती। २३. पं. श्यामाप्रसाद मुखर्जी पुण्यतिथि, गुरु हरगोविन्द जयन्ती, संजय गाँधी पुण्यतिथि, अन्तर्राष्ट्रीय ओलिम्पिक दिवस, संयुक्त राष्ट्र लोक सेवा दिवस। २४. वीरांगना रानी दुर्गावती बलिदान दिवस, कूटनीति में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस। २६. अन्तर्राष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस, अत्याचार पीड़ित अन्तर्राष्ट्रीय दिवस। २७. **शास्त्रार्थ महारथी गणपति शर्मा (आर्य) पुण्यतिथि,** मधुमेह जाग्रति दिवस, सूक्ष्म–लघु व मध्यम उद्यम दिवस। २८. पूर्व प्रधानमन्त्री नरसिम्हाराव जयन्ती। २९. राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस। ३०. अन्तर्राष्ट्रीय संसदवाद दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय शूद्र ग्रह दिवस।

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान– वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि–मुनियों एवं ऋषि दयानन्द–प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगद्रष्टा, स्वराष्ट्र–प्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित–पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, असत्य के खण्डन और सत्य के मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्–साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी महर्षि दयानन्द सरस्वती के समस्त मानवजाति पर किये गये उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार–प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

सम्पादकीय

सर्वविनाशकारी जाति–पाँति का भयावह खेल कब तक?

ओमप्रकाश आर्य

आर्य समाज, रावतभाटा, वाया कोटा (राजस्थान)
चलभाष : ९४६२३१३७९७

बताते हैं कि भारत में लगभग ४००० से अधिक जातियाँ हैं। ये जातियाँ जन्म के आधार पर निर्धारित की गई हैं। भले ही कोई कितना ही विद्वान् पढ़ा–लिखा हो, यदि उसका जन्म तथाकथित निम्न जाति में हुआ है तो वह उसी जाति का माना जाएगा और यदि कोई कितना ही मूर्ख क्यों न हो, यदि उसने उच्च जाति में जन्म पाया है तो वह उसी जाति का माना जाएगा। यहाँ कर्म की प्रधानता नहीं अपितु जन्मना जाति की प्रधानता है। जन्मना जाति के आधार पर आरक्षण व्यवस्था लागू की गई है जो अब राजनीतिज्ञों के लिए ब्रह्मास्त्र के रूप में उपयोग की जाती है। वोटों का सारा खेल जाति के आधार पर खेला जाता है। इससे परस्पर विद्वेष की भावना भड़कती है। कभी–कभी द्वेष की आग में लोग झुलस भी जाते हैं।

वास्तव में जाति–पाँति देश–समाज के लिए भयावह है। यह असाध्य रोग है। इस रोग के चलते एक स्वस्थ समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। इस भावना से राष्ट्र की शक्ति कमजोर होती है। लोग स्वार्थवश अपना ही वर्चस्व सर्वोपरि रखना चाहते हैं। इस दिशा में राजनेता इसे एक हथियार के रूप में उपयोग करते हैं। पद पाने के लिए अपनी–अपनी जातियों को साधने में लगे रहते हैं। इसमें आरक्षण एक ऐसा मुद्दा बन चुका है जो न निगलते बनता है न उगलते बनता है। **'भई गति साँप छछूँदर केरी'** वाली कहावत चरितार्थ होती है। उच्च जाति में उत्पन्न व्यक्ति अपने को ऊँचा समझता है और वहीं निम्न जाति में उत्पन्न व्यक्ति में कहीं न कहीं कुण्ठा अवश्य विद्यमान होती है।

देश को स्वतन्त्रता प्राप्त हुए सात दशक से अधिक हो गए। इस अवधि में जातीयता की भावना गहरी ही हुई है। इसका मुख्य कारण जन्मना जाति को लेकर वोटों की राजनीति है। अब तो विद्यालयों में भी नन्हे–मुन्ने बच्चों की जाति लिखी जाती है। बिना जातिसूचक सरनेम के कोई नाम ही नहीं लिखा जाता। बच्चों के अन्दर जन्म से जाति–पाँति का विष–वपन किया जाता है। फिर यह विष–वपन नौकरियों में आरक्षण व अनारक्षण के रूप में विद्वेष के रूप में फूटता है। यह सबको मालूम है कि नौकरी सबकी नहीं लगेगी फिर भी जाति का हथियार लेकर सब लड़ने को तैयार रहते हैं। विडम्बना तो यह है कि आर्य समाज के अलावा कोई जाति–पाँति मिटाने का खतरा मोल नहीं लेना चाहता। जाति–पाँति की खाई के कारण देश का कितना विनाश हुआ है यह सबको मालूम है। लोगों को बाँटकर विदेशियों ने इस देश पर शासन किया। निम्न जातियों की अलग बस्ती बसाई गई। परिणाम स्वरूप कितने लोगों को विधर्मियों ने बलात् अपनी विचारधारा को स्वीकार करवाया। स्थिति आज देख लीजिये। यदि यही स्थिति रही तो एक दिन सबको जाति–पाँति की ज्वाला में झुलसना पड़ेगा। इसकी जड़ें रसातल तक पहुँच चुकी हैं। इन्हें उखाड़ना सहज नहीं है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई तक होता तो भी गनीमत था। यहाँ तो हिन्दू ही जातियों के चिथड़े–चिथड़े रूप में हैं।

यह तो बदलते समय और करवट लेते युग का धन्यवाद कीजिये कि इन्हीं जातीयता की भावनाओं में गुण, कर्म के आधार पर अन्तर्जातीय विवाह भी खूब सम्पन्न हो रहे हैं। यह राष्ट्र के हित में है। भले ही राजनेता जाति का वोट साधें किन्तु सुबुद्धि युवा पीढ़ी अपने पसन्द के अनुसार अपना जीवन साथी चुन रही है। जातियों के मद में चूर लोगों में भी इसका पैर पसर चुका है। अन्तर्जातीय विवाह में केवल गुण, कर्म की प्रधानता होती है। यही सुखमय जीवन का आधार स्तम्भ है।

जाति–पाँति का बखेड़ा बहुत जटिल और उलझा हुआ विषय है। जातियों में उपजातियों की शाखाएँ, भला हिन्दू एक कैसे हो सकते हैं? यही उनके पतन का मुख्य कारण है। वर्तमान समय में जन्मना जाति आधारित आरक्षण एक ऐसा मुद्दा बन चुका है जो अनेक विषमताओं की जड़ है। कोई कहता है कि हम तो आरक्षण को जब तक धरती रहेगी, तब तक खत्म नहीं होने देंगे। ऐसी भावना सिर्फ और सिर्फ वोटों के कारण है। बाँटो और राज करो की नीति सर्वथा अवैदिक है। आर्य समाज ने जाति–पाँति तोड़ने में अग्रणी भूमिका निभाई है। इस दिशा में उसे आशातीत सफलता भी मिली है, किन्तु आज फिर वही गलती दोहराई जा रही है जो पहले की जा चुकी है। मैं तो ऊँचा हूँ और वह नीचा है। यह भावना पूरे हिन्दू समाज को डुबो देगी। हम कहीं भी तो एक नहीं हो पा रहे हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस कमजोरी को निकट से देखा था। इसलिए उन्होंने एकता की भावना लाने के लिए सबको वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया। बिना वेदों की ओर लौटे मानव का कल्याण सम्भव नहीं है। जाति के भयावह नासूरी खेल को हमें समझना पड़ेगा और इसकी समाप्ति का उपाय भी खोजना होगा। इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या होगा कि हम अपने आदर्श महापुरुषों को भी जाति के कठघरे में लाकर बन्द करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

कोई भी महापुरुष जाति के कारण आदर्श के केन्द्र में स्थापित नहीं हुआ है। उसके उच्च कर्म उसे महान् बनाते हैं। जाति नहीं, कर्म महान् होता है। सुकर्म से ही मनुष्य विख्यात होता है।

जाति का अभिमान अहंकार को जन्म देता है। अहंकार से मनुष्य का पतन निश्चित है। आर्य समाज कभी भी जन्मना जाति का पोषक नहीं रहा है। वेदों के आधार पर यह मानता है कि मनुष्य की जाति तो एक है। उसके कर्म अलग–अलग हो सकते हैं। वही कर्म उसके वर्ण हैं। वर्ण जन्मना नहीं कर्मणा होता है। यही समाज व राष्ट्र के हित में है। जाति तो देश–समाज के लिए कोढ़ है। वोटों की राजनीति के चलते राजनेता यह चाहते ही नहीं हैं कि यह समाप्त हो। अब तो समय की माँग के अनुसार तथाकथित हिन्दू जाति को होश में आ जाना चाहिये, अन्यथा नहीं जागे तो बहुत देर हो जाएगी, फिर कुछ नहीं होगा।

जाति-पाँति के दुष्परिणाम

१. राष्ट्रीय एकता में बाधक है : इसके कारण हमारी राष्ट्रीय एकता पर प्रभाव पड़ता है। पड़ोसी देश तो यही चाहते हैं। इस दुष्परिणाम से बचने के लिए इस भयावह नासूरी खेल को खत्म किया जाना चाहिये। यह भविष्य के लिए खतरे की घंटी है। इस भावना से न कभी देश का हित हुआ है और न कभी होगा। यदि राष्ट्र को सशक्त, अखण्ड, अजेय, समृद्ध बनाना है तो देश को जाति–पाँति मुक्त बनाना पड़ेगा।

२. राष्ट्रीय हित के स्थान पर स्वार्थ भावना : इससे संकीर्ण भावना का जन्म होता है। हर व्यक्ति अपनी ही जाति का अभ्युदय चाहता है। स्वार्थ के ही कारण तो आरक्षण का मुद्दा गरमाता रहता है। इस व्यवस्था से कभी भी सबको प्रसन्न नहीं किया जा सकता। जब सबके लिए आरक्षण हो जाएगा तो देश का टुकड़ों में विभक्त होना अवश्यम्भावी हो जाएगा।

३. प्रजातन्त्र के लिए खतरे की घंटी है : जब भी आरक्षण के लिए आन्दोलन होता है, वह राष्ट्रीय एकता को शिथिल ही करता है। इससे पूरा देश प्रभावित होता है। राष्ट्रीय सम्पत्ति की भी क्षति होती है। प्रजातन्त्र खतरे में पड़ जाता है। इन सबके पीछे जन्मना जाति–पाँति की स्वार्थमयी ऊँच–नीच की भावना है। अपना देश दुनिया में सिरमौर रहा है। इसकी गरिमा को नहीं भुलाया जाना चाहिये।

४. पक्षपात तथा भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है : जब हर व्यक्ति अपनी ही जाति को ऊँचा उठाने का सपना देखेगा तो उसमें पक्षपात का जन्म होगा और भ्रष्टाचार फन फैलाएगा। पक्षपात से सबकी उन्नति में अपनी उन्नति सम्भव नहीं होगी। हर पढ़ा–लिखा व्यक्ति संकीर्णता से ग्रस्त दिखेगा।

५. सम्पूर्ण मानव जाति के लिए अभिशाप है : जाति–पाँति भाईचारे की भावना को समाप्त करती है। ईर्ष्या, द्वेष, कलह, घृणा, वैमनस्य जैसी भावनाएँ प्रबल हो जाती हैं। इससे देश में अशान्ति पैदा होती है। यह राष्ट्र के लिए हितकारी नहीं है।

६. तनाव को जन्म देती है : इस भावना के कारण उच्च जाति का व्यक्ति अपने को ऊँचा दिखाने का प्रयत्न करता है वहीं निम्न जाति का हीनता से ग्रस्त होता है। इसके कारण तनाव उत्पन्न होता है। तनाव अनेक समस्याओं को जन्म देता है।

७. जाति–पाँति सामाजिक कुरीति है : यह एक सामाजिक बुराई है। इस कुरीति के कारण मनुष्य परस्पर बँट जाता है। इसका लाभ दूसरा लेने को सोचता है। इस कुप्रथा का सर्वथा उन्मूलन किया जाना अपेक्षित है। यह राष्ट्र के लिए भयावह है।

८. जातियों की सभाओं से विभक्ततता की भावना : हर जाति की अपनी–अपनी सभा। भला देश रहेगा कि नहीं। इससे समाज बँट जाएगा। मनुष्य, मनुष्य का शत्रु सिद्ध हो जाएगा। इतिहास से सबक लेकर हमें सावचेत हो जाना चाहिये। इस दिशा में आर्य समाज ही एक औषधि है।

आओ आर्यो! चिन्तन करो।
तुम कुछ कर सकते हो। ■

अनूठा ग्रन्थ : वैदिक संसार विशेषांक

कलम हाथ में थाम के बैठी
सोचा कुछ उद्‌गार लिखूँ।
दृढ़ निश्चय के बने पुजारी
कुछ उनकी पहचान लिखूँ।
अध्यात्म है जिनका गहना
हीरा सोना नहीं चाहा।
केवल यही पहन कर गहना
वेदों को ही अपनाया।
सादा जीवन उच्च विचार लिए
वह वेदों की ओर झुके।
आँधी गर्मी की नहीं परवाह
नहीं मंजिल से पूर्व रुके।
वैदिक संसार है ऐसी पुस्तक
जो हमको यह सिखलाती है।
सर्वशक्तिमान् केवल ईश्वर है
उस शक्ति को समझाती है।
सच्चे शिष्य ऋषि दयानन्द के
पथ पर बढ़ते जाते हैं।
देव दयानन्द को सुख मानें
सुखदेव कहलाते हैं।
देव दयानन्द के जन्मोत्सव पर
यह ग्रन्थ जब छपवाया।
जिस भी कर ने थामा इसको
फूला नहीं समा पाया।
यह ग्रन्थ जब पढ़ा तो पाया
इसमें ज्ञान अनूठा है।
जीने का उद्देश्य समझे
जो जीवन से रूठा है।
दीर्घायु की करें प्रार्थना
खुशियाँ हर पल साथ रहें।
चहुँ दिशा में यश फैले और
सिर पर प्रभु का हाथ रहे।

पुष्पा शर्मा
मोदी नगर, जिला गाजियाबाद (उ.प्र.)
चलभाष : ९०४५४४३१४१

राष्ट्र विख्यात शास्त्रार्थ महारथी : पं.गणपति जी शर्मा

शास्त्रार्थ महारथी, अद्वितीय वाग्मी तथा दार्शनिक पं. गणपति जी शर्मा का जन्म राजस्थान के चूरू नगर में १९३० विक्रम सम्वत् (१८७३ ई.) में पाराशर गोत्रीय पारीक ब्राह्मण पं. भानीरामजी के यहाँ हुआ। पिता पं. भानीराम जी पौरोहित्य के साथ-साथ वैद्यक का व्यवसाय भी करते थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा चूरू में ही हुई। व्याकरण तथा साहित्य में आपने अच्छा नैपुण्य प्राप्त कर लिया। राजस्थान में आर्यसमाज के महान् प्रचारक महर्षि दयानन्द के प्रत्यक्ष शिष्य पं. कालूराम जी के उपदेशों से गणपति जी

पं. गणपति जी शर्मा

आर्यसमाजी बने।२२ वर्ष की अवस्था में आपने आर्य समाज में प्रवेश किया। आपकी वाग्मिता तथा तर्कशक्ति का परिचय आर्य जनता को समय-समय पर मिलता रहा। ईश्वर सिद्धि तथा वेदों की अपौरुषेयता पर आपके व्याख्यान सहस्रों की उपस्थिति में सुने जाते थे। शास्त्रार्थों में उन्होंने अनेक पण्डितों, पादरियों तथा अन्य मतावलम्बियों को पराजित किया था। ३९ वर्ष की अल्पायु में पं. गणपति जी शर्मा का २७ जून १९१२ को जगराव (पंजाब) में निधन हुआ। ■

(परोपकारी पाक्षिक अजमेर से साभार)

भगतसिंह से प्रेरित अमर बलिदानी : हरिकिशन सरहदी

हरिकिशन सरहदी

बलिदान हजारों-लाखों के होते नगण्य,
स्वतन्त्रता उनसे अधिक मूल्यवान होती।
जितना-जितना शोणित से धोते हैं उतना,
चमकीला होता है स्वतन्त्रता का मोती।।
जो देश-धरा के लिए, वह शोणित है।
अन्यथा रगों में बहने वाला पानी है।।
इतिहास पढ़े या लिखे, यौवन वह कैसे?
इतिहास स्वयं बन जाए, वही यौवन है।।
(सरलजी)

डोंगरलाल पुरुषार्थी

प्रधान आर्य समाज, कसरावद,
जनपद : खरगोन (म.प्र.)
चलभाष : ८९५९०-५९०९९

अनेक अज्ञात व अल्पज्ञात बलिदानियों में हरिकिशन भी एक हैं। भगतसिंह का आदर्श हरिकिशन के सामने था। हरिकिशन का जन्म २ जनवरी सन् १९०८ में पश्चिमी सीमान्त प्रान्त के जिला मर्दान के एक गाँव गल्लाढेर के एक (जमींदार परिवार में हुआ था) इनके पिता गुरदासमल के पास पर्याप्त कृषि भूमि तथा फलों के बाग थे। विचारों से पक्के राष्ट्रवादी एवं देशभक्त होने के कारण उन्होंने स्वयं अपने पुत्रों को स्वतन्त्रता की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका अर्पित की और गर्व से कहते थे कि यदि मैं अपने एक पुत्र को देश के लिए अर्पण कर दूँ तो भी मेरे नाम को चलाने वाले अन्य आठ बेटे तो रहेंगे। ऐसा ही हुआ, उनका दूसरा बेटा हरिकिशन सरदार भगतसिंह के बलिदान के तीन माह बाद नौ जून १९३१ को मियाँवाली जेल में फाँसी पर चढ़कर बलिदानी देशभक्तों की सूची में अपना नाम अमर कर गया।

लाहौर जेल में फाँसी का फन्दा चूमने के लिए आतुर अपने पुत्र हरिकिशन से भेंट करने जब पिता गुरदासमल पहुँचे, तो उन्होंने अपने पुत्र से उसके स्वास्थ्य के विषय में कुछ नहीं पूछा। उन्होंने अपने पुत्र से यह भी नहीं पूछा कि जेल में तुमको क्या कष्ट है। उन्होंने सबसे पहला प्रश्न यह किया- बेटा, हरकिशन! मैंने तुम्हें अच्छा निशानेबाज बना दिया था और तुम्हारा निशाना कभी चूकता नहीं था, फिर गवर्नर सर ज्योफरी डि माण्टमोरेन्सी पर तुमने दो गोलियाँ चलायी और तुम्हारी गोलियों से गवर्नर मौत के घाट न पहुँचते हुए घायल ही क्यों हुआ? हरिकिशन ने अपनी सफाई में कहा- पिताजी! मैंने जिस कुर्सी पर खड़े होकर गवर्नर पर गोलियाँ चलायी थीं, वह कुर्सी हिल रही थी और जो तीसरी गोली मैंने भूमि पर खड़े होकर थानेदार चाननसिंह पर चलायी तो वह मर गया। चौथी गोली ने गुप्तचर बुधसिंह वधावन को घायल किया और पाँचवीं गोली ने गवर्नर के चिकित्सा दस्ते की लेडी डॉक्टर मिस डरमिट को आहत किया। पिता

ने पूछा- हरिकिशन! तुमने गवर्नर पर भी गोली भूमि पर खड़े होकर क्यों नहीं चलायी? हरिकिशन का जवाब था- पिताजी! यदि मैं भूमि पर खड़े होकर गवर्नर पर गोली चलाता तो वह और किसी को भी लग सकती थी, क्योंकि बहुत से लोग गर्वनर के आसपास थे। दीक्षान्त भाषण देने वाले डॉ. राधाकृष्णन तो गवर्नर के बिल्कुल पास ही थे। पिता ने कहा- हरिकिशन! यदि तुम्हारी गोली ठीक लगती और गवर्नर मारा जाता तो मुझे अपने पुत्र पर बहुत गर्व होता।

हरिकिशन बचपन से ही क्रान्तिकारियों का प्रशंसक था। जब काकोरीकाण्ड का प्रकरण प्रारम्भ हुआ, तो वह समाचार पत्रों में छपने वाले बयानों को बड़े ध्यान से पढ़ा करता था। रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ का वह बड़ा भक्त था। इसी प्रकार जब सरदार भगतसिंह पर प्रकरण चला तो अदालत में दिए गए बयानों से हरिकिशन बहुत प्रभावित हुआ और मन ही मन उसने भगतसिंह को अपना गुरु मान लिया। पंजाब के क्रान्तिकारियों ने गवर्नर की हत्या का कार्यभार हरिकिशन को सौंपा। फलत: आर्यसमाज के नेता महाशय खुशहालचन्द खुर्सन्द (आनन्द स्वामी) के पुत्र रणवीर, दुर्गादास खन्ना तथा दैनिक प्रताप के संवाददाता चमनलाल कपूर आदि की ओर से योजना बनाई गई थी। अब समस्या यह सामने आई कि कक्षा छठी तक पढ़े हरिकिशन को विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह के कक्ष में प्रवेश कैसे दिलाया जाए। इसके लिए एक नकली पास की व्यवस्था की गई तथा स्नातकों द्वारा पहने जाने वाले गाऊन का भी प्रबन्ध कर लिया गया। मूल प्रवेश-पत्र पर लिखे नाम को मिटाकर उस पर मोहम्मद यूसुफ नाम लिख दिया गया। एक मोटी पुस्तक के बीच में पिस्तौल के आकारानुसार खोखली करके उसमें पिस्तौल को फिट कर दिया गया जो कि पूर्व में किंग्सफोर्ड के वध के लिए ऐसी ही मोटी पुस्तक को खोखली करके बम फिट किया गया था और बाद में सरदार ऊधमसिंह ने भी कानून की मोटी किताब में पिस्तौल रखकर ओ डायर और अन्यों को मौत के घाट उतारा था। किन्तु दीक्षान्त समारोह में डॉ. राधाकृष्णन को बचाने के कारण गवर्नर की हत्या नहीं हो पाई। हरिकिशन ने अपनी पिस्तौल में फिर से गोली भरना चाहा, पर तब तक उसे पकड़ लिया गया।

हरिकिशन को गिरफ्तार करके बहुत बुरी तरह पीटा गया। उसे जेल में ले जाकर बन्द कर दिया। जेल में फिर पीटा गया,ताकि गवर्नर के हत्याकाण्ड में अन्य क्रान्तिकारी कितने अभियुक्त सम्मिलित हैं, हरिकिशन उनके नाम बतलावे किन्तु हरिकिशन ने किसी भी क्रान्तिकारी का नाम नहीं बतलाया। न बताने पर उसे बहुत यातनाएँ दी गईं। कड़ाके की सर्दी में उसके कपड़े उतार कर बर्फ की सिल्ली पर लिटाया गया और एक सिल्ली ऊपर भी रख दी गई। बहुत देर तक उसे बर्फ की सिल्लियों में दबोच कर रखा गया। ऐसा प्रतिदिन ही उसे नारकीय यातनाएँ दी जाती रहीं। पाँच जनवरी १९३० को हरिकिशन को सेशन कोर्ट में उपस्थित किया गया। हरिकिशन की ओर से बचाव के लिए पंजाब के उच्चकोटि के वकीलों की एक समिति का गठन किया गया। इसमें प्रसिद्ध राष्ट्रवादी नेता, आसफ अली भी थे। हरिकिशन ने अपने बयानों में कहा- जज सा.! भारत की आजादी के प्रयत्न करने वाले हजारों देशवासियों के साथ देश की स्त्रियों और बच्चों को भी जेलों में बन्द करके उन्हें बेरहमी से पीटा और अपमानित किया गया। इस कारण गाँधीजी के अहिंसात्मक कार्यों से विश्वास उठकर सशस्त्र क्रान्ति पर जम गया। चर्चिल के भाषण से मेरा विश्वास और भी सुदृढ़ हो गया कि अंग्रेज लोग भारत को कदापि मुक्त नहीं करेंगे। अस्तु मैं कुछ करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हो गया। मैं गवर्नर को कठोर दमन के लिए उत्तरदायी मानता हूँ। अत: मैंने ९५ रु.में एक पिस्तौल खरीदी और निश्चय किया कि दीक्षान्त समारोह में अन्य किसी क्रान्तिकारी के बगैर मैं गवर्नर को मृत्यु-दण्ड दूँगा। जो कि समारोह में अनेक विशिष्ट व्यक्तियों का समूह इस घटना को देख सके। २६ जनवरी १९३१ को लाहौर के सेशन जज द्वारा हरिकिशन को मृत्यु-दण्ड सुना दिया गया। हाईकोर्ट में अपील करने के बाद भी फाँसी की सजा यथावत रही। एक बार जेल में जब उसकी दादी उससे भेंट करने गई तो वह अपने पोते हरिकिशन से बोली- बेटे! बहुत हौसले के साथ फाँसी के तख्ते पर चढ़ना। हरिकिशन ने उत्तर दिया- दादी! फिक्र मत करो, मैं शेरनी का पोता हूँ, मैं मौत को लज्जित करके दिखाऊँगा।

हरिकिशन जिस जेल में था, उसी जेल की पास की कोठरी में सरदार भगतसिंह भी फाँसी की प्रतीक्षा कर रहे थे। हरिकिशन ने भगतसिंह से मिलने की अभिलाषा प्रकट की। किन्तु जेल अधिकारियों ने उसकी इच्छा पूरी करने से मना कर दिया। अपनी दृढ़ इच्छा की पूर्ति के लिए हरिकिशन ने आमरण अनशन शुरू कर दिया। आखिरकार नौ दिन के आमरण अनशन बाद हरिकिशन की इच्छा की पूर्ति की गई और भगतसिंह को हरिकिशन की कोठरी में पहुँचा गया। भगतसिंह के हाथ से दूध पीकर ही हरिकिशन ने अपना अनशन तोड़ा। फाँसी के पहले हरिकिशन ने अपनी अन्तिम इच्छा इस प्रकार से व्यक्त की- **'मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि मैं इस पवित्र भारत धरती पर उस समय तक जन्म लेता रहूँ। जब तक मैं भारत को स्वतन्त्र न कर दूँ। यदि मेरा मृतक शरीर परिवार वालों को दिया जाए तो मेरा अन्तिम संस्कार उसी स्थान पर किया जाए, जहाँ शहीद भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव का संस्कार हुआ था। मेरी अस्थियाँ भी सतलज नदी में उसी स्थान पर प्रवाहित की जाए, जहाँ उन लोगों की अस्थियाँ प्रवाहित की गई थीं।'**

जेल मैन्युअल में उल्लिखित नियमों के विपरीत दिनांक २४.०३.१९३१ को प्रात: भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव को लगने वाली फाँसी दिनांक २३.०३.१९३१ को संध्या के समय दे दी गई। इनके मृत शरीर को परिवार वालों को न सौंपते हुए उनके शरीरों को क्षत-विक्षत कर बोरों में भरकर फिरोजपुर के पास हुसैनीवाला में सतलज के किनारे घासलेट डालकर जला दिया। जब जनता को शहीदों के प्रति इस दुर्व्यवहार का पता चला तो हजारों की संख्या में लोग वहाँ पहुँच गए और अवशिष्ट अवशेषों को विधिवत अन्तिम-संस्कार किया। दिनांक ०९.०६.१९३१ को लाहौर की मियाँवाली जेल में प्रात: छ: बजे हरिकिशन को फाँसी दी गई। फाँसी के पहले हरिकिशन ने फाँसी के तख्ते पर खड़े होकर अपनी पूरी शक्ति के साथ **'इन्कलाब जिन्दाबाद'** के नारे लगाए। **(शेष भाग पृष्ठ २७ पर)**

आओ! जानें परमपिता परमेश्वर के निज और मुख्य नाम 'ओ३म्' को

सुरेशचन्द्र शास्त्री

पुरोहित, आर्य समाज
जीन्द शहर (हरियाणा)
चलभाष : ९१६५०३८३५६

आदरणीय पाठक वृन्द!
सादर नमस्ते

आज हम परमात्मा के मुख्य और निज नाम ओ३म् के सम्बन्ध में कुछ विचार करेंगे। यह तो आप सभी प्रबुद्धजन भलीभाँति जानते हैं कि परमात्मा का निज और मुख्य नाम ओ३म् है किन्तु ओ३म् ही परमात्मा का निज नाम क्यों है? उसकी विशेषताएँ क्या है? संक्षेप से हम सब यह समझने का प्रयत्न करते हैं।

१-संसार में असंख्य संज्ञा शब्द हैं इस सृष्टि में जितने पदार्थ हैं जितने मनुष्य आदि प्राणी है सबके नाम हैं क्योंकि नाम से ही वस्तु व मनुष्य आदि की पहचान होती है। जैसे यह संसार तथा संसार का प्रत्येक पदार्थ परिवर्तनशील है विकारयुक्त है। वैसे ही सभी संज्ञा शब्द भी परिवर्तनशील है। केवल ओ३म् नाम ही ऐसा है जिसमें कोई परिवर्तन, कोई विकार कभी नहीं आता। ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव अनन्त हैं इसीलिए उसके गौणिक, कार्मिक, और स्वाभाविक नाम भी अनन्त हैं किन्तु अन्य नाम अन्य पदार्थों के भी हैं, व्यक्तियों के भी हैं और अन्य सभी नामों में परिवर्तन होता रहता है। जितने भी महापुरुष हुए, देवी-देवता हुए किसी का भी नाम उदाहरण के लिए ले लीजिये अथवा आप अपना नाम भी ले सकते हैं-

जैसे- राम, शिव, विष्णु महादेव, रुद्र, महेश, दिनेश, देवी, सरस्वती, ब्रह्म इत्यादि

अब परिवर्तन देखिए :-

प्रथमा विभक्ति में रामः। द्वितीया में रामम्। तृतीया में रामेण। चतुर्थी विभक्ति में रामाय। पंचमी में रामात्। षष्ठी में रामस्य। सप्तमी में रामे. इसी तरह शिवाय। विष्णवे। महादेवाय। रुद्राय। महेशाय। दिनेशाय। देव्यै। सरस्वत्यै, ब्राह्मणे इत्यादि विभक्तियों के अनुसार स्वरूप परिवर्तन होते रहते हैं किन्तु ओ३म् ही एक ऐसा शब्द है जिसमें किसी भी विभक्ति का कोई प्रभाव नहीं होता कोई परिवर्तन नहीं आता। हो भी क्यों ना?

जैसे ईश्वर निर्विकार है नित्य है शाश्वत् है वैसे ही उसका मुख्य नाम भी नित्य शाश्वत् और निर्विकार है। फिर विकार कहाँ से होगा?

२-जितने भी संज्ञा शब्द हैं उन पर वचनों का भी प्रभाव रहता है उदाहरण के लिए

जैसे-एक वचन में रामः। द्विवचन में रामौ। बहुवचन में रामाः इत्यादि से आप समझ सकते हैं। परन्तु ध्यान रहे! ईश्वर के मुख्य और निज नाम पर वचनों का भी कोई प्रभाव नहीं होता, जानते हैं क्यों? क्योंकि ईश्वर एक है अनेक नहीं इसीलिए वचनों का कोई प्रभाव नहीं होता यह विशेषता केवल ईश्वर के मुख्य नाम ओ३म् में ही है।

३-सामान्य रूप से भाषा विज्ञान को जानने वाले सभी लोग समझते हैं कि प्रत्येक संज्ञा शब्द पर लिंगों का भी प्रभाव अवश्य होता है जितने भी संज्ञा शब्द हैं। सभी संज्ञा शब्दों को तीन प्रकार से विभाजित किया जाता है-

१-पुल्लिंग २-स्त्रीलिंग ३-नपुंसकलिंग।

जैसे- शिव आदि पुल्लिंग शब्द हैं देवी आदि स्त्रीलिंग शब्द हैं और ब्रह्म नपुंसकलिंग शब्द है। परन्तु जैसे ईश्वर न तो पुरुष है, ना स्त्रीलिंग में है, और न नपुंसक लिंग में है। उसी तरह उस परमात्मा के मुख्य और निज नाम ओ३म् की भी यह विशेषता है कि वह किसी लिंग में नहीं आता। ना पुल्लिंग का प्रभाव होता है, ना स्त्रीलिंग का और न ही नपुंसकलिंग का। हमेशा एक जैसा ही रहता है जैसे परमात्मा अखण्ड, एकरस, नित्य, सत्य, शाश्वत्, अविनाशी और परिवर्तन रहित है वैसे ही उसका नाम है।

४-जैसे संसार में विकृतियाँ आने पर मत-पन्थ, मजहब पनपते रहे, वैसे ही अनेकानेक भाषाएँ बोलियाँ भी निर्मित हुई और लोगों ने अपने सीमित ज्ञान के अनुसार अपने ईश्वर (इष्ट देव) के नाम भी अपनी-अपनी भाषाओं में रख लिए और सभी लोग अपने द्वारा रखे गए ईश्वर के नामों को ही मुख्य समझने लगे। परन्तु आपको बताते चलें संसार में वर्तमान में लगभग ६५०० भाषाएँ हैं किन्तु सभी भाषाएँ अपूर्ण हैं। संसार की किसी भी भाषा में सभी ध्वनियाँ समाहित नहीं है।

उदाहरण के लिए जैसे अरबी भाषा में 'प' की ध्वनि नहीं है। अंग्रेजी में 'त' और 'द' की ध्वनि नहीं है। केवल देवभाषा संस्कृत को ही पूर्ण भाषा का गौरव प्राप्त है जिसमें सभी ध्वनियाँ समाहित हैं और परमात्मा का निज नाम ओ३म् भी संस्कृत में ही है।

५-जैसे परमात्मा सर्वव्यापक है सब कुछ उसी ईश्वर में ही समाहित है। सकल सृष्टि के बाहर और भीतर ईश्वर विद्यमान है। इसी तरह परमात्मा के मुख्य नाम की भी विशेषता यह है कि ओ३म् में सारी ध्वनियाँ समाहित हैं पूरी वर्णमाला समाहित है।

जो लोग संस्कृत भाषा विज्ञान को जानते हैं वे भलीभांति समझ सकते हैं पाणिनीय व्याकरण के अन्तर्गत शिक्षा शास्त्र के अनुसार और प्रचलित भाषा के अनुसार भी वर्णमाला का प्रथम अक्षर 'अ' है तथा प्रथम अक्षर का प्रारम्भ कण्ठ से होता है। यह भी समझने की बात है स्वर मुख्य रूप से तीन ही है (अ इ उ) और सभी स्वर इसमें समाहित हैं शेष स्वर तो यौगिक

है और व्यंजनों को पाँच वर्गों में विभाजित किया है। (क च ट त प) और अन्तिम वर्ग का अन्तिम वर्ण 'म' है तथा म का उच्चारण स्थान ओष्ठ है। और म का उच्चारण करने पर ओष्ठ बन्द हो जाते हैं। वर्णोच्चारण की क्रिया कण्ठ से प्रारम्भ और ओष्ठ बन्द करके समाप्त हो जाती है फिर कुछ भी नहीं बोल सकते। कण्ठ से ओष्ठ तक के बीच में ही उच्चारण क्रिया का स्थान है इससे अतिरिक्त कुछ नहीं। परमात्मा के निज और मुख्य नाम की भी विशेषता यही है ओ३म् का उच्चारण कण्ठ से प्रारम्भ होता है और ओष्ठ पर समाप्त हो जाता है। इसीलिये परमात्मा का मुख्य नाम ओ३म् ही है।

६-ईश्वर के मुख्य नाम ओ३म् के अर्थ को समझाने के लिए देव भाषा संस्कृत की पाणिनीय व्याकरण के अनुसार जिस तरह से सिद्धि की है।

इस शब्द की 'अव' धातु से परिकल्पना की गई है जिसके १९ अर्थ हैं- रक्षण, गति, कान्ति, प्रीति, तृप्ति, अवगम, प्रवेश, श्रवण, स्वाम्यर्थ, याचन, क्रिया, इच्छा, दीप्ति, अवाप्ति, आलिंगन, हिंसा, दान, भाग और वृद्धि।

गोपथ ब्राह्मण में ओ३म् शब्द को अप्लृ व्याप्तौ धातु से सिद्ध करके दिखाया गया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में ओ३म् शब्द का अर्थ समझाते हुए बताया है। **अ** से विराट्, अग्नि, विश्व आदि। **उ** से हिरण्यगर्भ, वायु, तेजस आदि। **म** से ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञ आदि।

इस तरह एक ओ३म् शब्द के १९ अर्थ यहाँ पर समझाये गए हैं और आदि शब्द से अन्य अर्थों को समझ लेना चाहिए। एक-एक पदार्थ के सम्बन्ध में अन्य-अन्य बहुत से पर्यायवाची शब्द तो आपको मिल जाएंगे परन्तु एक ही शब्द के इतने अर्थ और कहीं नहीं मिलेंगे। केवल ईश्वर के मुख्य और निज नाम ओ३म् की ही यह विशेषता है इसीलिए निश्चित रूप से समझ लीजिए। ईश्वर का मुख्य और निज नाम ओ३म् ही है। यही प्रभु साक्षात्कार का मुख्य साधन है हम सबको इसी नाम से साधना करने की आवश्यकता है। इसी में हम सबका कल्याण है। ■

प्रतिक्रिया

महर्षि दयानन्द सरस्वती का सन्देश-
'एक भाषा एक भूषा एक भाव' के बिना
जातीय उन्नति दुष्कर है की दिशा में

मध्यप्रदेश सरकार का सराहनीय, स्वागत योग्य निर्णय

मप्र पुलिस का नया शब्दकोश : उर्दू-फारसी के 69 शब्द बंद

अपराध की नई भाषा; कत्ल नहीं हत्या... संगीन नहीं गंभीर लिखेंगे

भास्कर न्यूज | भोपाल. अपराध पर लगाम लगे या नहीं, लेकिन मप्र पुलिस ने इसका नया शब्दकोश जरूर गढ़ दिया है। पुलिस की लिखा-पढ़ी और बोलचाल की भाषा में उर्दू, फारसी और अन्य भाषाओं के 69 शब्दों का इस्तेमाल अब बंद कर इनकी जगह हिंदी का उपयोग होगा। यह कवायद सवा दो साल से चल रही है। अब शब्दकोश तैयार हो गया है। इनमें अदालत की जगह न्यायालय, इस्तगासा की जगह दावा या परिवाद, फरियादी को आवेदक, गिरफ्तार/हिरासत को अभिरक्षा लिखा जाएगा। सोमवार को पुलिस मुख्यालय की अपराध अनुसंधान शाखा के एडीजी पवन श्रीवास्तव ने पुलिस इकाइयों को नए शब्दकोश के इस्तेमाल के निर्देश दिए।

अब ये शब्द बदल जाएंगे

ताजिरात-ए-हिंद : भारतीय दंड संहिता
जाप्ता फौजदारी : दंड प्रक्रिया संहिता
अदालत : न्यायालय
कैदखाना : बंदी गृह
हाजिर/गैरहाजिर : उपस्थित/अनुपस्थित
तफतीश/तहकीकात : अनुसंधान/जांच
तहरीर : लिखित/लेखीय विवरण
इस्तगासा : दावा, परिवाद
इरादतन : साशय
कब्जा : आधिपत्य
कत्ल/कातिल/कातिलाना : हत्या,वध/हत्यारा/प्राणघातक
गुजारिश : प्रार्थना, निवेदन
गिरफ्तार/हिरासत : अभिरक्षा
नकबजनी : गृहभेदन, सेंधमारी
चश्मदीद गवाह : प्रत्यक्षदर्शी, साक्षी
बयान : कथन

साभार : दैनिक भास्कर

सनातन धर्मी, विशेषकर भारतीय संस्कृति से प्रेम करने वाले और अतिविशेष अपने आपको ऋषि दयानन्द का भक्त मानने तथा आर्य कहने वाले जाग्रत होकर भाषा, भूषा और भाव शुद्धि की ओर अग्रसर होवें।

कुछ आयातित शब्दों का प्रचलन इस प्रकार हो गया है कि मूल शब्द ठीक उसी प्रकार प्रचलन से बाहर हो गए हैं जिस प्रकार नकली मुद्रा अथवा फटे-पुराने नोट चलन में बढ़ने पर बाजार से असली मुद्रा अथवा नए नोट लुप्तप्रायः हो जाते हैं।

उदाहरणार्थ शादी और खाना जैसे शब्द।

आम जनमानस को भलीभांति यह समझना चाहिए कि प्रत्येक शब्द की अपनी अवधारणा अलग-अलग होती है जैसे शादी होगी तो वहाँ पण्डित की आवश्यकता नहीं होकर वहाँ मौलवी की आवश्यकता होगी क्योंकि शादी में हथलेवा, सप्तपदी, लाजा होम, जया होम, उत्तर विधि, प्रदक्षिणा आदि नहीं की जाकर वहाँ निकाह पढ़वाया जावेगा। इसी प्रकार खाना अगर खाया जा रहा है तो फिर वहाँ पर भक्ष्य-अभक्ष्य का प्रश्न उत्पन्न नहीं होगा और अगर भोजन ग्रहण किया जा रहा है तो वहाँ अभक्ष्य पदार्थों का कोई स्थान नहीं होगा।

समझदार के लिए संकेत ही पर्याप्त है।

यहाँ यह भी जानना-समझना आवश्यक है कि हमने सैकड़ों वर्षों तक स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष किया और असंख्य बलिदानियों ने अपने प्राणों को न्योछावर किया है तब स्वतन्त्रता पाई है। तो यह स्वतन्त्रता कोई भूमि के टुकड़े मात्र के लिए नहीं क्योंकि हम **वसुधैव कुटुम्बकम्** अर्थात् सम्पूर्ण पृथ्वी पर वास करने वालों को एक कुटुम्ब तथा **भवत्येक नीडम्** सम्पूर्ण संसार को एक घोंसला मानने वाली अवधारणा की सनातन संस्कृति के अनुयायी है। हमारे लिए कोई अपना पराया नहीं, हम **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः** अर्थात् सबके सुखी, नीरोग होने की कामना व परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना और तदनुरूप व्यवहार करने वाले लोग हैं।

चक्रवर्ती साम्राज्य तो बहुत तुच्छ वस्तु है हमारी संस्कृति के लिए हम हमारे प्राणों को भी आहुत करने में पीछे नहीं रहते।

हमें सत्य सनातन वैदिक धर्म संस्कृति की पालना की स्वतन्त्रता के लिए बलिदान होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, कोई बात नहीं हम उन असंख्य बलिदानियों के बलिदान से प्राप्त स्वतन्त्रता की रक्षा तो प्राण से नहीं अपितु प्रण अर्थात् शुभ संकल्पों को धारण कर तो कर ही सकते हैं और चलते-चलते यह भी बता दें कि संस्कृति का आधार भाषा, भूषा और भाव ही होते हैं अन्यथा संस्कृति को विकृति में परिवर्तित होते समय नहीं लगता और ना ही इसे कोई रोक सकता है।।

आओ लौट चलें वेदों की ओर ।

सुखदेव शर्मा
प्रकाशक : वैदिक संसार

भारतीय संस्कृति की रीढ़- गुरुकुल शिक्षा प्रणाली

डॉ. गंगाशरण आर्य, 'साहित्य सुमन'

चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला,
ग्राम- शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली,
चलभाष : ९८७१६४४१९५

विश्व की चार संस्कृतियाँ प्राचीन हैं। यूनान, मिस्र, रोम और भारत की। इनमें से तीन को तो विधर्मी (धर्मान्ध) ताकतों ने खण्डहरों में तब्दील करके अजायब घरों में पहुँचा दिया, अब ये दुनियाँ की सिरमौर भारतीय संस्कृति को बर्बाद करने के सपने देख रहे हैं। आइए! जानने का प्रयास करते हैं कि किस प्रकार भारतीय संस्कृति की गरिमा को नष्ट करने के लिए विदेशी प्रयासरत थे? केवल भारत की शिक्षा व्यवस्था (गुरुकुल शिक्षा प्रणाली) का दर्शन कर उन्हें भय था कि वे भारत को कभी पूर्ण रूप से गुलाम नहीं बना सकेंगे, क्योंकि भारत की इस शिक्षा प्रणाली में वही खासियत है जो ईश्वर द्वारा माँ के गर्भ में बच्चे के निर्माण के लिए प्रयोग होती है। जिस प्रकार नौ मास तक माता के गर्भ में बच्चे को ओरनॉल से जोड़कर ईश्वर बच्चे के निर्माण में सहायता करता है ठीक उसी प्रकार आचार्य यज्ञोपवीत प्रदान कर बच्चे को द्विज बनाता है ताकि उन्नत समाज व समृद्धशाली राष्ट्र का निर्माण हो सके, और जो स्थान माँ का होता है वही स्थान गुरुकुल के आचार्यों का होता है। इसलिए भारत में बच्चे की प्रथम गुरु उसकी माँ, दूसरा उसका पिता और तीसरा गुरु उसका आचार्य होता है, जहाँ उसे उसके मूल ईश्वर एवं वेद आदि से जोड़कर सम्पूर्ण विद्याओं को ग्रहण कराया जाता है। इसी व्यवस्था को भाँप गए अंग्रेज और इसे तोड़ने के लिए निम्नलिखित प्रयास किए गए :-

१८५८ में इण्डियन एजुकेशन एक्ट बनाया गया। इसकी ड्रॉफ्टिंग 'लार्ड मैकाले' ने की थी। लेकिन उसके पहले उसने यहाँ (भारत) के शिक्षा व्यवस्था का सर्वेक्षण कराया था, उसके पहले भी कई अंग्रेजों ने भारत के शिक्षा व्यवस्था के बारे में अपनी रिपोर्ट दी थी। थोमस मुनरो सन् १८१३ के आसपास मद्रास प्रान्त के राज्यपाल थे, उन्होंने अपने कार्य विवरण में लिखा है– मद्रास प्रान्त (अर्थात् आज का पूर्ण आन्ध्रप्रदेश, पूर्ण तमिलनाडु, पूर्ण केरल एवं कर्नाटक का कुछ भाग) में ४०० लोगों पर न्यूनतम एक गुरुकुल है। उत्तर भारत (आज का पूर्ण पाकिस्तान, पूर्ण पंजाब, पूर्ण हरियाणा, पूर्ण जम्मू–कश्मीर, पूर्ण हिमाचल प्रदेश, पूर्ण उत्तरप्रदेश, पूर्ण उत्तराखण्ड) के सर्वेक्षण के आधार पर डब्ल्यू लिटनेर ने सन् १८२२ में लिखा है– उत्तर भारत के २०० लोगों पर एक गुरुकुल है।

माना जाता है कि मैक्समूलर ने भारत की शिक्षा व्यवस्था पर सबसे अधिक शोध किया है, वे लिखते हैं **''भारत के बंगाल प्रान्त (अर्थात् आज का पूर्ण बिहार, आधा उड़ीसा, पूर्ण पश्चिम बंगाल, आसाम एवं उसके ऊपर के सात प्रदेश) में ८० सहस्त्र (हजार) से अधिक गुरुकुल हैं जो कि कई सहस्त्र वर्षों से निर्बाधित रूप से चल रहे हैं।''** उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत के आँकड़ों के कुल पर औसत निकालने से यह ज्ञात होता है कि भारत में १८वीं शताब्दी तक ३०० व्यक्तियों पर न्यूनतम एक गुरुकुल था। एक और चौकाने वाला तथ्य यह है कि १८वीं शताब्दी में भारत की जनसंख्या लगभग २० करोड़ थी, ३०० व्यक्तियों पर न्यूनतम एक गुरुकुल के अनुसार भारत में ७ लाख ३२ सहस्त्र (हजार) गुरुकुल होने चाहिए। अब रोचक बात यह भी है कि अंग्रेज प्रत्येक दस वर्ष में भारत का सर्वेक्षण करवाते थे उनके अनुसार १८२२ के लगभग भारत में कुल गाँवों की संख्या भी लगभग ७ लाख ३२ सहस्त्र (हजार) थीं, अर्थात् प्रत्येक गाँव में एक गुरुकुल। १६ से १७ वर्ष भारत में प्रवास करने वाले शिक्षा शास्त्री लुडलो ने भी १८वीं शताब्दी में यही लिखा कि **''भारत में एक भी गाँव ऐसा नहीं जिसमें गुरुकुल नहीं एवं एक भी बालक ऐसा नहीं जो गुरुकुल जाता नहीं।''**

राजा की सहायता के बिना, समाज से पोषित इन्हीं गुरुकुलों के कारण १८वीं शताब्दी तक भारत में साक्षरता ९७ प्रतिशत थी, बालक के ५ वर्ष, ५ माह, ५ दिवस के होते ही उसका गुरुकुल में प्रवेश हो जाता था। प्रतिदिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक विद्यार्जन का क्रम १४ वर्ष तक चलता था। जब बालक सभी वर्गों के बालकों के साथ नि:शुल्क २० से अधिक विषयों का अध्ययन कर गुरुकुल से निकलता था। तब आत्मनिर्भर, देश एवं समाज सेवा हेतु सक्षम हो जाता था। इसके उपरान्त विशेषज्ञता (पाण्डित्य) प्राप्त करने हेतु भारत में विभिन्न विषयों वाले जैसे शल्य चिकित्सा, आयुर्वेद, धातु कर्म आदि के विश्वविद्यालय थे, नालन्दा एवं तक्षशिला तो २००० वर्ष पूर्व के हैं परन्तु मात्र १५०-१७० वर्ष पूर्व भी भारत में ५००-५२५ के लगभग विश्वविद्यालय थे। थोमस बेबिंग्टन मैकाले (टी.बी. मैकाले) जब सन् १८३४ में आए तो कई वर्षों तक भारत की यात्राएँ एवं सर्वेक्षण करने के उपरान्त समझ गए कि अंग्रेजों से पहले के आक्रान्ताओं अर्थात् यवनों, मुगलों आदि ने भारत के राजाओं, सम्पदाओं एवं धर्म का नाश करने की जो भूल की है, उससे पुण्य भूमि भारत को कदापि पददलित नहीं किया जा सकेगा, अपितु संस्कृति, शिक्षा एवं सभ्यता का नाश करें तो इन्हें पराधीन करने का लक्ष्य सिद्ध हो सकता है।

और उस समय जब भारत में इतनी साक्षरता है तो **मैकाले का स्पष्ट कहना था कि यदि भारत को हमेशा के लिए गुलाम बनाना है तो इसकी ''देशी और**

सांस्कृतिक शिक्षा व्यवस्था'' को पूरी तरह से ध्वस्त करना होगा और उसकी जगह ''अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था'' लानी होगी और तभी इस देश में शरीर से हिन्दुस्तानी लेकिन दिमाग से अंग्रेज पैदा होंगे और हो भी गए। और जब इस देश की यूनिवर्सिटी से निकलेंगे तो हमारे हित में ही काम करेंगे और मैकाले एक मुहावरा इस्तेमाल कर रहा है- ''कि जैसे किसी खेत में कोई फसल लगाने के पहले खेत पूरी तरह जोत दिया जाता है वैसे ही इसे जोतना होगा और अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था लानी होगी।'' इसलिए उसने सबसे पहले गुरुकुलों को गैरकानूनी घोषित किया, जब गुरुकुल गैरकानूनी हो गए तो उनको मिलने वाली सहायता जो समाज के तरफ से होती थी वो भी गैर कानूनी हो गई, फिर संस्कृत को गैरकानूनी घोषित किया और इस देश के गुरुकुलों को घूम-घूमकर खत्म कर दिया, उनमें आग लगा दी, उसमें पढ़ाने वाले गुरुओं को मारा-पीटा, जेल में डाला। **१८५० तक इस देश में '७ लाख ३२ हजार' गुरुकुल हुआ करते थे और उस समय इस देश में गाँव थे '७ लाख ५० हजार' मतलब हर गाँव में औसतन एक गुरुकुल और ये जो गुरुकुल होते थे वो सबके सब आज भी भाषा में 'हायर लर्निंग इंस्टीट्यूट' हुआ करते थे उन सबमें १८ विषय पढ़ाए जाते थे और ये गुरुकुल समाज के लोग मिलकर चलाते थे न कि राजा, महाराजा और इन गुरुकुलों में शिक्षा निःशुल्क दी जाती थी।** इस तरह से सारे गुरुकुलों को खत्म किया गया और फिर अंग्रेजी शिक्षा को कानूनी घोषित किया गया और कलकत्ता में पहला कॉन्वेन्ट स्कूल खोला गया, उस समय इसे फ्री स्कूल कहा जाता था। इसी कानून के तहत भारत में कलकत्ता यूनिवर्सिटी बनाई गई, बम्बई यूनिवर्सिटी बनाई गई, मद्रास यूनिवर्सिटी बनाई गई और ये तीनों गुलामी के जमाने की यूनिवर्सिटी आज भी इस देश में है और मैकाले ने अपने पिता को एक चिट्ठी लिखी थी बहुत मशहूर चिट्ठी है वो, उसमें वो लिखता है कि **''इन कॉन्वेन्ट स्कूलों से ऐसे बच्चे निकलेंगे जो देखने में तो भारतीय होंगे लेकिन दिमाग से अंग्रेज होंगे और इन्हें अपने देश के बारे में कुछ पता नहीं होगा, इनको अपनी संस्कृति के बारे में कुछ नहीं पता होगा, इनको अपनी परम्पराओं के बारे में कुछ पता नहीं होगा, इनको अपने मुहावरे नहीं मालूम होंगे, जब ऐसे बच्चे होंगे इस देश में तो अंग्रेज भले ही चले जाएँ इस देश से अंग्रेजियत नहीं जाएगी।''** आजादी के बाद भी हमारे शासन एवं शिक्षा तंत्र को इसी लक्ष्य से निर्मित किया गया ताकि नकारात्मक विचार, हीनता की भावना, जो विदेशी है वह अच्छा ही है। बिना तर्क किए रटने के बीज आदि बचपन से ही बाल मन में घर कर लें तो अंग्रेजों को प्रतिव्यक्ति पर संस्कृति, शिक्षा एवं सभ्यता के नाश का परिश्रम न करना पड़े।

उस समय लिखी गई उपर्युक्त चिट्ठी की सच्चाई इस देश में अब साफ-साफ दिखाई दे रही है और उस एक्ट की महिमा देखिए कि हमें अपनी भाषा बोलने में शर्म आती है, अंग्रेजी में बोलते हैं इसलिए कि दूसरों पर रोब पड़ेगा, अरे हम तो खुद में हीन हो गए हैं जिसे अपनी भाषा बोलने में शर्म आ रही है, दूसरों पर रोब क्या पड़ेगा? लोगों का तर्क है कि अंग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है, दुनिया में २०४ देश हैं और अंग्रेजी सिर्फ ११ देशों में बोली, पढ़ी और समझी जाती है, फिर ये कैसे अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है? शब्दों के मामले में भी अंग्रेजी समृद्ध नहीं दरिद्र भाषा है। इन अंग्रेजों की जो बाइबिल है वो भी अंग्रेजी में नहीं थी और ईसा मसीह अंग्रेजी नहीं बोलते थे। ईसा मसीह की भाषा 'अरमेक' थी। अरमेक भाषा की लिपि जो थी वो हमारे बंगला भाषा से मिलती-जुलती थी, समय के कालचक्र में वो भाषा विलुप्त हो गई। संयुक्त राष्ट्र संघ जो अमेरिका में है वहाँ की भाषा अंग्रेजी नहीं है, वहाँ का सारा काम फ्रेंच में होता है और यदि उस समय अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम नहीं होती तो इस कुचक्र के पहले अंकुर माता-पिता ही पल्लवित होने से रोक लेते परन्तु ऐसा हो न सका। हमारे निर्यात कारखाने एवं उत्पाद की कमर तोड़ने हेतु भारत में स्वदेशी वस्तुओं पर अधिकतम कर देना पड़ता था एवं अंग्रेजी वस्तुओं को कर मुक्त कर दिया गया था। कृषकों पर तो ९० प्रतिशत कर लगाकर फसल भी लूट लेते थे एवं **'लैंड एक्विजिशन एक्ट'** के माध्यम से सहस्त्रों एकड़ भूमि भी उनसे छीन ली जाती थी, अंग्रेजों ने कृषकों के कार्यों में सहायक गौ माता एवं भैंसों आदि को काटने हेतु पहली बार कलकत्ता में कसाईघर चालू कर दिया, शर्म की बात है कि वह अभी भी चल रहा है। सत्ता हस्तांतरण के दिवस १४.०८.१९४७ के उपरान्त तो इस कुचक्र की गोरे अंग्रेजों पर निर्भरता भी समाप्त हो गई, अब तो इसे निर्बाधित रूप से चलने देने के लिए बिना रीढ़ के काले अंग्रेज ही पर्याप्त थे, जिनमें साहस ही नहीं है भारत को उसके पूर्व स्थान पर पहुँचाने का। इनको ये पता होना चाहिए कि जिस देश की संस्कृति और शिक्षा व्यवस्था को अंग्रेज नष्ट कर रहे थे उसी से प्रेरित होकर उन अंग्रेजों ने अपने देश में सामान्य बच्चों के लिए सार्वजनिक विद्यालय स्थापित किए। इंग्लैण्ड में विद्यालयों की शुरुआत सबसे पहले सन् १८६८ में हुई थी, उसके बाद बाकी यूरोप, अमेरिका में अर्थात् जब भारत में प्रत्येक गाँव में एक गुरुकुल था, ९७ प्रतिशत साक्षरता थी, तब इंग्लैण्ड के बच्चों को पढ़ने का अवसर मिला। तो क्या पहले वहाँ विद्यालय नहीं होते थे? होते थे परन्तु महलों के भीतर, वहाँ ऐसी मान्यता थी कि शिक्षा केवल राजकीय व्यक्तियों को ही देनी चाहिए बाकी सब को तो सेवा करनी है। लेकिन दुर्भाग्य है हमारा कि गोरे अंग्रेजों द्वारा लगाया गया पाठ्यक्रम आज भी मेरे देश को अपनी संस्कृति के गौरव की रक्षा करने की बजाए खत्म करने के प्रयास में है।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने भी कहा है कि हमारा दुर्भाग्य है कि भारत में हम अपने श्रेष्ठतम सृजनात्मक पुरुषों को भूल चुके हैं। इसका कारण है विदेशियत का प्रभाव और अपने बारे में हीनता बोध की मानसिक ग्रंन्थि से देश के बुद्धिजीवी लोग ग्रस्त हैं। (क्रमशः आगामी अंक में)

मातृशक्ति विशेष

वेद और नारी सम्मान

शास्त्री सत्यकेतु आर्य

२३/३, शास्त्री नगर, निकट काली मठिया मन्दिर, कानपुर (उ.प्र.)
चलभाष : ९८३९११९६८३, ९११९८१६०३२८

आर्य, हिन्दू संस्कृति में कोई भी धर्म या शुभ कार्य नारी को सम्मिलित किए बगैर पूर्ण नहीं होता। परिवार में नारी को विशेष स्थान दिया गया है नारी को बच्चों के निर्माण करने वाली लिखा गया है। वेदों में नारी और पुरुष को समान अधिकार दिए गए हैं। कहीं तो नारी को पुरुषों से अधिक सम्मान की बात लिखी है।

महर्षि मनु जो धरती के प्रथम राजा हुए और वेदों के महा पण्डित थे उन्होंने नारी के सम्मान में लिखा-

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'

–मनुस्मृति

अर्थात् जहाँ स्त्री जाति का आदर-सम्मान होता है उनकी आवश्यकताओं-अपेक्षाओं की पूर्ति होती है, उस स्थान, समाज तथा परिवार पर देवतागण प्रसन्न रहते हैं और उस परिवार में धन सौभाग्य समृद्धि का वास होता है। जहाँ ऐसा नहीं होता और उनके प्रति तिरस्कारमय व्यवहार किया जाता है, वहाँ देवकृपा नहीं रहती है और वहाँ सम्पन्न किए गए कार्य सफल नहीं होते हैं।

ऋग्वेद में नारी का वर्णन :

१. स्त्रियाँ वीर हों (पृ. १२२, १२८)
२. स्त्रियाँ सुविज्ञ हों (पृ. १२२)
३. स्त्रियाँ यशस्वी हों (पृ. १२३)
४. स्त्रियाँ विदुषी हों (पृ. १२३)
५. स्त्रियाँ बुद्धिमती और ज्ञानवती हों (पृ. १२६)
६. स्त्रियाँ परिवार, समाज की रक्षक हों और सेना में जाएं (पृ. १३४, १३६)

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
नशोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा।।५७।।

(यत्र जामयः शोचन्ति तत् कुलम् आशु विनश्यति, यत्र तु एताः न शोचन्ति तत् हि सर्वदा वर्धते।)

अर्थ : जिस कुल में पारिवारिक स्त्रियाँ दुर्व्यवहार के कारण शोक-संतप्त रहती हैं उस कुल का शीघ्र ही विनाश हो जाता है, उसकी अवनति होने लगती है। इसके विपरीत जहाँ ऐसा नहीं होता है और स्त्रियाँ प्रसन्नचित्त रहती हैं, वह कुल प्रगति करता है।

जामयो यानि गेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः।
तानि कृत्याहतानीव विनश्यन्ति समन्ततः।।५८।।

(अप्रतिपूजिताः जामयः यानि गेहानि शपन्ति, तानि कृत्या आहतानि इव समन्ततः विनश्यन्ति।)

अर्थ : जिन घरों में पारिवारिक स्त्रियाँ निरादर-तिरस्कार के कारण असंतुष्ट रहते हुए शाप देती है, यानी परिवार की अवनति के भाव उनके मन में उपजते हैं, वे घर कृत्याओं के द्वारा सभी प्रकार से बर्बाद किए गए से हो जाते हैं।

तस्मात् सदा पूज्या भूषणात्च्छादनाशनैः।
भूतिकामैः नरैर्नित्यं सतरेषूत्सवेषु च।।५९।।

(तस्मात् भूतिकामैः नरैः एताः (जामयः) नित्यं सत्कारेषु उत्सवेषु च भूषणात् आच्छादन-अशनैः सदा पूज्याः।)

अर्थ : अतः ऐश्वर्य एवं उन्नति चाहने वाले व्यक्तियों को चाहिए कि वे पारिवारिक संस्कार-कार्यों एवं विभिन्न उत्सवों के अवसरों पर परिवार की स्त्रियों को आभूषण, वस्त्र तथा सुस्वादु भोजन आदि प्रदान करके आदर-सम्मान व्यक्त करें।

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्ता भार्या, तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्।।६०।।

(यस्मिन् एव कुले नित्यं भार्यया भर्ता सन्तुष्टः, तथा एव च भर्ताभार्या, तत्र वै कल्याणं ध्रुवम्।)

अर्थ : जिस कुल में प्रतिदिन ही पत्नी द्वारा पति को संतुष्ट रखा जाता है और उसी प्रकार पति भी पत्नी को संतुष्ट रखता है, उस कुल का भला सुनिश्चित है। ऐसे परिवार की प्रगति अवश्यंभावी है। ■

ओ३म् जपो रे मनमा...

ओ३म् जपो रे मनमा ओ३म् जपो रे।
ओ३म् कहो रे मनमा, ओ३म् कहो रे।।१।।

मानव जीवन अति मोला
धर्म के बिना यह गोलम गोला।
ओ३म् बोलो रे मनमा, ओ३म् बोलो रे।।२।।

पापी मनमा मानत नाहीं,
धर्म क्या है यह जानत नाहीं।
ओ३म् रटो रे मनमा, ओ३म् रटो रे।।३।।

ज्ञान की गंगा में गोता लगाना,
अपना जीवन सुन्दर बनाना।
ओ३म् जपो रे मनमा, ओ३म् जपो रे।।४।।

रवीन्द्र सोम का गीत सुनाना,
अपना जीवन निर्मल बनाना।
ओ३म् जपो रे मनमा, ओ३म् जपो रे।।५।।

डॉ. रविन्द्रकुमार शास्त्री

ग्राम सिरखिण्डी, पो. बहछा, जिला लखीसराय (बिहार)
चलभाष : ९८३९११९६८३, ९११९८१६०३२८

श्री सुखदेव शर्मा और वैदिक संसार

देवभूमि यह देश है, आर्यावर्त्त महान्।
करता है सारा जगत्, देवों का गुणगान्।।
देवों का गुणगान, श्रद्धा से करते सज्जन।
बुरे काम से सदा, बहुत ही डरते सज्जन।।
श्रीराम श्रीकृष्ण देव थे, जग में नामी।
मानवता के पुंज, वेद-विद्या के स्वामी।।१।।

विक्रम राजा भोज थे देश भक्त बलवान्।
भले-बुरे की जो सदा, करते थे पहचान।।
मात-पिता गुरु भक्त, सदाचारी न्यायकारी।
आर्यजनों के सखा, जिन्हें थी प्रजा प्यारी।।
दानव दल से वीर बहादुर ना डरते थे।
सहकर कष्ट अपार, कष्ट जग के हरते थे।।२।।

वैदिक पथ के थे पथिक, दयानन्द ऋषिराज।
जग हित के वे कर गए, बड़े निराले काज।।
बड़े निराले काज, निराले वे थे त्यागी।
महा वेद-विद्वान्, गजब के थे वैरागी।।
जीव मात्र के लिए, संत ने कष्ट उठाए।
किया घोर विषपान, कभी वे ना घबराए।।३।।

देव दयानन्द कर गए, दुनिया का कल्याण।
दुनिया के नर–नारियों! सुनो लगाकर ध्यान।।
सुनो लगा कर ध्यान, वेद पथ को अपनाओ।
मानो ऋषि की बात, सभी शुभ कर्म कमाओ।।
कर्म विश्व प्रधान, अरे! समझो, समझाओ।
करो धर्म के काम, अमर जग में हो जाओ।।४।।

श्रीमान सुखदेव जी करते हैं शुभ कर्म।
प्राणों से प्यारा जिन्हें, पावन वैदिक धर्म।।
पावन वैदिक धर्म, सनातन है सुखकारी।
करता है कल्याण, समझ लो सब नर-नारी।।
वेदों का प्रचार, निरन्तर करते सज्जन।
बुरे काम से दूर, प्रभु से डरते सज्जन।।५।।

इनकी प्यारी पत्रिका, है वैदिक संसार।
करती है दिन-रात जो, दुनिया का उद्धार।।
दुनिया का उद्धार, रहे कर शर्मा प्यारे।
परोपकारी मित्र, श्री सुखदेव हमारे।।
ईश्वर कृपा करे, वर्ष सौ शर्मा जीवें।
'नन्दलाल' कह, वेद-सुधा जीवन भर पीवें।।६।।

ईश्वर भक्त महान् बनो

जगत पिता जगदीश निरंजन दुनिया का निर्माता है।
जग का पालन करता है वह, जग को वही मिटाता है।।
सूरज-चाँद सितारों को वह, रचता और टिकाता है।
निराकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक है, नजर न आता है।।१।।

सब जीवों को कर्मों के, अनुसार उचित फल देता है।
राजाओं का राजा है वह, नेताओं का नेता है।।
वेदों के अनुसार मनुष्य जो, जीवन सकल बिताते हैं।
बड़े भाग्यशाली है सज्जन, मोक्ष धाम को पाते हैं।।

यही सृष्टि का नियम निराला, जो दुनिया में आता है।
वह कर्मों का भोग-भोगकर, इस दुनिया से जाता है।।
न्यायकारी जगदीश दयामय, पक्षपात ना करता है।।
जो करते हैं भले काम, प्रभु, उनके संकट हरता है।।३।।

बात भले की बता रहा हूँ, सुनो जगत् के नर-नारी
इस दुनिया से चले गए, ज्ञानी-ध्यानी वेदाचारी।
गौतम, कपिल, कणादि, पतंजलि, दयानन्द जैसे ज्ञानी।
राम-लखन, हनुमान, कृष्ण से, वीर बहादुर बलवानी।।४।।

हिरण्यकुश, बाली,रावण अरु, कुम्भकर्ण अत्याचारी।
जिनका सुनकर नाम काँप उठती थी यह दुनिया सारी।।
अब्दाली, चंगेज, सिकन्दर, खिलजी, आलमगीर गए।
चाऊ एन लाई, अयूब भुट्टो, सब जालिम के पीर गए।।५।।

लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, मानवता के दीवाने।
वेदों का प्रचार रात-दिन, करते थे वे मस्ताने।।
तिलक, लाजपत, विपिन चन्द्र, भारत के सच्चे नेता थे।
भारत माँ के पुत्र निराले, अद्भुत वीर विजेता थे।।६।।

मदनलाल, बिस्मिल, शेखर, उधमसिंह को तुम याद करो।
देशभक्त, बलवान् बनो तुम, जीवन मत बर्बाद करो।।
राजगुरु, सुखदेव, भगतसिंह, राजपाल से वीर बनो।
नेता वीर सुभाषचन्द्र से देशभक्त रणधीर बनो।७।।

हेराफेरी से जोड़ा धन, यही पड़ा रह जाएगा।
धर्म एक है सच्चा साथी, अन्तिम साथ निभाएगा।।
मानव हो मानवता धारो, ईश्वर का गुणगान करो।
'नन्दलाल' जीवन सुधरेगा, प्राप्त वेद का ज्ञान करो।।८।।

पं. नन्दलाल निर्भय
सिद्धान्ताचार्य
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल
(हरियाणा)
चलभाष : ९८१३८४५७७४

जातिवाद-साम्यवाद का शत्रु : चिन्तनीय विषय

पं. उम्मेदसिंह विशारद
गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
चलभाष : ९४११५१२०१९, ९५५७६४१८००

आज के संस्कार

ईश्वर ने इस विशाल सृष्टि की अद्भुत रचना की है और उसमें असंख्य प्राणियों की भी उत्पत्ति की है और उनके जीने की सामग्री भी प्राणी अनुसार पैदा की है और प्रत्येक प्राणी की आकृति भिन्न-भिन्न बनाई है और भिन्न-भिन्न आकृतियों को जाति कहते हैं। आकृति भेद संसार में भिन्न-भिन्न प्राणियों में जाति भेद हैं। जैसे पशु-पक्षी, घोड़ा-गधा, बकरी, सांप अनेक जीवधारी प्राणी और उसमें मनुष्य भी एक जाति है। जाति उसको कहते हैं जो जन्म से मृत्यु तक एक ही आकार में रहती है।

आज भारत की शिक्षा पद्धति का आधार भौतिक है और आज नैतिक शिक्षा संस्कारों का आधार संसार खोता जा रहा है। सामाजिक अव्यवस्था व साम्यवाद रहित संस्कारों का कारण है झूठी मर्यादा, कथित मनुष्यों में अनेक उपजातियाँ पनपी हैं। जैसे हिन्दू-मुसलमान-ईसाई व अन्य विभिन्न जातियाँ। जैसे हिन्दुओं में वर्मा, शर्मा, गुप्ता, अग्रवाल, पंवार, बिष्ट, बहुगुणा, बेदी, रावत, मनूड़ी आदि आदि। बच्चा पैदा होते ही उसको पिता का उपनाम जाति वाचक शब्द के संस्कार दिए जाते हैं और जो-जो माता-पिता जिस सम्प्रदायों मतों तथाकथित धर्मों को मानते हैं वह बच्चे के मस्तिक में भर दिए जाते हैं। वह बच्चा युवा होने पर उस जातिवाद के दायरे को अपनी मर्यादा समझ लेता है। उसके विरुद्ध एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता, चाहे वह भले ही सिद्धान्तहीन, वेद के प्रतिकूल व सृष्टिक्रम के विरुद्ध ही क्यों न हो और इन्हीं विकारों के कारण दुनिया में मानवों पर भयंकर अत्याचार हत्याएँ हुईं और हो रही हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कहते हैं कि हे मनुष्य! तू यदि ईश्वरीय धर्म वैदिक धर्म को मान लेता तो आज यह विकृत स्थिति न होती और आज संसार ईर्ष्या द्वेष के बारूद के ढेर पर न बैठा होता, चारों ओर समानता, भाईचारा, शान्ति होती।

आर्य समाज जैसा सुधारक वैचारिक क्रान्ति संगठन भी जातिवाद के उपनाम से ग्रस्त हैं

यद्यपि आर्य समाज छुआछूत जातिवाद को नहीं मानता, किन्तु यह मान्यता अधूरी है क्योंकि आर्य समाज के नेतृत्व से लेकर एक सामान्य सदस्य तक भी अपने नाम के पीछे जातिवाद उपनाम शब्द गौरव से लगा रहा है। यदि करोड़ों आर्य समाजी नाम के आगे आर्य लगावे तो एक आदर्श पहचान बन जाती और मानव समाज में जातिवाद की बीमारी में औषधि का कार्य होता, क्योंकि आर्य समाज ही संसार में एकमात्र ऐसा सर्वांगीण सुधारवादी, साम्यवादी, ईश्वरीय संविधान वैदिक धर्म की मान्यताओं और सृष्टिक्रम व वैज्ञानिक सिद्धान्तों को मानने वाला वैचारिक, व्यावहारिक, क्रियात्मक विशाल संगठन है जो संसार में साम्यवाद ला सकता है। आर्य समाज को जागना ही होगा।

प्राचीन वर्णाश्रम धर्म व्यवस्था का उद्देश्य क्या था

प्राचीन वैदिक वर्ण व्यवस्था का उद्देश्य यह था कि इस लोक और परलोक को सुखी व द्वेषरहित व वैदिक संस्कृति से जोड़ना था और इस लोक के बड़े-बड़े दुःखों को देखकर ही इसका वर्ण व्यवस्था का चयन मानव के गुण कर्म स्वभाव व ज्ञान व रुचि को देखकर किया जाता था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र व्यवस्था में समन्वय से कर्म व्यवस्था थी और उसमें किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं था। यह व्यवस्था सार्वभौम मनुष्यों के कल्याण के लिए बनाई गई थी। इस वर्ण व्यवस्था का आधार ईश्वरीय धर्म वैदिक था। यह तो सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ने ही अपनी सृष्टि रूप व्यवस्था को सुखमय व साम्यवादी बनाने के लिए वेदों में की थी और इस लोक व मृत्यु के पश्चात् मिलने वाले परलोक को देखकर इसकी व्यवस्था बाँधी थी।

वर्तमान युग में वर्ण व्यवस्था के कार्य तो हो रहे हैं किन्तु यह जातिवाद, ऊँच-नीच में फँस गई है। वर्ण व्यवस्था का अर्थ था कि सबको वैदिक धर्मानुसार चलना। वर्णाश्रम का मूल अर्थ यह है कि सबको कार्य देना, कोई भी व्यक्ति निठल्ला न रहे और अपनी-अपनी जीविका में सब स्वतन्त्रतापूर्वक रत रहेंगे तो परस्पर एक-दूसरे के सब सहायक व अधीन हो जाएँगे और समस्त मानव समाज की आर्थिक-सामाजिक- आध्यात्मिक दशा सन्तोषजनक हो जाएगी और सभी को अपना कार्य क्षेत्र चुनने में गुणों के आधार पर पूर्ण स्वतन्त्रता रहेगी।

वर्तमान राजनीति जातिवाद को बढ़ावा दे रही है

आज की राजनीति ने नेतृत्व के साथ-साथ प्रजा को भी दूषित कर दिया है। आज का राजनीतिक नेतृत्व अपने असली स्वरूप आदर्श को भूल गए हैं। जनता ने उन्हें अपना आधार मान कर चयन किया है। सर्वहितकारी कार्य, नशामुक्त समाज, स्वच्छ विचार, अन्धविश्वास रहित सृष्टिक्रमानुसार व विज्ञान व वेदानुसार आचरण की शिक्षा देकर नेतृत्व करना चाहिए था। किन्तु आज का विधायक स्वयं दिशाहीन होकर अनेक दुष्प्रवृत्तियों में रमा हुआ है। जो स्वयं भ्रष्ट हो, जातिवाद से ग्रस्त हो अपने समर्थन के लिए जातिवाद को प्रोत्साहन देता हो, अन्धविश्वास में फँसा हो और कुशल राजनीति के गुणों से

अनभिज्ञ हो वह नेता जनता का सर्वांगीण विकास कभी नहीं कर सकता है। आज की राजनीति की दिशा और दशा में आमूलचूल परिवर्तन की जरूरत है। कुशल राजनीति में सुधार कैसे होगा इस विषय पर हम एक लेख पत्रिकाओं में पूर्व में ही प्रेषित कर चुके हैं। मूल संकेत यहाँ भी व्यक्त करता हूँ। राष्ट्र में प्रत्येक जिले में राजनीति कॉलेज होना चाहिए। उसमें उक्त विचारों के पाठ्यक्रम की शिक्षा दी जाए और जो राजनीति कॉलेज से उत्तीर्ण हो उसी को चुनाव लड़ने का टिकट दिया जाए। अगर भारत के राजनीति के शास्त्री इस दिशा पर विचार करें तो कालान्तर में भारत की राजनीति में आमूलचर्ल परिवर्तन हो सकता है। आज के युग के कुशल सुधारवादी नेतृत्व की अति आवश्यकता है। आर्य समाज नेतृत्व को योग्य शास्त्री एवं गुरुकुलों से उत्तीर्ण विद्यार्थियों को विधायक का चुनाव लड़ाकर उज्ज्वल भविष्य की राजनीति में प्रवेश कराना अनिवार्य हो गया है।

साम्यवाद एक जटिल समस्या

यह निर्विवाद सत्य है कि मानव समाज जब तक वेदानुकूल व सृष्टिक्रम व ईश्वरीय व्यवस्था के अनुकूल नहीं चलेगा तब तक सही रूप में साम्यवाद नहीं आ सकता। संसार में जितनी भी परिस्थिति और समस्याएँ हैं वे सब अपने ही कर्मों के कारण है। हर कोई आत्मा से चाहता है कि साम्यवाद की स्थापना होनी चाहिए यह आत्मा की आवाज है। सबका अधिकार छीन कर शोषणवर्ती से ताकतवर बन कर साम्यवाद की दुहाई जीती है। वेद कहता है कि अकेला खाना महापाप है। अत: सर्व प्रकार के सुख भोग का सबको समान अधिकार है।

जिस देश में शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति के लिए भरपूर अवसर मिले वह देश सच्चा साम्यवादी है। हर कोई कहता है कि साम्यवाद की स्थापना होनी चाहिए। सबको समान हक मिलना चाहिए। यह तभी हो सकता है। जब सबका बिना अधिकार सम्पत्ति व विचार व व्यवहार व शोषणवृत्ति का अधिकार छीन कर सबके योग्यता के आधार पर ही विभक्त करना ही साम्यवाद होगा। यदि अयोग्य के पास अत्यधिक सम्पत्ति सुख–सुविधा होगी तो उसका दुरुपयोग ही होगा। जिससे यह लोक और परलोक सुधरे तदनुसार कर्म, धर्म है वही वास्तव में सच्चा साम्यवाद है। वेद ऐसे साम्यवाद का आदेश देता है जिससे सबको लाभ मिले।

निवेदन

सम्पूर्ण मानव जगत् से आग्रह है कि यदि हम सब अपने नाम के उपरांत जातिवाचक शब्द लगाना बन्द कर देवें जो कालान्तर में समाज में बड़ा परिवर्तन आ सकता है। सर्वप्रथम आर्य समाज संगठन और अन्य धार्मिक संगठनों को पहल करनी चाहिए, क्योंकि यह कार्य अति पुण्य वाला व ईश्वरीय कार्य है।

वर्ण व्यवस्था कर्म से है, जन्म से नहीं। वर्ग भेद एवं ऊँच-नीच के विष-वृक्ष को उखाड़ फेंका जाना चाहिए। मानव समाज को जोड़ने में सहयोग करें। ■

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

आध्यात्मिक ज्ञान-विज्ञान के पिपासु, भद्रशील महानुभाव! सादर नमस्ते।

आपके प्रिय दर्शन योग महाविद्यालय के निदेशक पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक की अध्यक्षता में एवं अनेक विद्वानों के सान्निध्य में वैदिक दर्शनों के आधार पर अविद्या के स्वरूप का ज्ञान, विवेक-वैराग्य, शंका समाधान, आत्मनिरीक्षण आदि की कक्षा, एकान्त- सुरम्य स्थल में, सुव्यवस्था से युक्त, ध्यान-अनुकूल परिवेश से युक्त **नवनिर्मित दर्शन योग धाम में क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर दिनांक ९ से १४ जुलाई २०२४ तक** आयोजित होने जा रहा है। आप सभी शिविर में अनुशासनपूर्वक अवश्य भाग लेवें तथा अन्य को भी प्रेरित करें।

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर में शिविरार्थी रूप में भाग लेने के लिए पंजीकरण हेतु लिंक : https://forms.gle/5nyHNKEE9u72uQQ56

आचार्य प्रियेश (संयोजक)

९३०६३७४९५९

कार्यालय

९४०९६१५०११, ८२००९१५०११

हे ज्ञान रूपी परमपिता!

हे ज्ञान रूपी परमपिता!
श्रुति ज्ञान का मुझे दान दो।
श्रुति ज्ञान के आलोक से,
बुद्धि मेरी कर दो विमल,
सत् मार्ग पर मुझको चला,
तम ताप से मुझे तार दो। हे ज्ञान रूपी...
सन्तोषी बनकर के जियूँ
अस्तेय की भरो भावना,
धीरज धरूँ और श्रम करूँ,
दु:ख सह सकूँ वह शक्ति दो। हे ज्ञान रूपी...
इच्छाओं का कर लूँ दमन,
विषय वासनाओं से बचूँ,
इन्द्रियाँ करो वश में मेरे,
और शुद्धता तन मन को दो। हे ज्ञान रूपी...
अहं क्रोध से मुझे दूर कर,
हिंसा न मन में घर करे,
सब प्राणियों से प्रेम हो,
उर में दया का भाव दो। हे ज्ञान रूपी...
झंकृत करो मन को मेरे,
संगीत हृदय में भरो,
वाणी में भरकर मधुरता,
वीणा के सुर से साज दो। हे ज्ञान रूपी...
प्रकृति में जो भी दिख रहा, सब तेरा ही सौन्दर्य है,
गुणों को तेरे दर्शा सकूँ,
कला का रमेश में भाव दो।
हे ज्ञान रूपी...

रमेशचन्द्र भाट 'आर्य पथिक'
पसन्द नगर, कोटड़ा, अजमेर (राज.)
चलभाष : ९४१३३५६७२८

आज का मनुष्य

राधेश्याम गोयल

न्यू कॉलोनी, कोदरिया (महू)

चलभाष : ९६१७५९७९१०

आज मनुष्य का भौतिक युग में भौतिकता का जीवन पिछले पचास वर्षों की अपेक्षा सभी तरह से सम्पन्न है, वह विलासिता के सभी साधनों से युक्त बंगले-कार तथा उच्च वर्ग के संसाधन तो भोग रहा है, परन्तु परिवार से, समाज से कटकर व्यस्त तथा भागमभाग का जीवन जी रहा है, जिससे उसका सुख–आत्मशान्ति उससे छिनता जा रहा है।

अत्यधिक महत्वाकांक्षा और अति स्वार्थ के कारण सब कुछ होते हुए भी निर्धन और असहाय सा अपने को अनुभूत करता है। कारण नेक एवं सत्कार्यों एवं सु-संस्कारों की कमी से आत्मिक सुख-शान्ति और उस परमपिता परमेश्वर से बहुत दूर होकर दिन-रात के तनाव में रहकर कई तरह की बीमारियों से ग्रसित हो अल्पायु में ही संसार से विदा हो रहा है।

आज के समय में मनुष्य का कमाया धन, दवाइयों, अस्पतालों, उच्च वर्ग की शिक्षण संस्थाओं, कोर्ट-कहचरी तथा हाई-फाई सोसायटी में व्यर्थ व्यय हो जाता है, क्योंकि वह सत्यता को छोड़ आडम्बर और दिखावे में अधिक विश्वास रखता है।

आज मनुष्य वैदिक संस्कारों अपनी संस्कृति से दूर होकर मैकाले की शिक्षा पद्धति को अपनाकर अच्छे पैकेज तथा पद प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेता है परन्तु स्वार्थवश एवं संस्कारहीनता के कारण भ्रष्ट आचरण के द्वारा परिवार सहित दु:खी होकर प्रायश्चित के कुचक्र से भी बच नहीं सकता है, इसका भी कारण वेदों से दूर होना है।

आज का मनुष्य एकल परिवार में रहकर अपने को सुखी एवं सम्पन्न समझता है परन्तु ये उसका कोरा भ्रम है इससे मनुष्य परिवार से टूटकर समाज से भी दूर होकर एकाकी जीवन जीता है, जिसके दूरगामी परिणाम अच्छे नहीं होकर बच्चों पर बुरा प्रभाव डालते हैं, बच्चे अपनी संस्कृति तथा मर्यादाओं और अपने सनातन धर्म से विलग हो नियन्त्रण विहीन होकर आज के वातावरण में ढल कर लीव-इन रिलेशन लव-मैरेज करके जीवन दु:खी कर लेते हैं और ड्रग्स एवं अन्य दुर्व्यसनों के शिकार होकर आत्महत्या का घृणित कार्य करके परिवार में माता-पिता को एकल परिवार का दंश दे जाते हैं।

आज समाजों में अन्तर जातीय विवाह बहुतायत से हो रहे हैं, जो सामाजिक विवशता या बच्चों के दूरगामी विचारों की कमी से होते हैं, जो बहुत कम जीवन पर्यन्त निभ पाते हैं, कुछ लव मैरेज के थोड़े दिनों बाद ही तो कुछ एक-दो बच्चों के बाद स्वार्थ या एक दूसरे से अत्यधिक अपेक्षा के कारण तथा सामाजिक मान-मर्यादा की कमी भी ऐसे परिवारों में खुली विचारधारा के कारण बिछोह का रूप धर कर विघटन हो जाता है। जो बच्चों के भविष्य को जीवन पर्यन्त सहना पड़ता है।

आज मनुष्य परिवार नियोजन अपनाकर एक या दो बच्चों में सन्तुष्ट हो जाता है वह यह नहीं समझता कि इससे आगे चलकर जो सम्बन्ध काका, मामा, बुआ, मौसी, बहन-भाई के होते थे वे सभी खत्म हो जाएँगे और वही बच्चे जब पढ़-लिखकर बाहर जॉब करने चले जाएँगे तो एकाकी जीवन, चौथेपन, बुढ़ापा कष्टों में गुजारना पड़ेगा है और कई बार तो पड़ोसी ही उनका सभी कार्य करते हैं, बच्चे तो आ भी नहीं पाते हैं जो उनका स्वप्न था वो उनके लिए अभिशाप बनके घातक सिद्ध हो जाता है।

माना कि परिवार नियोजन जनसंख्या नियन्त्रण का एक अच्छा और नियोजित विकल्प है, परन्तु एक परिस्थिति के बाद यह एक दु:ख का कारण भी बन जाता है। जिससे सु-संस्कृत और अच्छे लोगों की संख्या में कमी के कारण समाज एवं राष्ट्र के सभी वर्गों के लिए नियमपूर्वक अनिवार्य होकर पक्षपात रहित होना चाहिए।

अत: आज मनुष्य को सनातन वैदिक धर्म को जीवन में अपनाकर उसके सिद्धान्तों पर चलकर जीवन को सुखमय बनाना चाहिए।

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

इति शुभम्! ■

जगत् गुरु ऋषि दयानन्द

जगत् गुरु ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र को पढ़ो। जो आदेश वेद भगवान ने सुधारक के लिए किया है उसमें कोई दृष्टि में नहीं आता है। वह वेद का प्रचारक, उपदेशक ही न था किन्तु वह सुधारक, सच्चा सुधारक था, जो कुछ पढ़ा सुना, चिन्तन–मनन किया वह जीवन में लाया। वह परमपिता का सच्चा आज्ञाकारी बना। पिता की पूँजी को पाया। निर्भय होकर संसार को वेद की सत्य और उत्तम अमृत वाणी कल्याण का सन्देश सुनाया और कहा– **'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति'।**

वह एक ही है पर ज्ञानी लोगों ने अपने–अपने अनुभवों के अनुसार उसे भिन्न–भिन्न नाम दिया है। ऐश्वर्यवान् होने से वही इन्द्र है। मृत्यु का त्राता होने से वही मित्र है। पाप निवारक होने से वही वरुण है। प्रकाशक होने से वह अग्नि है। वेद मन्त्रों में नाना नाम से पुकारा जाता हुआ भी वही एक ही है।

यदि हम एक हो जावें तो मुक्त हो जावें।

देवकुमार प्रसाद आर्य

भूतपूर्व प्रधान : आर्य समाज

५०, फौजा बागान, बारीडीह, जमशेदपुर (झारखण्ड)

चलभाष : ८९६९५४२३३९

क्या ये ही न्यायकारी विक्रमादित्य का देश है?

आज टीवी पर समाचार देखते-देखते मैं सो गया।
नींद में स्वप्न आया मैं क्या से क्या हो गया।।
जिस न्यायिक प्रक्रिया के भ्रष्टाचार से
जाग्रत अवस्था में मैं पीड़ित रहा।
पर स्वप्न में मैं अतीक की तरह बाहुबली बना बैठा हूँ।
भारी पुलिस मेरी सुरक्षा में लगी है।
जबकि थाने में गुहार लगाने पर भी।
जो पुलिस एनसीआर लिख न्यायालय की राह बता देती थी।
आज वही दर्जनों मेरी सेवा में लगे हैं।
जिन समाचार-पत्र वालों से मैं, मेरे ऊपर हो रहे अत्याचारों को
प्रकाशित करने का अनुरोध किया करता था।
वही समाचार तन्त्र आज मेरे पग-पग की जानकारी
सारी दुनिया को पल-पल बता रहा है।
मेरे लिए एएसआई तक बात सुनाना मुश्किल था।
आज एसपी जैसे अधिकारी आगे-पीछे लगे हैं।
कभी मैं मेरी शीघ्र सुनवाई के लिए अनुरोध किया करता था।
तो सिर्फ तारीख पर तारीख ही मिला करती थी।
कभी कोर्ट जाने को वाहनों से सहायता माँगा करता था।
आज मैं बाहुबली हूँ, सरकारी गाडियाँ मेरी सेवा में लगी हैं।
कभी मैं अपनी स्वेद-रक्त से अर्जित संपत्ति को।
दुष्टों से बचाने हेतु सरकारी तन्त्र से प्रार्थना किया करता था।
आज वही तन्त्र मेरी अवैध संपत्तियों की जाँच में जुटा है।
अचानक एक गोली चलती है और मेरी नींद टूटती है।।
सोने से पहले का वही बिस्तर था, ऊपर पंखा घूम रहा था।
पर अब मेरा चिन्तन सपने और यथार्थ के बीच घूम रहा था।
कि क्या भलाई के रास्ते पर मात्र कठिनाई, दुष्टों की मौज है।
सोचता हूँ क्या ये ही न्यायकारी विक्रमादित्य का देश है।।

आर्य पी.एस. यादव

प्रधान आर्य, समाज, मण्डीदीप
जनपद : रायसेन (म.प्र.)
चलभाष : ९४२५००४३७९

मैं कौन?

हे ईश मेरा मन हो सबल दिव्य निष्काम मौन।
मैं निहार सकूँ मैं जो हूँ जैसा मैं कैसा और कौन।।
सुख देख सुखी हुआ, दुःख देख दुःखी हो जाता।
पुष्प देख पुण्य समझता, मन्दिर प्रतिमा में दाता।।
खुशियाँ देख खुशी हो जाता, चिन्ता से चिन्तित कुम्हला जाता।
विधि के विधान अटल है, फिर भी मैं अपनी सदा चलाता।।
मैं क्यों विचलित हूँ, मुझे समझाएगा कौन।
मैं निहार सकूँ मैं जो हूँ, जैसा मैं कैसा और कौन।।१।।
रूप, रंग, शब्द, स्पर्श, गन्ध, आसक्ति के संग।
काम–क्रोध–लोभ–मोह मद जीवन के बनाए अंग।।
इन्द्रियों के अधीन सदैव कठिनाई में ये मन के ढंग।
क्यों नहीं छूटता मोह, मैं लगूँ वैराग्य के संग मिटे जंग।।
मैं अपनी मनमानी में हूँ, मुझे सत्य का बोध कराए कौन।
मैं निहार सकूँ मैं जो हूँ, जैसा मैं कैसा और कौन।।२।।
मैं जिज्ञासा शून्य हुआ, मन का स्वामी बना हूँ।
किसे पड़ी है मुझे समझाए, भरे विकार बहु।।
छोड़ वासना सन्त शरण जा सुख पा दशों दिशा में रहूँ।
छोड़ संग्रह न हो विग्रह, अहम अकड़ माया मकड़जाल कहूँ।।
मैं सरल संयमी साधक बन, खुद को जान लूँ कौन।
मैं निहार सकूँ मैं जो हूँ, जैसा मैं कैसा और कौन।।३।।
यह पा लूँ वह पा लूँ, यह खा लूँ वह पी लूँ आज।
यह कर लूँ वह कर लूँ, सारी दुनिया पर हो मेरा राज।।
अभी तक जो भी हुए, राजा रंक भिखारी सबके छूटे काज।
यह दुनिया फानी है, बहता पानी है, आत्मा पंछी उड़ा बन बाज।।
मैं सब प्रपंच छोड़ करूँ ईश भजन करूँ हो वजन कम रहूँ मौन।
मैं निहार सकूँ मैं जो हूँ, जैसा मैं कैसा और कौन।।४।।
जगत् का मेला है झमेला, कुछ भी नहीं जाता साथ।
जैसा आया वैसा जाएगा, तू सदा अकेला अनाथ।।
सुत धन दास कुटुम्ब समाज, सभी स्वार्थ का बढ़ाते हाथ।
जिन तत्वों से बना उसी में विलीन 'सुन्दर' जप ओ३म् का होऊँ सनाथ।।
मैं दुनिया एक दिन छोड़ दूँगा, धरा से मुँह मोड़ दूँगा, जगत् में मेरा कौन।
मैं निहार सकूँ मैं जो हूँ, जैसा मैं कैसा और कौन।।।।५।।

सुन्दरलाल प्रहलाद चौधरी

अधीक्षक : पोस्ट मैट्रिक अ.जा. बालक छात्रावास
बुरहानपुर (म.प्र.), चलभाष : ९९२६७६११४३

अभिनव योजना

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्– संसार भर में आर्य (धार्मिक) बनते–बनाते चलो।

आर्य-बाल-संस्कार शाला

वेदप्रकाश आर्य

सागरपुर ईस्ट, नई दिल्ली–४६
चलभाष : ९३११८०१२१२

हिन्दू–मुस्लिम–सिख–ईसाई
सभी को वापस आना है,
वेद मार्ग पर चलकर
फिर से आर्यावर्त बनाना है।
अलगाववाद मिटाना
सबका शुद्धि संस्कार करना है,
वसुधैव कुटुम्बकम् का
वैदिक संसार बनाना है।

आर्य समाज में आर्य बाल संस्कार शाला का प्रारम्भ किया जा रहा है। इस आर्य समाज की कार्यकारिणी एवं सभी आर्य सज्जनों की सम्मति एवं सहायता से ५ से ८ वर्षीय बालक-बालिकाओं में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के बीजारोपण करने हेतु सत्य सनातन- वैदिक- सर्वहितैषी संस्कारों पर अपना जीवन यापन करने की परम्परा चलाने का निश्चय किया गया है। ५ से ८ वर्षीय बालक-बालिकाओं के लिए खोली जा रही **'आर्य बाल संस्कार शाला'** को संचालित करने का स्वरूप इस प्रकार होगा-

(१) प्रवेश पाए हुए बच्चों के माता-पिता संस्कारशाला में अपने बच्चों को भोजन करवाकर सायंकाल सूर्यास्त के समय ७ बजे तक पहुँचा देंगे।

(२) ७ से ८.३० बजे तक वर्ण उच्चारण शिक्षा एवं देवनागरी लिपि का पठन-लेखन आदि का पूरा ज्ञान देने की वेद पाठशाला लगेगी प्रारम्भिक गणित, गिनती, पहाड़े, जोड़, घटा, व गुणा-भाग एवं मापन विधि तथा प्रारम्भिक वैदिक विज्ञान का पाठ्यक्रम रहेगा।

(३) ८.३० बजे रात्रि से ८.४५ तक सभी बच्चों को देशी गाय का दूध पावभर दिया जाएगा और वहीं पर रात को सुलाया जाएगा।

(४) प्रात: ४ बजे से ७ बजे तक एक स्वस्थ प्रक्रिया से नित्य कर्मों को पूर्ण प्रबन्ध के साथ पूर्ण किया जाएगा जिसमें उषा-पान, शौच, स्नानादि से लेकर दन्त-धावन, हल्का सूक्ष्म व्यायाम और आसन-प्राणायाम भी कराया जाएगा।

(५) प्रात: ७ से ९ तक तीन प्रकार की शिक्षा दी जाएगी। **एक ईश्वर पूजा :** अर्थात् ईश्वर की स्तुति- प्रार्थना और उपासना सिखाई जाएगी। दैनिक अग्निहोत्र स्वयं करना सिखाया जाएगा। आस्तिक बने रहने की शिक्षा दी जाएगी। **दूसरा खानपान–** अर्थात् आहार–व्यवहार को भारतीय विशुद्ध परम्परा के आधार पर लेना सिखाया जाएगा ताकि बचपन से ही अण्डे–मांस– मछली–बीड़ी सिगरेट– शराब– तम्बाकू– चरस– भांग– गांजा– गुटका आदि अभक्ष्य पदार्थों व दुर्व्यसनों से होने वाली हानियों के विषय में ठीक–ठीक जानकारी दी जा सके। परिणाम स्वरूप शारीरिक स्वास्थ्य एवं बुद्धिनाशक पदार्थों एवं बुरी आदतों से हमेशा के लिए बचे रह सकें। **तीसरी व्यावहारिक शिक्षा–** छोटे–बड़े एवं बराबर वालों से किस प्रकार व्यवहार किया जाए इत्यादि की शिक्षा **'व्यवहार भानु'** नामक पुस्तक के आधार पर एवं नैतिक शिक्षा अर्थात् धार्मिक शिक्षा सर्वहितैषिता के आधार पर दी जाएगी ताकि साम्प्रदायिक अलगाववाद को समाप्त करने का बल–बुद्धि–पराक्रम प्राप्त हो सके।

(६) ९:०० बजे एक पाव देशी गाय का दूध पिलाकर अपने–अपने घरों को भेज दिया जाएगा।

इस प्रकार बच्चों का जीवन सात्विक गुण–कर्म और स्वभाव वाला बनाने में जो आर्थिक व्यय होगा, उसको आर्य समाज एवं अभिभावक (माता–पिता) दोनों मिलकर पूरा करेंगे। प्रबुद्ध पाठकगण भी अपने–अपने क्षेत्र में इस प्रकार की आर्य बाल संस्कार शालाओं के माध्यम से कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की दिशा में सार्थक प्रयास कर सकते हैं। ■

युवा वर्ग विशेष

अनमोल मोती

प्रात:काल पानी पीयें घूँट–घूँट कर आप,
बस दो–तीन गिलास है, हर औषधि का बाप।
भोजन करने धरती पर, अल्थी–पल्थी मार,
चबा–चबा कर खाइये, वैद्य न झाँके द्वार।
प्रात: दोपहर लीजिये, जब नियमित आहार,
तीस मिनट की नींद लो, रोग न आवे द्वार।
रक्तचाप बढ़ने लगे, तब मत सोचो भाय,
सौगन्ध राम की खाय के, तुरन्त छोड़ दो चाय।।
एल्यूमीनियम के पात्र का,करता है जो उपयोग,
आमन्त्रित करता सदा वह, अड़तालीस रोग।
निंबू पानी का सदा, करता जो उपयोग,
पास नहीं आते कभी, यकृत, आँत के रोग।
भोजन करके खाइये, सौंफ और गुड़पान,
पत्थर भी पच जाएगा, जाने सकल जहान।
जब भी लघुशंका करें, खड़े रह यदि यार,
इससे हड्डी रीढ़ की, होती है बेकार।

न दानं न ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः,
ते मर्त्यलोके भुविभारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

बंशीलाल आर्य

बरखेड़ापन्थ, जिला : मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ९८२६७२०१६४

क्या मनु के विरोधी इसे पढ़ना चाहेंगे?

रामफल सिंह आर्य

वैदिक प्रवक्ता, भिवानी (हरियाणा)

चलभाष : ९४१८२७७७१४, ९४१८४७७७१४

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि पूरे संसार में भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जहाँ के निवासी अपने महापुरुषों के लिए उपेक्षा एवं तिरस्कार के भाव रखते हैं। या तो महापुरुषों को इतना महिमा मण्डित कर दिया जाता है कि उन्हें मनुष्य से उठाकर ईश्वर या अलौकिक बना दिया जाता है, उनके नाम पर कोई न कोई मत-मजहब चलाकर मनमाना साहित्य रचा गया या फिर कुछ तथाकथित शिक्षितों द्वारा उनके कार्य का महत्व एवं उनके सिद्धान्तों की पूर्ण जानकारी के बिना ही उन्हें उपेक्षित कर दिया गया। दोनों ही अवस्थाओं में उनके साथ अन्याय हुआ। आपके मन में यह प्रश्न अवश्य ही उभर कर आ रहा होगा कि ईश्वर का स्थान देने पर जबकि सर्वत्र उनकी पूजा हो रही है, राम, कृष्ण, शिव, हनुमान, नानक, बुद्ध, महावीर आदि के स्थान-स्थान पर अनेक मन्दिर आदि बने हैं, लोग उनके प्रति श्रद्धाभाव भी रखते हैं, तो उनके साथ अन्याय कहाँ हुआ? नि:सन्देह मन्दिर भी बने हैं, पूजा भी होती है, लोग श्रद्धा भी रखते हैं, परन्तु क्या हमें इनके भक्तों के मात्र एक व्यक्ति भी ऐसा दिखा सकते हैं जो इनके चरित्र से कुछ भी ग्रहण कर पाया हो? जब उन्हें इस पृथ्वी का प्राणी ही न रहने दिया और यह मान लिया गया कि जो कुछ कार्य वे कर के गए हैं। वह केवल ईश्वर ही कर सकता है, जब उनका श्रेष्ठ व्यवहार आचरण की वस्तु होने की अपेक्षा पूजा की वस्तु बन गया तो और भला अन्याय किसको कहते हैं? इस महिमा मण्डन के नीचे उनका गुण गौरव सदा-सदा के लिए दब कर रह गया और उनके भक्त पदे-पदे ठोकर खाते रहे तो और भला अन्याय क्या होता है? यदि किसी का पिता अद्‌भुत शौर्य वाला हो, तेजस्वी प्रतापी और पराक्रमी रहा हो और उसकी सन्तान उसके इन गुणों से कुछ भी लाभ न प्राप्त कर उसका मन्दिर बनवा दे और उस मन्दिर में चढ़ने वाले चढ़ावे से ही अपना पेट पालने लगे तो इससे बढ़कर और अन्याय भला और क्या होगा? इसलिए हमारा उपर्युक्त शब्द 'अन्याय' उचित है।

भारत देश गुणियों की धरा रहा है। यहाँ पर एक से बढ़कर एक विज्ञानी, महाज्ञानी ऋषि–मुनि एवं सृष्टि के तृण से लेकर ब्रह्म तक के विज्ञान का साक्षात्कार करने वालों की एक बहुत लम्बी सूची है जिनके बारे में पढ़कर हमारा मस्तक आज भी गर्व से ऊंचा उठ जाता है। जीवन की कोई विधा ऐसी नहीं है जिस पर हमारे आचार्यों ने अतुलनीय कार्य न किया हो। इन्हीं में से एक हैं हमारे प्राचीन संविधान निर्माता महर्षि मनु जी महाराज। इनका बनाया धर्मशास्त्र आज मनुस्मृति के नाम से विख्यात है। यह शास्त्र मानव समाज का बहुत लम्बे समय तक मार्गदर्शन करता रहा परन्तु धीरे-धीरे इसमें अनेक प्रक्षेप होने लगे और महाभारत के युद्ध के पश्चात् तो इस ग्रन्थ में प्रक्षेपों की भरमार हो गई और महर्षि मनु जी का मन्तव्य धूमिल होता गया। पाखण्डी, धूर्त एवं चालाक लोगों ने उनके मन्तव्यों के विरुद्ध अनेक श्लोकों को इसमें डालकर इसे विकृत कर डाला। इतने पर भी बहुत समय तक इसकी मान्यता बनी रही। समय-समय पर कुछ विचारक एवं सुधारक भी आते रहे, परन्तु उनके पास इस बात का कोई उत्तर नहीं था कि मनुस्मृति में अमुक-अमुक बात लिखी है तो उसका कारण क्या है? धार्मिक ग्रन्थों में प्रक्षेप होने की यदि किसी ने पहली बार बात कही तो वे थे महर्षि स्वामी दयानन्दजी महाराज, उनकी तीक्ष्ण दृष्टि से यह बात छुप न सकी कि मनुजी का अपना मन्तव्य क्या है और उसमें परस्पर विरोधी बातों का कारण क्या है? यद्यपि ऋषिवर के पास इतना समय न था कि वे उसे शुद्ध करके छपवा सकते तथापि उन्हीं के संकेत के अनुसार आने वाले समय में आर्य विद्वानों ने इस दिशा में सराहनीय कार्य किया और इस ग्रन्थ का शुद्ध स्वरूप लोगों के सामने रखा। डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी इस कार्य के लिए वास्तव में बधाई के पात्र हैं। अस्तु!

आज कुछ तथाकथित प्रगतिवादियों या बुद्धिजीवियों का एक ऐसा वर्ग तैयार हो चुका है जिन्होंने यह शपथ उठा ली है कि अपने प्राचीन साहित्य, ज्ञान, सिद्धान्त, नियम, व्यवस्था के विरुद्ध प्रचार करना ही करना है, चाहे वे कितने ही श्रेष्ठ एवं उत्तम क्यों न हों। आधुनिक शिक्षा पद्धति जो वास्तव में शिक्षा न होकर एक उच्छृंखल मनोवृत्ति है, विदेशियों का एक सोचा-समझा एवं सुनियोजित षड्‌यन्त्र है उसने इस कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। धीरे-धीरे समाज की एक मनोदशा तैयार की जा रही है जिसका कार्य अपने ऋषि–मुनियों की अवमानना करना, समाज में व्याप्त कुप्रथाओं का ठीकरा उनके सिर पर फोड़ना एवं अपने आपको बहुत बड़ा विचारक एवं तार्किक मानना ही रह गया है। आइये! इसी सन्दर्भ में कुछ पन्ने मनुस्मृति के पलटने का प्रयास करें। यह माना जाता है कि शूद्रों को मनुस्मृति में नीच बताया गया है और उन्हें अस्पृश्य माना जाता है। शूद्र कहते किसको है पहले इसे जान लें। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य में कहीं भी शूद्र को नीच नहीं बताया गया है, न ही उसे अस्पृश्य माना गया है। समाज में प्रचलित कर्मों के अनुसार लोगों के व्यवसाय के विभाग किए गए हैं। पढ़ने–पढ़ाने की व्यवस्था जिन्होंने की, यज्ञ करने कराने का कार्य किया वे ब्राह्मण कहलाए, देश की रक्षा एवं विभिन्न राजकीय कार्यों को

करने वाले क्षत्रिय कहलाए, व्यापार, कृषि आदि करने वाले वैश्य कहलाए और जो पढ़ाने से भी पढ़ न सके, सिखाये से भी सीख न सके उन्हें इन तीनों वर्णों का सहायक, उनके छोटे-मोटे कार्य करने का काम दिया गया वे शूद्र कहलाए। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखते समय इस बात का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है कि वैदिक काल में यह व्यवस्था जन्मना न होकर कर्मों पर आधारित थी। बालक चाहे किसी भी कुल में उत्पन्न क्यों न हुआ हो उसके वर्ण का निर्णय उसके गुणों के आधार पर होता था। आज के समय की इस प्रचलित जाति-पाँति का उस समय में चिह्न तक भी न था। स्मरण रखना चाहिए कि यहाँ पर किसी को भी शिक्षा से वंचित नहीं किया गया अपितु उसे पूर्ण अवसर दिया गया कि वह शिक्षित हो द्विज बने। आर्य समाज के उच्च कोटि के विद्वान् श्री पं. शिव शर्माजी काव्यतीर्थ अपनी पुस्तक **'जाति निर्णय'** के पृष्ठ २४२ पर लिखते हैं, 'ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये चारों समाज के अंग हैं। दस्यु वा दास उपद्रवी पुरुष को कहते हैं। केवल वे आर्यों से पृथक् गिने गए हैं। परन्तु शूद्र समाज शरीर से चरणवत् पृथक् नहीं। **'तपसे शूद्र'** कठिन-कठिन कार्य सम्पादक को शूद्र कहते हैं। इन चारों का पठन-पाठन में शुभ कार्य में तुल्याधिकार है। वैदिक ज्ञान के रक्षार्थ प्राचीन लोगों ने जो उपाय किए थे उन्हें सुनिए। प्रथम नियम किया गया था कि मनुष्य मात्र विद्याध्ययन करें और उनका एक नाम द्विज रखा जाए। इस द्विज में विद्या के न्यूनाधिक के विचार से तीन भाग किए जाएँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और जो न पढ़े उनकी संज्ञा व्रात्य, असंस्कृत, वृषल, शूद्र आदि रखी जाए। जो पाँचवें वर्ष से लेकर सोलहवें वर्ष तक भी गुरुकुल में प्रविष्ट हो, व्रतादिधारण पूर्वक ४८वाँ ३६ वर्ष केवल विद्याध्ययन में लगाए वह द्विज ब्राह्मण कहला सकता है। जो सोलहवें वर्ष तक भी गुरुकुल में प्रविष्ट न हो सके अथवा होकर भी पूर्ण समय तक अध्ययन न कर पावे, यदि वह बाइसवें वर्ष तक भी गुरुकुल में प्रविष्ट होवे तो वह क्षत्रिय बन सकता है, ब्राह्मण नहीं। इसी प्रकार २२वें अथवा २४वें वर्ष में प्रविष्ट हो तो वह ब्राह्मण और क्षत्रिय पद को तो प्राप्त नहीं कर सकता किन्तु वह वैश्य बन सकता है। साथ-साथ एक यह भी नियम था कि जिसके माता-पिता अथवा वंश का अथवा वंश परम्परा अध्ययनव्रत के छूटने से शूद्र हो गई है वह यदि अपने सन्तान को विद्या पढ़ाना चाहता है तो नियमानुसार वह बालक ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य बन सकता है।'' इसमें गृह्यसूत्रों के अतिरिक्त मनुस्मृति का प्रमाण है-

गर्भोष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनायनम्।
गर्भेदेकादशे राज्ञो गर्भात्तु द्वादशे विशः।।
आषोडशाद् ब्राह्मणस्य सावित्री नातिवर्तते।
आद्वाविंशात् क्षत्रबन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः।।

(मनु. २/३६/३८)

पाठकगण! कृपया विचार कीजिए। आज के समय में जबकि तीन वर्ष के बालक को भी विद्यालय में प्रविष्ट करवा दिया जाता है और छः या सात या आठ वर्ष का होने पर भी जो विद्यालय नहीं जा पाता उसे लोग कहने लगते हैं कि यह क्या पढ़ेगा, वहीं पर जिस मनुस्मृति को लोग कोसते नहीं थकते वह तो चौबीस वर्ष तक भी विद्याध्ययन का अवसर देती है। अब जो २४वें वर्ष तक भी न पढ़े, उसको क्या कहें? विचार कर लो। इतना ही नहीं अपितु इससे भी आगे बढ़कर पुनः मनुजी कहते हैं।

शूद्रो ब्राह्मतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाजातमेवं तु विद्यावैश्यातथैव च।।

(मनुस्मृति)

अर्थात् जो शूद्र कुल में उत्पन्न हो के ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के समान गुण, कर्म और स्वभाव वाला हो वह शूद्र ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हो जाए वैसे जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ हो के ब्राह्मण या शूद्र के समान होने से ब्राह्मण और शूद्र भी हो जाता है अर्थात् चारों वर्णों में जिस-जिस वर्ण के सदृश जो-जो पुरुष वा स्त्री हो वह-वह उसी वर्ण में गिनी जाए। (सत्यार्थ. चतुर्थ.)

अब बतलाइये कि इससे बढ़कर भी कोई व्यवस्था मनुष्यों के लिए हो सकती है? पूरा जीवन एक खुला अवसर दिया जाता है उन्नति करने के लिए। आज तो एक निर्धारित आयु के उपरान्त सरकार भी सेवा लेने से मना कर देती है यहाँ तो ऐसा कोई बन्धन है ही नहीं। इतिहास में ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण हैं कि बड़ी आयु में भी अन्य वर्णों के व्यक्तियों ने ब्राह्मणादि वर्णों को उपर्युक्त व्यवस्थानुसार प्राप्त किया है। ऐतरेय ऋषि, जिनके नाम पर ऐतरेय ब्राह्मण एवं ऐतरेयोपनिषद् आदि उच्चकोटि के ग्रन्थ विद्यमान हैं और सर्वत्र उनकी प्रशंसा होती है। यहाँ तक कि ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार ही सम्पूर्ण ऋग्वेदीय श्रौत और गृह्यसूत्र हैं और इसी के अनुसार सारे वैदिक योग सम्पादित होते हैं, ये ऐतरेय दासीपुत्र थे। मही इनकी माता का नाम था, इनकी माता निम्न वर्ण की दासी थी। इसी कारण इसको इतरा भी कहते थे। ये इतने बड़े विद्वान् हुए हैं कि इनके बिना ऋग्वेद का तत्त्व ही नहीं खुलता।

कवष ऐलूष, जिन्हें यज्ञ से बाहर इसलिए निकाल दिया गया था कि वह आचरणों से बहुत भ्रष्ट था, दासी पुत्र था और जुआरी भी। इसके पश्चात् इसने अध्ययन किया और सम्पूर्ण ऋग्वेद का अध्ययन करने पर वेद के नवीन-नवीन विषयों पर रहस्य खोले। यह देखकर ऋषियों ने उसे बुलाया और यज्ञ का आचार्य भी बनाया।

सत्यकाम जाबाल जो एक वैश्या के पुत्र थे उन्होंने भी विद्याध्ययन से उच्च व ब्राह्मणपद को प्राप्त किया और विद्वानों में सत्कार पाया।

विश्वामित्र जो एक क्षत्रिय थे, अपनी साधना एवं तप के बल पर ब्राह्मण बने। आदि-आदि अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। मनुस्मृति में कहीं भी शूद्रों को नीच नहीं बताया गया है।

एकमेव व शूद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशत्।
एतेषामेव वर्णानां शूश्रुषामनसूयया।।

(मनु. १/९१)

अर्थात् जिस व्यक्ति को पढ़ाने से भी विद्या न आ सके और जो शरीर से पुष्ट हो उसके लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य की सेवा की ही आज्ञा है। यह कार्य उसे निन्दा से

रहित प्रीति से करना चाहिए। यही उसका कार्य है। यदि उसे अस्पृश्य माना जाता तो घर के अनेक कार्य भोजन का बनाना भी सम्मिलित है, करने के लिए क्यों कहा जाता? इसके अतिरिक्त (१०/६) में भी कहा गया है कि वह इन तीनों वर्णों की उत्तम सेवा से द्विज वर्ण को प्राप्त कर लेता है। (२/११२) में शूद्र को भी अन्य वर्णों द्वारा पूरा मान सम्मान दिए जाने का वर्णन है। अपितु अन्य वर्णों से भी पहले उसे मान सम्मान दिया जाना चाहिए।

आश्चर्य है कि उक्त श्लोकों की विद्यमानता में ये तथाकथित बुद्धिजीवी वर्तमान की जाति–पाँति का दोष मनुस्मृति के माथे पर मढ़ते हुए तनिक भी लज्जित नहीं होते और इस ग्रन्थ के जलाने तक के घृणित एवं ओछे कार्य भी कर डालते हैं। हम बलपूर्वक एवं घोषणापूर्वक कह सकते हैं कि इन्होंने कभी भी मनुस्मृति के दर्शन तक भी नहीं किए हैं उसको पढ़ना तो बहुत दूर की बात है। गुणी उसे कहा जाता है जो कि अन्यों के गुणों का भी ठीक–ठीक मूल्यांकन करें। केवल द्वेष की भावना से किसी के प्रति वैर बुद्धि रखने वाले को गुणी नहीं कहा जा सकता। **यह सदैव याद रखना चाहिए कि क्रूर से क्रूर अपराधी को भी न्यायाधीश पूर्णरूप से सुनता है, उसे अपना पक्ष रखने का अवसर दिया जाता है तो फिर ऋषियों के बारे में यह हठधर्मिता क्यों?** जब तक आप उन्हें पूरी तरह से पढ़ नहीं लेते उनके बारे में कोई भी निर्णय कैसे कर सकते हैं? हम यह बात बिल्कुल खुले मन से स्वीकार करते हैं कि वर्तमान सामाजिक प्रणाली में बहुत गम्भीर न्यूनताएँ हैं और जाति–पाँति एक भयंकर रूप धारण कर चुकी है जिसके कारण अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं। इसके लिए दोषी कौन है? क्या महर्षि मनु? कदापि नहीं। इसके लिए दोषी है हमारी वह दूषित एवं संकुचित विचारधारा, वह संकीर्ण दृष्टिकोण जो हमने अपने मन में पाल रखा है। इसके लिए दोषी हैं वे लोग जिन्होंने छूत–छात एवं ऊँच–नीच का भेदभाव उत्पन्न किया। अपनी अदूरदृष्टि के कारण जिन्होंने अपनों को ही अपने से दूर कर के अपना शत्रु बना डाला और आज अपना सिर धुन रहे हैं। अभी कुछ दिन पूर्व और आज भी कश्मीरी पण्डित अपने आपको सर्वश्रेष्ठ मानकर अपने ही भाइयों से घृणा करते रहे। उन्होंने ही विधर्मी बनकर उन पर भीषण अत्याचार किए और उन्हें अपना घर तक त्याग कर विस्थापित होना पड़ा। समझ फिर भी नहीं आ रही है। अन्त में हम यह कहना चाहते हैं कि जो दोष हैं, कुरीतियाँ हैं, अन्याय है उसका डटकर विरोध कीजिए और उन्हें ठीक कीजिए इसके लिए ऋषियों का अपमान मत कीजिए। उन्होंने जो व्यवस्थाएँ दी हैं वे पूर्ण शोध, एक बहुत बड़े परीक्षण, एक बहुत बड़े अनुसन्धान के उपरान्त पूर्णत: पक्षपात रहित होकर सबके हित को ध्यान में रख कर दी है। **यदि आपके अन्दर योग्यता है साहस है, क्षमता है तो बुराई को समाप्त करने के लिए संघर्ष कीजिए, ग्रन्थों का अपमान करने या उन्हें जलाने से क्या होता है?** ■

पाठक पाती

श्री सुखदेवजी शर्मा,
वैदिक संसार, बड़वानी
मान्यवर, सादर नमस्ते।

सर्वप्रथम वेद मन्तव्य व महर्षि दयानन्द जीवन दर्शन चित्र विशेषांक के चिर स्मरणीय प्रकाशन पर आपको अनेकश: बधाई। यह प्रकाशन आपके पौरुषार्थिक प्रयास का ज्वलन्त प्रमाण है। जन मानस को नव जागरण का सन्देश देता है। साथ ही श्रद्धेय ओमप्रकाश जी आर्य (आर्य समाज रावतभाटा, राजस्थान) की **'वैदिक ज्ञान विज्ञान'** के प्रति सूक्ष्मातिसूक्ष्म दृष्टि के दर्शन भी हुए हैं। वे भी बधाई के पात्र हैं।

मैं आप दोनों के प्रति यशस्वी व मंगल जीवन की कामना करता हूँ। आप दोनों ने इस पठनीय मार्गदर्शक विशेषांक के माध्यम से आर्य समाज को गौरवान्वित भारत में ही नहीं, विदेशों में भी किया है।

पुन: बधाई, साधुवाद, धन्यवाद।

राजेन्द्र व्यास
४१, शिवाजी पार्क, देवास रोड, उज्जैन
चलभाष : ९४२५४३०९१५

मान्यवर महोदय,
सादर नमस्ते।

ईश्वर कृपा से आप सपरिवार सानन्द होंगे। वैदिक संसार का महर्षि दयानन्द सरस्वती के २००वें जन्म शताब्दी पर प्रकाशित विशेषांक अनिर्वचनीय, अद्‌भुत, अप्रतिम, अलौकिक, अनोखा, अवर्णनीय, अप्रत्याशित, अनुपम, दिव्यलोक पठनीय, अतुलनीय, प्रेरणास्पद, प्रेरणादायक, सुगठित, सुव्यवस्थित, पठित सामग्री महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन से अनेक घटनाओं को चित्र रूप में अभिव्यक्त कर चित्रित कर वेदानुकूल जीवन की घटनाओं को लिखित में प्रदर्शित कर वैदिक जनता को महर्षि के जीवन से अनुभूत विचारों को लेखबद्ध किया है।

यह एक विशिष्ट प्रकार का जीवन दर्शन है, जिससे सामान्य आर्य जनता को अनुपम सामग्री मिलेगी। यह सम्पूर्ण कार्य विज्ञापन रहित है। वैदिकजनों को यह लिखित छाया चित्रित सामग्री ऋषि जीवन से हमें भी अपने जीवन में कुछ करने की प्रेरणा मिलेगी। आपका यह कार्य ऋषि के प्रति पूर्ण निष्ठा, अनुकरणीय, प्रशंसनीय, प्रेरणादायक है।

आपके लिए प्रभु से प्रार्थना है कि **जीवेम् शरदः शतम्, श्रृणुयाम शरदः शतम्, अदीना:स्याम शरदः शतम्। साभार'**

इति ओ३म् शम् ।।

विष्णुदेव आर्य
आर्य निलयम, प्रताप नगर, ब्यावरा, जिला अजमेर (राज.)

समसामयिक चिन्तन

धर्मात्माओं से डरें, अधर्मात्माओं से नहीं

राजेन्द्र व्यास

४१, शिवाजी पार्क, स्वामी सदन, उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष : ९४२५४३०९१५

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष–पुरुषार्थ चतुष्टय को जीवन में आत्मसात् करने व व्यवहार में प्रदर्शित करने वाले **'धर्मात्मा'** कहाते हैं। ऐसे सांस्कृतिक देव पुरुषों से व्यक्ति व व्यक्ति समुदाय 'डरे'। यहाँ डरे से अभिप्राय लज्जा व शर्म का अनुभव करना है अर्थात् ऐसे धर्मात्मा सन्त पुरुष के सम्मुख कोई निकृष्ट कार्य न करें। यदि जाने–अनजाने कोई अशोभनीय कार्य किसी के साथ हो गया है तो अन्तरात्मा की आवाज को सुनें– 'डूब मरने की बात है।' ऐसे श्रेष्ठि वर्ग के समक्ष आने का साहस नहीं होता है– उनके चरण स्पर्श की बात क्या कहें– उनके सामने नेत्र ऊपर उठाकर देखने की शक्ति भी न जाने कहाँ विलुप्त हो जाती है। जैसे ही श्रद्धेय सम्बन्धित का नाम पुकारते हैं– क्यों गजानन क्या बात है? आज कैसा व्यस्त बाना? गजानन का शरीर थर–थर काँपने लगता है, आँखों से आँसू टप–टप टपकने लगते हैं। एकाएक रुदन होने लगता है। श्रद्धेय को ज्ञात नहीं, क्या हुआ गजानन को? वे चिन्तित हो उठते हैं, कई प्रश्न उभर कर सामने आते हैं।

प्रबुद्ध पाठकों– लज्जा से मस्तक नत होना या ऐसा सोचना कि मेरे लिए डूब मरने की बात है– डर कहाता है। यह डर श्रद्धा का है, सम्मान का है। कैसे मैं अपने बड़ों के समक्ष अपना मुँह दिखाऊँ? विडम्बना है कि धर्मात्मा, सन्त–विद्वान् न डाँटते हैं न फटकारते हैं और न छड़ी लेकर प्रहार ही करते हैं परन्तु फिर भी डर– यह मनोविज्ञान है, उनकी अच्छाइयों का, शुद्धाचरण की सभ्यता, विद्वता, आत्मीयता पूर्ण सद्व्यवहार का इतना प्रभाव मानस पर है कि व्यक्ति या व्यक्ति समुदाय स्वाभाविक रूप से डरता है।

ऐसा डर–सम्मान की भावना धर्मात्माओं के प्रति होना ही चाहिए– ऐसी भावना हर व्यक्ति के मन–मस्तिष्क में रहे तो आदर्श पिता, आदर्श पुत्र– पुत्रियाँ, आदर्श परिवार, आदर्श समाज व आदर्श राष्ट्र के सुन्दर स्वरूप को बनने से कोई रोक नहीं सकता। इसी सन्दर्भ में वेद जिसे कल्याणी वाणी, ईश्वरीय वाणी कहा गया है, हमारा ध्यान आकर्षित करता है–

चतुरश्चिद् ददमानाद् विभीयादा निधातोः।
न दुरक्ताय स्पृहयेत्

–ऋग. १– मण्डल/४१–सूक्त/९वाँ मन्त्र

उक्त वेदमन्त्र का आशय है– चारों पुरुषार्थों को धारण करने वाले धर्मात्मा से मनुष्य डरे– जब तक पुरुषार्थ चतुष्ट्य छोड़ न दे तब तक कोई दुर्वचन (अपशब्द) कहने की इच्छा न करे। यह संकेत महत्त्वपूर्ण तथ्य को इंगित करता है कि हम बिना प्रमाण के किसी भी श्रद्धेय के प्रति अपशब्दों की बौछार न करें। यह हमारी सांस्कृतिक मर्यादा है, वैदिक निष्पक्ष चिन्तन हैं।

अधर्मात्माओं, पाखण्डियों, मिथ्याचारियों, असाधुओं से बिल्कुल नहीं डरे। राक्षसी प्रवृत्ति वालों से चाहे वे किसी भी मत, सम्प्रदाय, वर्ग, किसी भी क्षेत्र के हों, राजनैतिक– अराजनैतिक हों, जड़–मूल से समाप्त करने हेतु दृढ़ संकल्प के साथ सन्नद्ध व प्रतिबद्ध हों।

प्रश्न उपस्थित होता है, क्या अकेला व्यक्ति राष्ट्रद्रोहियों का सामना कर सकता है? कदापि नहीं– वेद कहता है–

'विश्वेभिः सखिभिः सह'– सब मिलकर सब सखाओं के साथ मित्रों के साथ वैदिक मण्डल बनाओ जो साहसपूर्ण कार्य करने में दक्ष हों। **'मन्युरसि मन्युं मे धेहि'** अर्थात् अन्याय और अत्याचार का डटकर मुकाबला करने वाला हो। दानवी प्रवृत्ति वाले लोगों से आज सब भयग्रस्त हैं क्योंकि ये हँसती, खिलखिलाती दुनिया को चन्द मिनटों में बर्बाद कर सकते हैं। इसलिए आवश्यक है– अपने–अपने क्षेत्र में ग्राम–ग्राम, नगर–नगर में साहसी पौरुषार्थिक जन समुदाय के नव जागरण संगठन बने, जिनमें सभी वर्ग के लोग सम्मिलित हों, सभी उम्र के। सन्त–महात्मा, विद्वान्, समाजसेवी, साहित्यकार, शिक्षक, युवा पीढ़ी हो। विकृतियाँ, बुराइयाँ सभी समाप्त हो पाएगी, ऐसा सोचना दिवास्वप्न है परन्तु अधिकांश राक्षस वृत्तियों पर अंकुश लगेगा। आवश्यकता है दृढ़ संकल्प की, शिव संकल्प की। नई पीढ़ी चौराहे पर खड़ी अपने मार्गदर्शकों से सन्तों–महात्माओं से जो व्यास पीठ पर आसीन हैं– पुकार–पुकार कर कह रही है कवि के शब्दों से–

इसीलिए खड़े रहे कि आप हमें पुकार लें,
पुकार कर दुलार लें, दुलार कर सुधार लें। ■

डॉ. रवि द्विवेदी
म.प्र. प्रान्त में प्रथम

डॉ. रवि द्विवेदी पुत्र एड. डॉ. व्यंकटाचार्य द्विवेदी माता स्व. कमला द्विवेदी निवासी ग्राम– रिमार, जिला– सतना (मप्र) आप प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सेल्हना जि. सतना में संविदा होम्योपैथिक चिकित्सा अधिकारी के रूप में पदस्थ हैं, म.प्र. लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित होकर चयन सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस सुयश के लिए डॉ. रवि ने माता–पिता एवं पूर्वजों का आशीर्वाद, बड़ी बहन प्रो. डॉ. ज्योत्सना, ज्येष्ठ भ्राता एड. ओम् द्विवेदी, होम्योपैथिक चिकित्सा गुरु स्व. डॉ. एस. सी. मिश्रा को दिया है। इस सुयश से होम्यौपैथी चिकित्सा जगत् में प्रसन्नता व्याप्त है।

कैसे होगा रामराज्य का सपना साकार? हम जा रहे किस ओर?

मोहनलाल दशोरा 'आर्य'
नारायणगढ़, जनपद : मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ९५७५७९८४१२

वसुधैव कुटुम्बकम् के स्थान पर वयम् कुटुम्बकम् भी नहीं। **सर्वे भवन्तु सुखिनः** के स्थान पर केवल अहं सुखी और **सत्यमेव जयते** के स्थान पर सदा असत्यमेव जयते ही दिखाई दे रहा है। कुछ अपवादों को छोड़ दें तो सारा भारत आर्यावर्त्त जो अब हिन्दोस्तान व इण्डिया के नाम से जाना जाता है। लगभग विपरीत दिशा में गमन कर रहा है। अर्थ-अर्थ-अर्थ के पीछे सब व्यर्थ हुआ जा रहा है। भौतिक चकाचौंध में सब अनर्थ हो रहा है। मस्तिष्क (दिमाग) के नीचे जैसे कुछ (हृदय) है ही नहीं। इन्द्रियों का जाल सारे शरीर को जकड़े हुए है- आत्मीयता, सिद्धान्त, अपनत्व व आत्मा का जैसे लोप हो गया है। शिक्षा में केवल जीविका उपार्जन का चित्र दिखाई देता है। संस्कार- संस्कृति, सभ्यता, सदाचार, सरलता, सेवा, सत्कार सहनशीलता, सहानुभूति की साधना घटती जा रही है। मानवता का अवमूल्यन इतना अधिक हो चुका है कि शिक्षा के नाम पर पैकेज पीढ़ी में रोबोट्स तैयार हो रहे हैं। संस्कृति और सभ्यता के विकास (आधुनिकीकरण) के नाम पर फेशनेबल अश्लील जीवन शैली बढ़ती जा रही है। लोग ईश्वर के स्थान पर इन्द्रियों की लालसा–वासना पूर्ति में लिप्त होते जा रहे हैं। हर श्रेणी के अपराधों का सूचकांक बढ़ता जा रहा है। पद, पैसा और प्रतिष्ठा (झूठी) के लिए व्यक्ति किसी भी सीमा तक जाने को उद्दत है। धर्म/सेवा/वतन/ मातृभूमि/ मानव सेवा, सत्य, अहिंसा, करुणा/ संविधान रक्षा/ मानवाधिकार/निष्ठा/ भक्ति केवल शास्त्रों की लिपि रह गई है। औपचारिकता/ प्रदर्शन और विज्ञापन में अग्रणी बनकर रह गए हैं। कुछ अपवादों, जिनके बल पर राष्ट्र, संस्कृति व धर्म जीवित है, को छोड़कर नेता-नायक, देश-धर्म- शासन के तथाकथित ठेकेदार, सन्त, साधु, अधिकारी, कारिन्दे, कर्णधार जो सेवा का, भक्ति का चोला पहन कर जनता का, धन का शोषण कर अवैध गतिविधियों में लिप्त होकर, राष्ट्र, धर्म व संस्कृति को खोखला करने में लगे हुए हैं। मानवता को पतन के गर्त में धकेल रहे हैं। ऐसी स्थिति में हमारा (राष्ट्र) का भविष्य क्या होगा? चिन्तन का विषय, पीड़ादायक ही है। विद्वान् कवियों ने भी अपनी पीड़ा अनेक स्थानों पर व्यक्त की है।

तुलसी- कलिमल ग्रसे ग्रन्थ सब,
लुप्त हुए सद् ग्रन्थ।
दंभिजन निज मत प्रकट करि
किये मतपन्थ।।

आज अनेकता में कितने मत-पन्थ, मजहब व देवी-देवता हो गए। तथाकथित हिन्दुओं की कितनी शाखाएँ हो गईं। विरोधाभास युक्त धर्म (कर्म काण्ड, कथा भागवत, तीर्थ, धर्मधाम व्यापार हो गए हैं।

आगे-

द्विज श्रुति बेचकर भूप प्रजासन।
नहि कोई मान निगम अनुशासन।
जाके नख और जटा विशाला।
सोई प्रसिद्ध तापस कलिकाला।।

अपवाद छोड़कर-

रंगीन वस्त्र धारण कर लो
दाढ़ी जटा, कण्ठी, माला।
गांजा, भांग भभूति, अकर्मण्य
बनकर समाज के सिरमौर रहो।
आज इनका कितना भार
समाज/ देश पर/बिना सेवा के।
साधना के बजाय साधनों में लिप्त हैं।

भविष्य का चित्रण भी कवि ने पहले ही कर दिया है-

धर्म भी होगा, कर्म भी होगा,
लेकिन शर्म नहीं होगा।
ड्रग, शराब, तम्बाकू, गांजा,
बहुत बड़ा धन्धा होगा।।
बात-बात में बेटा अपने बाप को
आँख दिखाएगा।
हँस चुगेगा दाना, दुनका
कौआ मोती खाएगा।।

आगे-

मंदिर मसजिद सूने होंगे,
भरी रहेगी मधुशाला।
पिता के संग में भरी सभा में
नाचेगी घर की बाला।।
जो होगा भोगी और लोभी,
वो योगी कहलाएगा।
हँस चुगेगा दाना, दुनका
कौवा मोती खाएगा।।

आज हम देख रहे हैं धर्म का उपदेश देने वाले अवैध कृत्य में लिप्त पाए गए। जेलों में नृत्य कर रहे। शराब सुलभ। पानी दुर्लभ। भूमाफिया, शराब माफिया, खनन माफिया, बार जिस्म माफिया हवाला, गबन, घोटाला करने वाले कई शातिर शक्तिशाली बनकर पुलिस प्रशासन के नाक में दम कर रहे हैं। कई जगह छापे पड़ रहे हैं। अकूत अवैध सम्पत्तियाँ पकड़ी जा रही हैं। भाषा और व्यवहार का पतन हो गया है।

कहा भी है-

राम के भक्त रहीम के बन्दे,
देख रहे इनके भी धन्धे।
कितने हैं मक्कार ये अन्धे
नाच रहे हैं होकर नंगे।।
इन्हीं की काली करतूतों से
हो गया मुल्क श्मशान।
कितना बदल गया इंसान
कैसा बन गया नर हैवान।।

आज न केवल भारत वरन् विश्व में संकट है असुरक्षित अशान्त है।

अवैध धन्धों (आतंक) की गिरफ्त में है। अन्जामे गुलिस्ता क्या होगा?

■

स्वास्थ्य विशेष

आँवला, सेब, बेल, अनन्नास व अंगूर से बनाए मुरब्बे स्वास्थ्य के लिए अनमोल

डॉ. श्वेतकेतु शर्मा 'आयुर्वेद शिरोमणि'
पूर्व सदस्य : हिन्दी सलाहकार समिति, भारत सरकार
१०/१२, केला बाग, सावित्री सदन, बरेली (उ.प्र.)
चलभाष : ७९०६१ ७८९१५

मुरब्बा फल से बनाया हुआ एक प्रकार का व्यंजन है। यह परम्परागत रूप से मीठा या शक्कर मुक्त भी हो सकता है। विशेष रूप से मुरब्बा फलों व गाजर, मूली, आँवला, अंगूर, गाजर, सेब, अदरक, अनन्नास, कच्चा आम, कच्चा बेल, नाशपाती, बेर से बनाया जाता है। यह भारत में काफी प्रचलित है। पोषक तत्वों और एण्टीऑक्सिडेण्ट से भरा मुरब्बा स्वास्थ्य की कई समस्याओं को दूर करता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने वाला होता है, मुरब्बा न केवल स्वाद में अच्छा होता है अपितु यह स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक है। यह शरीर को ऊर्जा देने वाला होता है। साथ ही मुरब्बा सदियों से यूनानी और आयुर्वेदिक चिकित्सा का अहम अंग भी रहा है।

यह कई तरह के रोगों में बहुत लाभप्रद होता है। यहाँ आँवला, सेब, बेल, अनन्नास व अंगूर इन पाँच फलों से बनाए गये मुरब्बे स्वास्थ्य के लिए अनमोल हैं का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत है :-

(१) आँवला- आँवले का मुरब्बा क्रोमियम, जिंक, विटामिन सी और ताम्बे का भण्डार होता है। पोषण की दृष्टि से ये तीनों घटक हमारे शरीर के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। यही कारण है कि यह हृदय के रोगों से कोसों दूर रखता है। इसका नियमित सेवन कोलेस्ट्रॉल स्तर को व्यवस्थित रखता है और ट्राइग्लिसराइड्स स्तर को कम करता है। आँवले का मुरब्बा शरीर को पोषण और ठण्डक देता है। इसके उपयोग से हॉर्मोन असन्तुलन के कारण बालों का झड़ना बन्द हो जाता है। इसमें भरपूर मात्रा में उपस्थित विटामिन सी शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

(क) हृदय के रोगों में लाभकारी- आँवले का मुरब्बा क्रोमियम, जिंक और ताम्बे का भण्डार होता है। हृदय रोगों से दूर रखता है।

इसका सेवन कोलेस्ट्रॉल को सीमित रखता है और ट्राइग्लिसराइड्स स्तर को कम करता है। यह रक्त वाहिकाओं की सूजन को भी ठीक करने सहायता करता है। इसमें प्राप्त क्रोमियम रक्त के कोलेस्ट्रॉल को सन्तुलित करता है।

(ख) मासिक धर्म की पीड़ा को करे कम- आँवले का मुरब्बा आयरन से भरपूर होता है। यह हीमोग्लोबिन के स्तर को बढ़ाने में सहायता करता है। महिलाओं में मासिक धर्म के समय अधिक रक्तस्राव को रोकने में सहायक होता है, जिससे उनके शरीर में लौहतत्व की कमी नहीं हो पाती है। लौहतत्व की इसी कमी को दूर करने के लिए आँवले का मुरब्बा सहायता करता है। यह मासिक धर्म में होने वाली पेट की ऐंठन को भी कम करता है।

(ग) पाचन तन्त्र में लाभकारी- आँवले का मुरब्बा पेट को सुदृढ़ रखने में सहायता करता है। यह पाचन क्रिया और यकृत के लिए अत्यन्त उपयोगी है। पेट में जलन और अपच को कम करता है। यह पाचनशक्ति को ठीक करता है।

(घ) गर्भवती महिलाओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि करे- आँवले का मुरब्बा एक अच्छा स्वास्थ्य प्रदाता है। यह पाचनतन्त्र को ठीक रखता है और भूख को बढ़ाता है। गर्भावस्था के दौरान यह गर्भवती महिलाओं के लिए ऊर्जा बूस्टर का काम करता है। यह गर्भवती महिलाओं और पेट में पल रहे भ्रूण को पर्याप्त ऊर्जा देता है। आँवले का मुरब्बा माँ और शिशु दोनों के लिए विटामिन-सी की पूर्ति करता है। गर्भावस्था और स्तनपान के समय इसे सीमित मात्रा में लेना चाहिए।

(ङ) शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है- आँवले का मुरब्बा प्रतिरोधक क्षमता को उत्तम बनाता है। आँवले में उपास्थित विटामिन सी एक दृढ़ एण्टी ऑक्सीडेण्ट के साथ एक एण्टीबैक्टीरियल भी है। जुकाम, ज्वार और ऊपरी श्वास नलिका में होने वाले संक्रमण से लड़ने की क्षमता प्रदान करता है।

(च) शरीर व चेहरे में लाभप्रद - आँवले का मुरब्बा विटामिन-सी का भण्डार होता है। विटामिन सी त्वचा के लिए अत्यन्त लाभदायक है। आँवले का मुरब्बा नियमित रूप से खाने से त्वचा ग्लो करने लगती है। यह त्वचा को प्राकृतिक रूप से उत्तम बनाता है। त्वचा के लिए आँवला एक प्राकृतिक बाहरी पतले भाग की तरह कार्य करता है। आँवले का मुरब्बा एण्टी-एस्ट्रिंजेण्ट गुणों के कारण त्वचा को ठण्डक देता है। इससे झुर्रियाँ नहीं आती। इसमें विटामिन सी के साथ विटामिन ए और विटामिन ई भरपूर मात्रा में होता है। विटामिन ए कोलेजन उत्पन्न करता है जो त्वचा को लोचदार

और शरीर को युवा बनाता है। यह मुख से काले धब्बे और मुँहासे के धब्बे हटाता है।

(छ) अल्सर के लिए वरदान- आँवले का मुरब्बा आँवले में उपस्थित फाइबर गैस्ट्राइटिस व गैस्ट्रिक समस्याएँ जैसे अल्सर, जलन और एसिड को ठीक करता है।

(ज) कब्ज में लाभदायक- आँवले का मुरब्बा कब्ज को दूर करने के लिए एक पारम्परिक उपाय है। यह स्वादिष्ट होता है और कब्ज को दूर करता है। आँवले का मुरब्बा खाने के बाद दूध का सेवन पुरानी कब्ज को ठीक करता है।

(झ) आन्तरिक अंगों की सूजन में लाभकारी- आँवले का मुरब्बा शरीर के आन्तरिक अंगों की सूजन को कम करता है। इसमें अग्न्याशय और हेपेटाइटिस जैसे रोग सम्मिलित हैं। यह अग्न्याशय की सूजन को कम करता है और यकृत को सही ढंग से काम करने में सहायता करता है।

(२) सेब - सेब में प्रोटीन, कैल्शियम, आयरन, मैग्नीशियम, पोटैशियम, विटामिन सी और विटामिन ए पाए जाते हैं। साथ ही इसमें सोडियम और जिंक भी पाया जाता है। सेब का मुरब्बा खाने से अस्थियों की सूजन, गठिया और मस्तिष्क और हृदय रोगों की समस्याओं में भी बहुत लाभ मिलता है। साथ ही इससे तनाव और चिन्ता के समाधान में भी लाभ प्राप्त होता है। सेब का मुरब्बा खाने से कब्ज की समस्या भी ठीक होती है। इसमें फाइबर की भरपूर मात्रा पाई जाती है। मानसिक कठिनाई में सेब के मुरब्बे का सेवन लाभकारी होता है। इससे स्ट्रेस को कम करने में सहायता प्राप्त होती है। यह मन को शान्त कर अच्छी नींद लाने में भी सहायक माना जाता है। यह बहुत स्वस्थ और नरम होता है। उच्च रक्तचाप जैसे रोगों में भी सेब का मुरब्बा अत्यधिक लाभदायक है।सेब का मुरब्बा हृदय मांसपेशियों को दृढ़ बनाता है, जिससे रक्तचाप के लक्षणों को कम करने में सहायता प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त सेब के मुरब्बे में पोटैशियम भी भरपूर मात्रा में पाया जाता है, जो उच्च रक्तचाप को कम करने में सहायक है। सेब का मुरब्बा सेवन करने से कोलेस्ट्रोल कम करने में सहायता मिलती है, हाई कोलेस्ट्रोल की समस्याओं में सेब के मुरब्बे से लाभ मिल सकता है। इससे घबराहट, अशक्तता और विचलितता में लाभ होता है।

(३) बेल- बेल का मुरब्बा भी विटामिन सी, कैल्शियम, फाइबर, प्रोटीन और आयरन जैसे पोषक तत्वों से भरपूर होता है। इसी कारण से स्वास्थ्य के लिए यह अत्यन्त लाभप्रद होता है। बेल का मुरब्बा सेवन करने से रोग प्रतिरोधक क्षमता तो बढ़ती ही है, साथ ही पाचनतन्त्र भी व्यवस्थित रहता है। जिससे अपच और कब्ज़ जैसी समस्याओं से मुक्ति मिलती है।बेल का मुरब्बा खाने से डायबिटीज, कोलेस्ट्रॉल और भार को कम करने में सहायता प्राप्त होती है।

(४) अनन्नास का मुरब्बा- अनन्नास के मुरब्बे में विटामिन सी, विटामिन बी-६, मैग्नीशियम, राइबोफ्लेविन, ताम्बा, लौहतत्व, पोटैशियम भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं, जो अस्थियों को सुदृढ़ बनाने में सहायता करते हैं। अशक्त अस्थियों की समस्या में अनन्नास का मुरब्बा लाभ प्रदान करता हैं। अनन्नास को विटामिन सी का अच्छा स्रोत माना जाता है, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को दृढ़ बनाने में सहायता कर सकता है। अनन्नास में मिनरल्स और पोषकता के गुण भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं जो अस्थियों को दृढ़ बनाने सहायता कर सकते हैं। भार घटाने के लिए अनन्नास रस अत्यन्त लाभप्रद होता है। अनन्नास में कैलोरी की मात्रा कम होती है, जो भार घटाने में सहायता करती है। अस्थमा के लिए भी लाभदायक है। अनन्नास के मुरब्बे में एण्टीइंफ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो श्वास मार्ग की सूजन को कम करके अस्थमा के लक्षणों से राहत दे सकते हैं।

(५) अंगूर का मुरब्बा - अंगूर के मुरब्बे में विटामिन ए, सी, बी-६, फोलेट के अलावा कई प्रकार के मिनरल्स जैसे पोटैशियम, कैल्शियम, लौहतत्व, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम और सेलेनियम भी पाए जाते हैं। अंगूर के मुरब्बे में बीटा कैरोटीन, विटामिन ई, सेलेनियम हृदय रोग में सुरक्षा प्रदान करते हैं। यह नेत्र विकारों में भी सहायक है। इसमें लौहतत्व प्रचुर मात्रा में पाया जाता हैं। इसके सेवन से शरीर में हीमोग्लोबिन का स्तर नियन्त्रित रहता है।

विशेष ध्यानाकर्षण : आँवला, सेब, बेल, अनन्नास व अंगूर इन पांच फलों से बनाए गये मुरब्बे स्वास्थ्य के लिए अनमोल स्वास्थ्य विश्लेषण ज्ञानार्जन व आयुर्वेद वनौषधियों की जानकारी के लिए प्रस्तुत है, इसका प्रयोग करने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से परामर्श अवश्य करना चाहिए। ■

वैदिक संसार

वै वैदिक धर्म विश्व में मानव जाति, प्राणीमात्र का कल्याण।
दि दिवस रजनी सबकी रक्षा, ईश हर कृति में संचालित प्राण।
क कर्तव्य बोध महर्षि दयानन्द सरस्वती, सिखा गए सत्यार्थ प्रकाश।
सं संयम के दस नियम जीवन में उतार, हो जीवन में उजास।।
सा सारे जीवन पढ़ वेद, मत भटक संस्कृति संस्कारों में परिष्कार।
र रग–रग में सद्विचार भर ले, निश्चित तेरा उद्धार।।

वै वैद्य पन्थ आर्य सनातन संस्कृति, सभी की आत्मा का उद्धार।
दि दिशाओं सब में गूँज रहा आर्य समाज, महर्षि बता गए सार।।
क कर्तव्य कर मनुज हो निष्काम, संस्कार सोलह से परिष्कार।
सं संसार में ऋषि दयानन्द सा, अब न होगा देख लो कर विचार।।
सा सामाजिक समरसता के जनक थे, सद्गुरु विरजानन्द दण्डी अपार।
र रम तू सत्कर्म में, विकारों से बच, तू समय निकाल पढ़ वैदिक संसार।।

वै वैर भाव त्याग जगत् से, एक दिन धरा धाम छूट जाएगा।
दि दिन–रात स्वार्थ में फँसा मनुज तू आवागमन के चक्र में फँस जाएगा।
क करनी का फल छूटता नहीं, चंद दिनों की जिन्दगी फिर पछताएगा।
सं संतों ने समझा दिया, ऋषि दयानन्द सरस्वती बता गए जिसे वेद भाएगा।।
सा सार जीवन का आत्मतत्व वैदिक धर्म से, पंच महायज्ञ ही सुख दिलाएगा।
र राजा परम् को भज ओ३म् निराकार से ही भव पार 'सुन्दर' हो जाएगा।।

सुन्दरलाल प्रहलाद चौधरी
अधीक्षक : पोस्ट मैट्रिक अ.जा. बालक छात्रावास बुरहानपुर (म.प्र.), चलभाष : ९१२६७६११४३

पृष्ठ ८ का शेष भाग...

हरिकिशन का मृत शरीर परिवार वालों को नहीं दिया गया, जेल परिसर में ही संस्कार जेल वालों ने ही किया। अस्थियों को नदी के बीच धारा में बहा दिया गया। तत्पश्चात् हरिकिशन के पिता को गिरफ्तार कर और जेल की यातनाओं के चलते हरिकिशन की फाँसी के सत्ताइस दिन बाद उन्होंने भी दम तोड़ दिया। हरिकिशन का छोटा भाई भगतराम भी देश-भक्त निकला, जिसने सुभाषचन्द्र बोस को रहमत अली के नाम से साथ देकर अफगानिस्तान होते हुए जर्मनी पहुँचाया था।

बत्तीस वर्ष पूर्व घटी इस घटना का स्मरण करते हुए राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने ऑल इंडिया सिक्ख फेडरेशन के एक शिष्ट मण्डल को कहा- "यह बात २३ दिसम्बर १९३० की है। जब वे पंजाब विश्वविद्यालय में दीक्षान्त भाषण देने के लिए गए थे, जहाँ हरिकिशन ने गवर्नर पर गोलियाँ चलाईं और मुझे घायल कर देने का खतरा उसने नहीं उठाया था। यह समाचार इण्डियन एक्सप्रेस के बीस दिसम्बर १९६३ के अंक में छपा था। शहीद हरिकिशन की शान में पंक्तियाँ-

'इन्कलाब हो हमारा, इन्कलाब की जय हो।
फिरंगी-साम्राज्यवाद का भारत की धरती से क्षय हो।।
हँसता-गाता आजादी का नया सवेरा आये।
विजय-केतु अपनी धरती पर अपना ही फहराये।।
मरते-मरते भी यही भाव प्रज्ज्वलित रहा,
अभियान मुक्ति का किसी मूल्य पर रुके नहीं।
बलिदान बड़े से बड़ा लगे हमको नगण्य,
अभियान हमारा किसी दमन से झुके नहीं।।
जय भारती।।

गणस्वामी

कोटि सूर्य सी वेद पताका
भूमण्डल दमकती,
दुरित हरो और भद्र भरो हे
गणस्वामी गणपति।

हे सर्वज्ञ शक्तिशाली
तू जग के कण–कण में
गगन पवन जल पावक भूतल
सृजन विसर्जन में
नित्य नए तव रूप दिखाती
प्रकृति त्रिगुणवती।।

योग मार्ग से युक्त खिली है
अन्त:कमल कली
भाव भक्ति सन्ध्या उपासना
आत्मा प्रेम पली
प्राणेश्वर की परम प्रतीक्षा
कह प्रिय प्रिय पुलकती।।

सुर मुनिजन नरपुंगव गावे
पावें ऋषि विभु को
दिव्य देव देवाधिदेव उस
महादेव प्रभु को
विधि हरिहर गणपति संग ध्यावे
सरस्वती भगवती।।

अशरण शरण निर्बलों के बल
पावक पावनतम
कंकर को भी शंकर कर दो
सत् शिव सुन्दरतम
दयानन्द सी दिव्य दया हो
सब पर जगत्पति।।

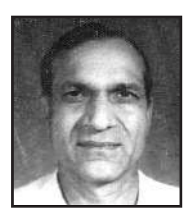

आर्य रमेश चौहान
आर्य समाज, २६२–ए, पार्श्वनाथ नगर, इन्दौर (म.प्र.)
चलभाष : ९८२६०३१३४९

हे प्रभु! एक दयानन्द और भेजो

दयानन्द को भारत में फिर से
आने की आवश्यकता है
आर्यजन हो रहे मृतप्राय: इनमें
प्राण फूँकने की आवश्यकता है
श्रद्धानन्द, लेखराम जैसा
नहीं रहा है उत्साह किसी में
फिर से उत्साह दिलाने की
आवश्यकता है अब देखो इनमें
विवादों में फँस रहे आपस में,
ध्यान नहीं है देश समाज का
एक घण्टे भी समाज में
आने का मन नहीं करता इनका
गिरती जा रही स्थिति समाजों की
चिन्तन की आवश्यकता है
दयानन्द को फिर आकर अन्धकार की
छाया हटाने की आवश्यकता है
समाजों में जो लगन थी,
उमंग थी अब रही नहीं है
संगठन का बिगुल मिलकर
फिर से बजाने की आवश्यकता है
आर्य समाजियों में उत्साह था
उमंग थी समाप्त हो रही है
मिलाकर सीने से सीना, आर्यों को
शिखर चढ़ने की आवश्यकता है
बजती थी सभी के हृदय में वेद वीणा,
फिर से बजाने की आवश्यकता है
ऋषि का पूरा हो स्वप्न, सभी को
साहस दिखाने की आवश्यकता है
पहले सदस्यों को सत्संग भवन में
बैठने का स्थान नहीं मिलता था
आज खाली रहते हैं भवन,
मिलकर इन्हें भरने की आवश्यकता है।

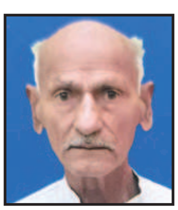

राजेन्द्र बाबू गुप्त

प्रधान, आर्य समाज दयानन्द मार्ग, रतलाम
चलभाष : ९०३९५१०७०९

पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश

पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश, जब भी मिले तुम्हें अवकाश,
यह है मन के मैलों को साफ करने की एक उत्तम साबुन
रखो इसके ऊपर निर्भ्रम पूर्ण विश्वास, पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश...।।१।।

अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड और भ्रम,
दुर्गुण, दुर्व्यसन, इसके पढ़ने से पड़ जाते हैं नर्म,
है यह संजीवनी बूटी, रखो सदा अपने पास, पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश...।।२।।

है यह महर्षि दयानन्द कृत, चारों वेदों का सार,
लिखी इसमें जीवन उन्नत बनाने की सभी सामग्री,
और सभी महत्वपूर्ण बातें जो हैं खास-खास, पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश...।।३।।

महर्षि ने लिखा इसे, करने मानव-मात्र का हित,
पढ़ो और इसके अनुसार चलो, कभी न होगा तुम्हारा अहित,
बन जाओगे तुम इतने महान्, जितना महान् आकाश, पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश...।।४।।

जीवन की परीक्षा में, यदि होना है तुम्हें पास,
परिवार तुम्हारा सुखी बने, न आवे कभी खटास,
तो इसको पढ़ने का, कभी न छोड़ो अभ्यास, पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश...।।५।।

इसके पढ़ने से, बनेगा तुम्हारा जीवन सुखी और पवित्र,
स्वास्थ्य, सुबुद्धि, यश, सम्पन्नता बनेंगे तुम्हारे मित्र,
कभी न पढ़ने से, कोई क्रिया छूट गई, ऐसा हो आभास, पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश...।।६।।

यह ग्रन्थ अमूल्य है, लिखे इसमें मुक्ति पाने के सभी मार्ग और नाम,
यदि धर्म के अर्थ और काम किया तो मिलेगा निश्चित ही मोक्ष धाम
इसकी शिक्षाओं से बढ़ते ही जाओगे, न होगा कभी भी ह्रास, पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश...।।७।।

गुरुदत्त, श्रद्धानन्द, बिस्मिल ने पढ़ा था सत्यार्थ प्रकाश,
महात्मा नारायण स्वामी ने किया प्रतिबन्ध हटवाने का सद्प्रयास,
जीवन उनका बदल गया, बन गये उसी के दास, पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश...।।८।।

यह सद्ज्ञान का पुंज है, करता सत्य का ही प्रकाश,
इस अलौकिक ग्रन्थ को, पढ़ने की लगी रहे तुम्हें प्यास,
सबको पढ़ने की लगन लगी ऐ 'खुशहाल' रखता है यही आस, पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश...।।९।।

खुशहालचन्द्र आर्य

द्वारा- गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गान्धी मार्ग, कोलकाता
चलभाष : ९८३०१३५७९४

जीवन दर्शन है पुरुषार्थ चतुष्टय

डॉ. श्वेतकेतु शर्मा 'आयुर्वेद शिरोमणि'
पूर्व सदस्य : हिन्दी सलाहकार समिति, भारत सरकार
१०/१२, केला बाग, सावित्री सदन, बरेली (उ.प्र.)
चलभाष : ७९०६१ ७८९१५

पुरुषार्थ एक संस्कृत शब्द है जो मनुष्य के जीवन में प्रयास, पूर्णता और सफलता की ओर दिशा दर्शाता है।

धर्मार्थ काम मोक्षाणां आरोग्यं मूलमुत्तमम्।
रोगास्तस्यापहर्तारः श्रेयशो जीवितस्य च।।

धर्म,अर्थ,काम और मोक्ष का मूल उत्तम आरोग्य ही है। पुरुषार्थ का शब्दार्थ होता है **'पुरुष का अर्थ'** अर्थात् जो व्यक्ति के संघर्षो और प्रयत्नों का उद्देश्य है। मानव जीवन में पुरुषार्थ का महत्व बहुत अधिक होता है, मानव के लक्ष्य या उद्देश्य से है **'पुरुषैर्थ्यते इति पुरुषार्थः'** ,पुरुषार्थ = पुरुष+अर्थ =पुरुष का तात्पर्य विवेक सम्पन्न मनुष्य से है अर्थात् विवेकशील मनुष्यों के लक्ष्यों की प्राप्ति ही पुरुषार्थ है। प्रायः मनुष्य के लिए वेदों में चार पुरुषार्थों का नाम लिया गया है-धर्म अर्थ काम मोक्ष, इसलिए इन्हें **'पुरुषार्थ चतुष्टय'** भी कहते हैं। महर्षि मनु पुरुषार्थ चतुष्टय के प्रतिपादक हैं। चार्वाक दर्शन केवल दो ही पुरुषार्थ को मान्यता देता है- अर्थ और काम। वह धर्म और मोक्ष को नहीं मानता। महर्षि वात्स्यायन भी मनु के पुरुषार्थ-चतुष्टय के समर्थक हैं किन्तु वे मोक्ष तथा परलोक की अपेक्षा धर्म, अर्थ, काम पर आधारित सांसारिक जीवन को सर्वोपरि मानते हैं। योग वसिष्ठ के अनुसार सद्जनों और शास्त्र के उपदेश अनुसार चित्त का विचरण ही पुरुषार्थ कहलाता है। भारतीय संस्कृति में इन चारों पुरूषार्थों का विशिष्ट स्थान रहा है। पुरुषार्थ चतुष्टय का सिद्धान्त भारतीय संस्कृति की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। इस सिद्धान्त की संरचना भारत के ऋषि-मुनियों और विद्वज्जनों ने मानव-जीवन के आध्यात्मिक पक्ष को दृष्टि में रखकर की थी। वस्तुतः प्राचीन काल के भारतीय विचारकों ने मनुष्य के जीवन को आध्यात्मिक, भौतिक और नैतिक दृष्टि से उन्नत करने के निमित्त पुरुषार्थ की योजना की थी। जीवन में भौतिक सुख के साथ-साथ आध्यात्मिक सुख भी महत्त्वपूर्ण माना गया है। वस्तुतः भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों जीवन परस्पर सम्बद्ध हैं। धर्म अर्थ काम ये तीनों पुरुषार्थ को अच्छी तरह कर लेने से ही मोक्ष की प्राप्ति सहज हो जाती है। भगवत गीता में कहा है कि मानव जीवन का सबसे बड़ा पुरुषार्थ सकारात्मक कर्म है। धर्म की रक्षा के साथ धर्माचरण व सद्विचारों के माध्यम से जीवन को सुखमय व सार्थक बनाया जाना ही पुरुषार्थ है पुरुषार्थ करना है फिर उसे ईश्वर को अर्पण करना। **मयैवेते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन** जब हम पुरुषार्थ से किए गए कर्म प्रभु को अर्पित करते हैं तो वह हमें निमित्त बनाकर कार्य करने लगते हैं। हमारा बुद्धि-बल सीमित है, पर जब ईश्वर हमें अपना यन्त्र बना लेते हैं तो हमारी क्षमताएं असीमित हो जाती हैं। अभी भी हमारा अस्तित्व है, हम यन्त्र हैं और ईश्वर चालक है। इसके बाद अगला सोपान आता है जब हम सारा प्रयत्न कर चुके होते हैं और अपनी क्षुद्रता को पहचान लेते हैं तब ईश्वर के समक्ष पूर्ण समर्पण कर देते हैं। पुरुषार्थ पर वेद या श्रुति कहती है -

कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः।
उत्तिष्ठंस्त्रेता भवति कृतं संपद्यते। चरैवैति चरैवैति।।

वेद शास्त्रों में जीवन के चार पुरुषार्थ माने गए हैं। ये हैं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। सृष्टि के नियमों के अनुसार चलना धर्म है। परिश्रम एवं सच्चाई से श्रम कर धन कमाना अर्थ है। कार्य में लगातार लगे रहना, ऊर्जा का संचय करना तथा पितृऋण से मुक्ति पाने के लिए सन्तान उत्पन्न करना काम है। दुःखों से छुटकारा, आवागमन से मुक्ति तथा अनन्त काल तक ईश्वर के आनन्द में घूमते रहना मोक्ष कहलाता है। ये चारों ही पुरुषार्थों के लिए श्रम करना होता है। इसी सन्दर्भ में पुरुषार्थ चतुष्टय को अलग-अलग भी समझना आवश्यक हैः-

(१) धर्म- धर्म पुरुषार्थ का महत्वपूर्ण प्रकार हैं। धर्म व्यक्ति का मार्गदर्शन करता हैं, वह व्यक्ति को विवेक और तर्क बुद्धि प्रदान करता हैं।धर्म वही है जिसे धारण किया जा सके, जिसके अनुकूल आचरण किया जा सके। पुरुषार्थ के रूप में धर्म के सामाजिक पक्ष पर जोर दिया गया हैं। अतः धर्म वह कड़ी है जो मानव जीवन के सांसारिक पक्ष को आध्यात्मिक पक्ष के साथ संयुक्त करती है, जिससे एक स्तर पर मनुष्य सभी कर्मों से तृप्ति तथा इच्छाओं का नाश करके जीवन मुक्ति की अवस्था में पहुँच जाता है और महाशक्ति से उसका महामिलन हो जाता है। यही स्थिति मोक्ष है। यही पुरुषार्थ की अवधारणा का आधार है।

(२) अर्थ- अर्थ व्यक्ति के जीवन का दूसरा प्रमुख पुरूषार्थ है।अर्थ का शाब्दिक अभिप्राय वस्तु, चीज, पदार्थ है। अतः समस्त सांसारिक भौतिक वस्तुएं अर्थ के दायरे में आती हैं। वैसे, तात्पर्य धन-सम्पदा के साथ-साथ भौतिक वस्तुओं एवं भौतिक साधनों से हैं, जो मनुष्य सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति एवं सुख प्रदान करने में सहायक होती हैं। भौतिक संसार में जीवन-यापन के लिए अर्थ की बहुत आवश्यकता होती है, पारिवारिक जीवन के संचालन, सामाजिक कार्यों में सहभागिता एवं धर्म-कर्म के कार्यों तथा भौतिक सुख-सुविधाओं की पूर्ति आदि के लिए अर्थ की आवश्यकता होती है। भारतीय हिन्दू धर्मशास्त्र धर्मोचित विधान से अर्थाजन की अनुमति प्रदान करता हैं अर्थात् समस्त भौतिक वस्तुओं और धन-सम्पदा का अर्जन धर्मानुसार सद्मार्ग से करना चाहिए तभी जीवन के अन्तिम लक्ष्य मोक्ष की ओर बढ़ा जा सकता है। मनु ने कहा कि अर्थ यदि धर्मानुसार न हो तो उसे त्याग देना

चाहिए। महाभारत में सर्वोच्च धर्म, अर्थ को कहा गया है, क्योंकि सभी सांसारिक वस्तुएं एवं सुख सुविधाएं अर्थ पर निर्भर हैं किन्तु शास्त्र धर्म की निहित परिभाषा के दायरे में अर्थोपार्जन करने का निर्देश देते हैं। इसीलिए सुख के लिए प्रयास करना व्यक्ति की स्वाभाविक इच्छा है, किन्तु यदि वह मोक्ष की कामना करता है, तो उसे सद्मार्ग या सही तरीके से अर्थाजन करना चाहिए।

(३) काम– तीसरा पुरुषार्थ काम जो मानव जीवन का मूल उद्देश्य है को इच्छा, लालसा और आनन्द के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसमें से यौन सुख को किसी व्यक्ति की भलाई के लिए आवश्यक माना जाता है। पौराणिक कथाओं में, काम को देवता कामदेव या मन्मथ के रूप में दर्शाया गया है, और कुछ पुराणों में उन्हें ब्रह्मा के पुत्र के रूप में चित्रित किया गया है, जिनके पाँच तीर इच्छा के पाँच प्रभावों को इंगित करते हैं - आकर्षण या अनाकर्षण, जिसके बाद अशान्ति, जलन, शुष्कता और विनाश होता है। काम ब्रह्माण्डीय और मानवीय ऊर्जा दोनों है, जो जीवन को जीवन्त बनाती है और उसे अपनी जगह पर बनाए रखती है। यदि धर्म दूसरे के लिए एक कर्तव्य है, तो काम स्वयं के लिए एक कर्तव्य है। यह प्रेम, विवाह, परिवार, व्यभिचार और ईर्ष्या पर नया प्रकाश डालता है क्योंकि यह इन प्रश्नों से जूझता है- दूसरों या स्वयं को हानि पहुँचाए बिना इच्छा का पोषण कैसे करें? क्या कामुक और तपस्वी मानव स्वभाव के दो परस्पर जुड़े हुए पहलू हैं। काम रोमांटिक प्रेम और भक्ति, ईश्वर के प्रेम के बीच क्या सम्बन्ध है।

(४) मोक्ष– मोक्ष का अर्थ है आत्मा द्वारा अपना और परमात्मा का दर्शन करना। आत्मा को मोक्ष भगवान् की कृपा से प्राप्त होता है। भगवान् की कृपा उन्ही आत्माओं पर होती है जिन्होंने शरीर में रहते हुए अच्छे कर्म किए हों। मोक्ष प्राप्ति के लिए मनुष्य को अष्टांग योग भी अपनाना चाहिए। मोक्ष एक ऐसी दशा है जिसे मनोदशा नहीं कह सकते। इस दशा में न मृत्यु का भय होता है न संसार की कोई चिन्ता, सिर्फ परम आनन्द। परम चेतना। परम शक्तिशाली होने का अनुभव। मोक्ष समयातीत है जिसे समाधि कहा जाता है। मोक्ष का अर्थ सिर्फ जन्म और मरण के बन्धन से मुक्त हो जाना ही नहीं है। बहुत से भूत और देव आत्माएं हैं जो हजारों या सैकड़ों वर्षो तक जन्म नहीं लेती लेकिन उनमें वह सभी वृत्तियाँ विद्यमान रहती है जो मानव में होती है। भूख-प्यास, सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म, न्याय-अन्याय आदि। सिद्धि प्राप्त करना मोक्ष या समाधि प्राप्त करना नहीं है। यह ईश्वर से साक्षात्कार करना भी नहीं है। ध्यान को छोड़कर संसार में अभी तक ऐसा कोई मार्ग नहीं खोजा गया जिससे समाधि या मोक्ष पाया जा सके। लोग भक्ति की बात जरूर करते हैं लेकिन भक्ति भी ध्यान का एक प्रकार है। अब प्रश्न यह उठता है कि कौन सी और किसकी भक्ति? यह खोजना आवश्यक है। गीता में जिन मार्गो की चर्चा की गई है वह सभी मार्ग साक्षित्व ध्यान तक ले जाकर छोड़ देते हैं। मोक्ष में योग के सभी आसन ध्यान लगाने से प्राप्त कर सकते हैं। यही पुरुषार्थ जीवन का पुरूषार्थ चतुष्टय है। ■

निर्माणाधीन आर्य समाज वेद मन्दिर हेतु दान की अपील

हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि आर्य समाज बांगरमऊ, जनपद उन्नाव, उ.प्र. द्वारा आर्य समाज के नाम क्रय की गई लगभग १२०० वर्गफीट भूमि पर आर्य समाज वेद मन्दिर का निर्माण कार्य दिनांक ९.५.२०२४ से प्रारम्भ हो चुका है। उक्त भूमि के प्रथम खण्ड में सत्संग भवन, द्वितीय खण्ड पर यज्ञशाला एवं महर्षि दयानन्द वैदिक पुस्तकालय तथा तृतीय खण्ड पर अतिथि शाला का निर्माण सर्वसम्मति से होना निश्चित हुआ है जिसमें लगभग ४० लाख रु. लागत का अनुमान है।

अत: आर्य जगत् के धर्मप्रेमी दानवीरों, माताओं–बहनों से सानुरोध निवेदन है कि इस रचनात्मक कार्य में अधिक से अधिक दान देने की कृपा करें। अपनी दान राशि आर्य समाज के खाता सं. ७३१२२१०११०००८७८१ IFSC Code BKID0007312 बैंक ऑफ इण्डिया शाखा बांगरमऊ के नाम प्रेषित करें अथवा आर्य समाज बांगरमऊ के नाम चेक/ड्राफ्ट/नकद दान राशि देकर सहयोग करें। यदि आप अपने परिजनों की पुण्य स्मृति में किसी खण्ड का निर्माण कराना चाहते हैं अथवा भवन निर्माण सामग्री देना चाहते हैं तो निम्न मोबाइल नंबरों पर सम्पर्क करें। दानदाता का नाम, पता शिलालेख पर अंकित कराया जाएगा तथा आर्य समाज बांगरमऊ आपका सदैव आभारी रहेगा।

प्रधान : रामगोपाल आर्य (८१८१८१५४०३, ८१७२८५३६१७
मन्त्री : सुशील कुमार आर्य (८८८७६२३९१२
कोषाध्यक्ष : रामस्वरूप आर्य (९४५०८४१२७३)

देव दयानन्द की कृपा से बेटियाँ परचम फहरा रही हैं

जिस नारी को शूद्र, नर्क का द्वार, पांव की जूती आदि न जाने कितने विशेषण देकर हेय और शोषण उत्पीड़न का अधिकारी बना कर उनके शिक्षा-दीक्षा, प्रगति के समस्त द्वार बन्द कर दिए गए थे, उस मातृशक्ति के जीवन में देव दयानन्द की कृपा से शिक्षा-दीक्षा ही नहीं परमपिता परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद की ज्ञाता विद्वान् बनने का अद्भुत क्रान्तिकारी परिवर्तन सम्भव हुआ और आज बेटियाँ प्रत्येक क्षेत्र में परचम फहरा रही है। ऋषि दयानन्द भक्त भाई पुरुषोत्तम जी आर्य निवासी सूरत गुजरात की दोहित्री (नातिन) कु. माही बोहरा सुपुत्री कौशल कुमार बोघरा एवं श्रीमती राधा बोघरा निवासी मणिनगर, कर्णवती (अहमदाबाद) के द्वारा गुजरात शिक्षा बोर्ड से बारहवीं की परीक्षा 99.33 अंक प्राप्त कर एक उच्च कीर्तिमान बनाया है। बेटी माही के द्वारा यह विशिष्ट उपलब्धि अर्जित करने पर वैदिक संसार परिवार इन्दौर की ओर से बेटी माही और समस्त परिजनों को हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ तथा बेटी माही के उज्वल भविष्य हेतु शुभाशीष व अनन्त शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

सुखदेव शर्मा *(प्रकाशक : वैदिक संसार)*

सम्बन्ध

गोपीदास रामावत

कंकूविजय भवन, जनता कॉलोनी, पाली (राज.)
चलभाष : ८००५८३५०१०

सम्बन्ध/संबन्ध/संबंध=संयोजन अर्थात् सम्यक् और सार्थक अन्तःबन्धन, योजन, लगाव, जुड़ाव, सम्पर्क, मिलन, मेल-मिलाप, रिश्ता-नाता, सहजीवन, सहगमन, सहकर्म, सहकार इत्यादि।

मानवीय रक्त-सम्बन्ध एवं रिश्ते को एक दूसरे का पर्याय मान लिया जाता है परन्तु सम्बन्ध संस्कृत का शब्द है जबकि रिश्ता पर्शियन या अरेबिक शब्द है। व्यवहार में सम्बन्ध व सम्बन्धी के स्थान पर रिश्ता व रिश्तेदार अधिक प्रचलन में है। रक्त सम्बन्ध तो जन्मजात होते हैं जबकि शेष सभी सम्बन्ध पारस्परिक व्यवहार व परिवेशगत परिस्थितियों के अनुरूप बनते, बिगड़ते और बदलते रहते हैं। सम्बन्ध भौतिक व भावात्मक दोनों ही प्रकार के होते हैं। भौतिक सम्बन्ध प्रायः स्थूल व अलौचशील होते हैं जबकि भावात्मक सम्बन्ध सूक्ष्म और संवेदनशील होते हैं। प्रकृति का प्रत्येक कण, पिण्ड, पुरुष या पदार्थ अपने आपमें अपूर्ण होता है पारस्परिक सम्बन्धता से ही परिपूर्णता परिपुष्ट होती है तो सबलता संवर्धित होती है।

व्यवहार में सम्बन्धों की विस्तृत शृंखलाएँ विद्यमान हैं उनमें से कुछ तो सहज स्वाभाविक और शाश्वत् होती है जबकि कुछ में देशकाल और परिवेशगत परिस्थितियों में परिवर्तन के अनुरूप परिवर्तन होते ही रहते हैं। सम्बन्धों की कुछ प्रचलित धारायें या शाखायें इस प्रकार है- रक्त-सम्बन्ध, वैचारिक, व्यावहारिक, व्यावसायिक, सामुदायिक, शासकीय, भाषायी, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, वैश्विक, सहजीवी, सहधर्मी, सहकर्मी, लौकिक, आध्यात्मिक, आत्मीय, प्रतिस्पर्धी, मैत्री सम्बन्ध, शत्रु-सम्बन्ध इत्यादि सम्बन्धों के तो अनन्त स्वरूप हैं। व्यक्ति स्वतन्त्र जन्मता जरूर है परन्तु जीवन-पर्यन्त सम्बन्धों के सघनजाल में संलिप्त होता जाता है। सम्बन्धों के तानेबाने का सार्थक गठन एवं सफलतापूर्वक निर्वहन का दूसरा नाम ही जीवन है।

सम्बन्धों के सार्थक तानेबाने अर्थात् सुखद परम्पराओं के नियोजित निर्माण और आमजन को आत्मसात् कराने में हजारों-हजार वर्षों में न जाने कितने दर्शनशास्त्रियों का परिश्रम और स्वेद सफलीभूत हुआ होगा ? दुर्भाग्य ही है कि वर्तमान वैज्ञानिक युग में संचारक्रान्ति ने सारे सम्बन्धों को तार-तार करके रख दिया है। वर्तमान के समलैंगिक सम्बन्ध, लीव इन रिलेशनशिप सम्बन्ध, टीवी चैनलों के फूहड़ धारावाहिकों की बढ़ती लोकप्रियता और मोबाइली स्वच्छन्दता परम्परागत आत्मीय सम्बन्धों का पूर्णतः सर्वनाश करते जा रहे हैं। सभी शासक, प्रशासक, श्रीमन्त, शास्त्री, सदगुरु जैसे समस्त नीति नियोजक एवं पथ-प्रदर्शक ही जब निराश, दुविधाग्रस्त, असहाय और निरुत्तर हैं तो आमजन से उम्मीद करना तो अर्थहीन ही है। ■

पुस्तक–परिचय

संस्कृत साहित्य में मानव मूल्य परम्परा

वर्तमान समय में अत्यन्त आवश्यक है कि **संस्कृत साहित्य में मानव मूल्य परम्परा** क्या है, इसके लिए डॉ. आशुतोष ने अथक प्रयास किया है। यह सराहनीय है। डॉ. पारीक ने अलग–अलग विद्वानों से इस सन्दर्भ में प्रयास किया है और पुस्तक में २६ विद्वानों का अपने–अपने विचारों के माध्यम से उनके विचारों को पुस्तक में स्थान दिया है। वैदिक परम्परा साहित्य का मूल्यांकन किया है। साहित्यकारों का लेखन का वेदों, उपनिषद् आदि से संस्कृत साहित्य में मानव मूल्य परम्परा को अपने–अपने आधारों पर समाज को सोचने व समझने का प्रयास किया है।

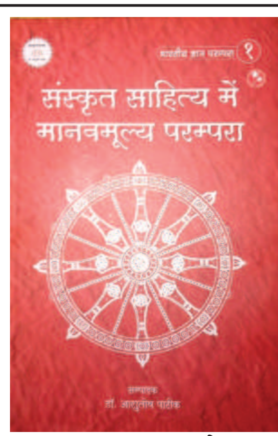

सम्पादक : डॉ. आशुतोष पारीक
मूल्य : ६९९ रु.
पृष्ठ संख्या : २५६

आज के भौतिकवाद के युग में हमारे गौरव की पहचान आवश्यक है। पाश्चात्य संस्कृति अपना प्रभाव बढ़ा रही है। अतः सभी भारतीय नागरिकों को इस पुस्तक का आद्योपान्त अध्ययन करना चाहिये और संस्कृत साहित्य में मानव मूल्य समझना और अधिकतम प्रयास किया जाए। मैं डॉ. पारीक को आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने अथक प्रयास से सम्पर्क सूत्र कर एक निधि को सबके सामने रखा है। डॉ. पारीक का साधुवाद। धन्यवाद। अधिक से अधिक लोग साहित्य का पठन–पाठन करें। वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त करें।

–देवमुनि

दीक्षा के बाद आचार्य ओमप्रकाश बने स्वामी ओमानन्द सरस्वती

माउंट आबू। आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय माउंट आबू के ३४वें वार्षिकोत्सव पर महाविद्यालय के आचार्य, प्रकाण्ड वैदिक विद्वान् ब्र. ओमप्रकाश जी ने देश भर से पहुँचे विद्वानों, आर्य समाजी व श्रद्धालुओं की उपस्थिति में विधि–विधान से संन्यास दीक्षा ली। दीक्षा लेने के बाद आचार्य ओमप्रकाश अब स्वामी ओमानन्द सरस्वती हो गए। कार्यक्रम में नई दिल्ली से आए स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने कहा कि भारतीय संस्कृति मानव को त्याग, तपस्या व सेवा से जोड़ती है। भारत के ऋषि–मुनियों ने अपने तप से मानवता का पाठ दुनिया को पढ़ाया है। समाज के चहुँमुखी विकास के लिए हर मानव प्राणी को तन–मन–धन से भी अधिक वेदों के सम्मान व उसके अध्ययन को महत्व देना चाहिए।

पद्मश्री डॉ. सुकामा आचार्य ने कहा कि वैदिक संस्कृति इदं न मम का भाव सिखाती है। वैदिक संस्कृति का हर परिस्थिति में सम्मान करना चाहिये। वेदाध्ययन की परम्परा अविच्छिन्न रूप से चल रही है। धर्म, अर्थ, मोक्ष की प्राप्ति के लिए अग्निहोत्र हवन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

गुरुकुल में किया अध्ययन

आचार्य ओमप्रकाश से बने नवदीक्षित स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने आर्ष गुरुकुल के संस्थापक अध्यक्ष देवलोकवासी स्वामी धर्मानन्द सरस्वती के सान्निध्य में गुरुकुल के शुरुआती दौर से ही वैदिक शिक्षा का अध्ययन किया जिसके उपरान्त उन्होंने इसी गुरुकुल में अध्यापन का कार्य आरम्भ किया। नवदीक्षित स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने कहा कि संन्यास के सिद्धान्तों की भावनाओं के अनुरूप जनहित में समर्पण रूप से सेवा करने के लिए संन्यास का मार्ग श्रेष्ठ है। जन्म–जन्मान्तर का पुण्य ही अनावश्यक इच्छाओं से परे समाज की सेवा के लिए प्रेरित करता है।

प्रो. कमलेश कुमार शास्त्री ने कहा कि आध्यात्मिकता मनुष्य की कार्यक्षमता को बढ़ाती है। विपरीत परिस्थितियों में भी समाजोत्थान कार्यों से किनारा नहीं करना चाहिये। देशहित के कार्य में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए भारतीय संस्कृति को प्राथमिकता देनी चाहिये। स्वामी चेतनानन्द, स्वामी सोमानन्द, प्रो. सुरेन्द्र कुमार, आचार्य धनंजय, आचार्य सुरभि, पं. लाभेन्द्र शास्त्री, कीर्तिचन्द्र शास्त्री, आचार्य रामनारायण, आचार्य विद्यानन्द सहित विभिन्न राज्यों से आए गुरुकुलों के आचार्यों ने भी विचार व्यक्त किये।

उदारमना माता मानवती देवी व उनके सुपुत्र डॉ. ओमवीर शर्मा तथा पुत्रवधू कमलेश कुमारी की दानशीलता

जो मानव संसार में करते परोपकार।
गुण गाता है रात–दिन, उनके यह संसार।।
धन पाकर के हर्ष से, जो करते हैं दान।
पाते हैं संसार में, वे निश्चित सम्मान।।
सुख पाओगे सज्जनो, करो भले सब काम।
राम–कृष्ण बनकर करो, अपना जग में नाम।।

प्रिय सज्जनो! संसार में कर्म प्रधान है। परमात्मा सबसे बड़ा दयालु, न्यायकारी है। उसके दरबार में किसी की सिफारिश नहीं चलती तथा उसके यहाँ रिश्वत भी नहीं चलती। वह प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों का यथायोग्य, उचित फल देता है। हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि ईश्वर ने हमें शुभ कार्य करने के लिए इस संसार में भेजा है। वह सबका माता–पिता, गुरु व सखा है। प्रभु सच्चा दाता है। इसलिए हमें भी धन पाकर बढ़–चढ़कर दान करना चाहिये। जो व्यक्ति धन का सही उपयोग करते हैं वे बड़े भाग्यशाली हैं। वे संसार में अमर हो जाते हैं। यह संसार उनका खुले मन से गुणगान करता है। ऐसे दानी धर्मात्मा हैं माता मानवती आर्या धर्मपत्नी स्व. डॉ. श्री कन्हैयालाल शर्मा तथा उनके सुपुत्र डॉ. ओमवीर शर्मा व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमलेश कुमारी निवासी ग्राम आली ब्राह्मण (मेवात), जनपद नूंह, हरियाणा। ये दानी धर्मात्मा महर्षि दयानन्द गुरुकुल भादस (नूंह) हरियाणा तथा महर्षि दयानन्द गौशाला मरोड़ा जनपद नूंह (हरियाणा) को सहयोग दे रहे हैं। ये सब उदारमना ईश्वर भक्त हैं। डॉ. ओमवीर शर्मा इस समय पुनाहाना मेवात नूंह में अस्पताल चलाकर समाज सेवा कर रहे हैं। इन्होंने वैदिक विद्वान् पं. नन्दलाल निर्भय की तथा दीवानचन्द्र आर्य की पुस्तकें प्रकाशित कराई थीं। ये वेद प्रचारकों का उपचार भी नि:शुल्क धर्म समझकर करते हैं। अभी गत दिनों तिथि २१–२२ जनवरी २०२४ को अपने ग्राम आली ब्राह्मण में इन्होंने देवयज्ञ कराया तथा पंडित नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य बहीन (पलवल) हरियाणा को बुलाकर वेद कथा एवं भजनोपदेश कराया था। इस अवसर पर उपस्थित हजारों व्यक्तियों ने धर्मलाभ उठाया। वेद कथा के उपरान्त सभी श्रोताओं को ऋषि लंगर लगाकर प्रसाद भी खिलाया था। इस पवित्र कार्य की सर्वत्र क्षेत्र में प्रशंसा हो रही है। परमात्मा ऐसे दानी, धर्मात्मा भारत में लाखों पैदा करे।

अन्त में प्रभु से मेरी प्रार्थना है–

विनय आपसे है यही, सुनिये जगदाधार।
मानवती परिवार का, करो नाथ उद्धार।।
जीवन भर करते रहें, ये खुश होकर दान।
निर्बलों–निर्धनों का करें, जीवन भर कल्याण।।

–शमशेर गोस्वामी
शिक्षाविद्, कोषाध्यक्ष आर्य समाज पुनाहाना (नूंह), हरियाणा

डोकवा गाँव में हुआ जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

खुशी का कोई भी अवसर हो उपहार स्वरूप वैदिक आर्ष साहित्य व महापुरुषों का जीवन चरित्र चित्रावली अपनाएं : योगाचार्य नरेन्द्र भारतीय

राजगढ़ (चूरू) तहसील के डोकवा गाँव में एक वैवाहिक कार्यक्रम में भात के दौरान युवा भारत मातृभूमि अभ्युदय इकाई भगतसिंह नवयुवक मण्डल संस्थान के जिला संयोजक योगाचार्य नरेन्द्र भारतीय ने सौभाग्यवती सुनीता, बबली एवं सिमरन को वैदिक वंदना प्रस्तुत कर गृहस्थ आश्रम प्रवेश की मंगलकामनाएँ जीवेम् शरदः शतम् का शुभाशीष प्रदान कर डोकवा के विद्यालय पुस्तकालय के लिए वैदिक संसार विशेषांक, महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी, वीर वीरांगना चित्रावली भेंट कर इस प्रकार के जागरूकता अभियान को अपनाने का आह्वान करते हुए थाली में जूठन नहीं छोड़ने का संकल्प कराया।

कार्यक्रम में उपस्थितजनों चौधरी रणवीर टोकस, सत्यप्रकाश जाखड़, पालूराम स्वामी, मांगेराम, प्रदीप जाखड़ राजेंद्र, अनिल, रिशाल धिन्धवाल, चौधरी सुरेश, अर्जुनसिंह, बिरसिंह रणवा, मास्टर रनसिंह धिंधवाल, देवेंद्र, जयवीर, राजेश धांधू, विजय गोदारा, धर्मपाल बेनीवाल, जोगेंद्र अर्ध, लालचंद गोस्वामी, हेमराज, सुरेन्द्र मुंदी, अमित, जगदीश, मानसिंह, जिलेसिंह, रामस्वरूप पचार, संदीप, सत्यवीर, धुपसिंह, सुनील जाट, मदनलाल धानिया, नरेश जांगिड आदि ने शास्त्री भजनलाल शर्मा के सानिध्य में जागरूकता अभियान को सफल बनाने का संकल्प लिया।

आयोजक परिवार की ओर से तेजपाल फौजी, बलवान डोकवा, रणधीर, रजनीश, मनसुख, जयप्रकाश टोकस व पवन धिन्धवाल ने योगाचार्य नरेन्द्र भारतीय का श्री फल भेंट कर सम्मान किया। जनप्रतिनिधि निवर्तमान सांसद राहुल कस्वां, पूर्व सरपंच कोरम अध्यक्ष राजकुमार बेनीवाल, समाजसेवी सत्यप्रकाश जाखड़, सरपंच प्रत्याशी प्रदीप जाखड़ व युवा टोली ने अभियान की प्रशंसा करते हुए हर सम्भव सहयोग का आश्वासन दिया व समाज जागरण में इस प्रकार की मुहीम की आवश्यकता पर बल दिया।

रामपुरा व नौरंगपुरा में हुआ भूमि सुपोषण व संरक्षण जन अभियान

ग्लोबल वार्मिंग का एक मात्र समाधान - भूमि सुपोषण के साथ पर्यावरण संरक्षण : योगाचार्य नरेन्द्र

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ग्राम विकास गतिविधि के अक्षय तृतीया से शुरू भूमि सुपोषण एवं संरक्षण (पर्यावरण व जैव विविधता) हेतु जन जागरूकता अभियान के अन्तर्गत जिला ग्राम विकास संयोजक योगाचार्य नरेन्द्र भारतीय व सांखु खण्ड के खण्डकार्यवाह अमरसिंह डेरुवाल के सानिध्य में रामपुरा स्थित एक शिवालय में सेवानिवृत्त विंग कमाण्डर दिनेश शर्मा व नौरंगपुरा स्थित श्री गौरक्षनाथ गोशाला प्रांगण में मिलन प्रमुख विजेन्द्र स्वामी की अध्यक्षता में ग्राम विकास योजना बैठकों में जागरूकता अभियान का आयोजन हुआ।

योगाचार्य भारतीय ने ग्राम विकास गतिविधि के विषय स्वावलम्बन, गो आधारित जैविक कृषि, रसोईघर औषधालय, गृह वाटिका, ग्रामोद्योग, कचरे से कंचन, प्लास्टिक मुक्ति हेतु ईकोब्रिक निर्माण, बिजोपचार, संजीवामृत, घंजीवामृत, खाद व गोमूत्र नीमादि से जैविक कीटनाशक बनाने की विधि पर प्रकाश डालते हुए पर्यावरण संरक्षण के लिए भूमि सुपोषण अभियान की वैज्ञानिकता, प्रमाणिकता व सार्वभौमिकता पर प्रकाश डाला और प्रकृति के साथ समन्वय व पर्यावरण संरक्षण को ही ग्लोबल वार्मिंग से मुक्ति का एकमात्र समाधान बतलाया इसके लिए अधिकाधिक वृक्षारोपण का आह्वान किया। शिक्षाविद अमरसिंह डेरुवाल ने ग्रामोदय से राष्ट्रोदय के लिए व्यक्ति निर्माण की संघीय अवधारणा शाखा, मिलन बैठक, मिलन मण्डली की नियमितीकरण व सक्रियता पर बल दिया।

इस अवसर पर सामाजिक समरसता खण्ड संयोजक एक्स विंग कमाण्डर दिनेश शर्मा, हरिश्चन्द्र, रामचन्द्र मीणा, सतीश शर्मा, अमरसिंह, राजेन्द्र सिंह शेखावत, विचित्रानन्द शास्त्री, लीलाराम मेघवाल, ललित कुमार, कुरड़ाराम आदि तथा नौरंगपुरा में किशनलाल शर्मा, महेन्द्रसिंह पूनियाँ, मुकेश काजला, धर्मपाल, डॉ. मनोज कुल्हरी, प्रगतिशील किसान रूपचन्द मेघवाल, बुधराम बंजारा, पशु चिकित्सक डॉ. मनोज जिल्लोहा, मिस्त्री जगदीश साईं, बिजेन्द्र स्वामी, रूपचन्द जिल्लोहा आदि ग्रामीण गोसेवको की भागीदारी रही। सभी उपस्थितजनों ने सिंगल यूज प्लास्टिक व केमिकल युक्त फ़र्टिलाइज़र का बहिष्कार कर वर्षा ऋतु में अधिकाधिक वृक्षारोपण का संकल्प लिया।

महर्षि दयानन्द आश्रम, बड़वानी पर मासिक अतिथि यज्ञ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम बड़वानी पर प्रति मास प्रथम शनिवार और रविवार किया जाने वाला तृतीय मासिक **अतिथि यज्ञ** आचार्य सन्दीप जी रैकवार,भोपाल के मुख्य आतिथ्य में तथा श्री नकुलसिंह जी खरते, अधीक्षक संयुक्त बालक छात्रावास बड़वानी के मुख्य यजमानत्व में दिनांक ४ मई को सायंकाल और ५ मई को प्रातःकाल हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस **मासिक अतिथि यज्ञ** के अन्तर्गत यज्ञ-संध्योपासना और जीवन निर्माण हेतु आवश्यक कल्याणकारी अतिथि विद्वान् के प्रवचन, मार्गदर्शन का लाभ आश्रम निवासरत विद्यार्थियों के अतिरिक्त मुख्य यजमान की सुपुत्री कु. शीतल, कु. पायल व सुपुत्र करणसिंह तथा आश्रम के बाहर से पधारे विद्यार्थी अतुल जमरे, आशीष, सपना बघेल, रानी बघेल, सोनम सोलंकी, निर्मला गारडे, गायत्री खन्ना व श्रीमती निर्मला शर्मा, श्रीमती योगिता शर्मा, श्रीमती बरखा शर्मा ने भी प्राप्त किया अतिथि बालक-बालिकाओं को प्रारम्भिक शिक्षा, आर्य मान्यताएं, महर्षि दयानन्द सरस्वती की सचित्र जीवनी आदि साहित्य भेंट किया गया।

आचार्य सन्दीप जी द्वारा रविवार को प्रातः ७ बजे व्यायाम की कक्षा में मनुष्य जीवन में व्यायाम की आवश्यकता और महत्व पर प्रकाश डालते हुए विभिन्न व्यायाम का प्रशिक्षण भी दिया गया।

दोनों सत्रों में सभी के भोजन की व्यवस्था व अतिथि का आत्मीय सम्मान आश्रम संचालक सुखदेव शर्मा की ओर से किया जाकर स्नेहपूर्वक विदा किया गया।

अतिथि के रूप में अपनी गरिमामयी उपस्थिति देने तथा अतिथि यज्ञ का लाभ प्राप्त करने के इच्छुक महानुभावों का आश्रम पर स्वागत है। कृपया ९४२५०६९४९१ पर सम्पर्क करें। **(चित्र देखें पृष्ठ ३५ पर)**

महर्षि दयानन्द आश्रम बड़वानी के मई मास के अतिथि यज्ञ के ब्रह्मा अतिथि का परिचय

- **नाम :** आचार्य सन्दीप रैकवार
- **निवासः** भोपाल, म. प्र.
- **जन्म दिनांकः** १९.११.१९७९
- **जन्म स्थानः** पन्ना (म.प्र.)
- **शिक्षाः** एम ए, आचार्य, बी एड
- **प्रान्ताध्यक्षः** राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
- **प्रान्तीय सचिवः** राष्ट्रीय आर्य संरक्षिणी सभा
- **संस्कृत सम्भाषण प्रशिक्षकः** महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान, मध्यप्रदेश
- **समर्पण :** संस्कृत, वेद, योग, यज्ञ, आयुर्वेद और राष्ट्र
- आर्य पी एस यादव मण्डीदीप, जिला रायसेन की प्रेरणा से आप वर्ष २०११ में आर्य समाज के सम्पर्क में आए और पूर्णरूपेण ऋषि दयानन्द भक्त आर्य समाज के सेनानी बन गए।

नहीं रहे वयोवृद्ध शिक्षाविद् श्री कन्हैयालाल जी रतावजिया, वेदोक्त विधि से शुद्धियज्ञ तथा पगड़ी लोकाचार सम्पन्न

आर्य समाज नीमच म. प्र. के उपप्रधान, संरक्षक आदि पदों को सुशोभित करने वाले, ९७ वर्ष आयु तक साइकिल से आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में उपस्थित होने वाले, सरल, सहज, संयमित-नियमित दिनचर्या के धनी, कर्मठ, सेवाभावी, सदैव प्रसन्नचित्त रहने वाले पूर्व जिला शिक्षाधिकारी श्रद्धेय कन्हैयालाल जी रतावजिया, नीमच का निधन १०१ वर्ष की आयु अवस्था में दिनांक २० अप्रैल २०२४ को हो गया। १० सितम्बर १९२३ को इन्दौर में श्री रामधन जी शर्मा (रतावजिया) एवं श्रीमती केसरबाई शर्मा के घर आपका जन्म हुआ। आप शासकीय बालक उ.मा.वि. क्रमांक १ व २ नीमच में प्राचार्य रहे और पदोन्नत होकर जिला शिक्षाधिकारी उज्जैन के पद को भी आपने सुशोभित किया। सामाजिक और राष्ट्रीय सरोकारों के प्रति समर्पित श्री रतावजिया जी का अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, सत्य सांई सेवा संगठन, गायत्री शक्ति पीठ और नारायण सेवा संस्थान उदयपुर आदि संस्थानों को समर्पित रहा। आप कट्टरवादी न होकर सरल सहज उदारमना थे। संघ के पुरोधा डॉक्टर हेडगेवार, पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी, पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा, पूर्व संघ संचालक रज्जू भैया, कुशाभाऊ ठाकरे के सान्निध्य में रहकर आपको कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वैदिक संसार व वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा के प्रति आपका अगाध आत्मीय स्नेह था। दिनांक १ मई को आपके नीमच निवास पर आर्य समाज नीमच के प्रधान श्री मनोज जी सोनी के ब्रह्मत्व तथा आर्य वीर दल के प्रवीण जी आर्य व वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा की उपस्थिति एवं परिजनों के यजमानत्व में शुद्धियज्ञ किया जाकर सामाजिक लोकाचार पगड़ी कार्य सम्पन्न किया गया। आप अपने पीछे अनुज राजेन्द्र रतावजिया, बड़वानी तथा दो सुपुत्र प्रद्युम्न रतावजिया प्राध्यापक कन्या हायर सेकेण्डरी स्कूल सेन्धवा व याग्वल्क्य रतावजिया, नीमच का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। वैदिक संसार परिवार दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

कन्हैयालाल जी रतावजिया

महर्षि दयानन्द आश्रम, बड़वानी (म.प्र.) पर सम्पन्न तृतीय 'मासिक अतिथि यज्ञ' की चित्रावली

४ मई शनिवार को सायंकालीन सत्र में देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ एवं प्रवचन आचार्य सन्दीप जी रैकवार के ब्रह्मत्व में सम्पन्न। (विस्तृत विवरण पृष्ठ ३४ पर)

५ मई रविवार को मासिक अतिथि यज्ञ, साप्ताहिक यज्ञ-सत्संग के साथ आचार्य सन्दीप जी रैकवार के ब्रह्मत्व में सम्पन्न

वृहद देवयज्ञ में आहुति प्रदान करते मुख्य यजमान श्री नकुलसिंहजी खरते विद्यार्थीगण एवं अन्य उपस्थितजन

मासिक अतिथि यज्ञ के अतिथि आचार्य सन्दीप रैकवार का भावभीना अभिनन्दन विद्यार्थी पर्वत मौर्य के द्वारा

मुख्य यजमान श्री नकुलसिंह खरते व बच्चों को वैदिक साहित्य भेंट करते आचार्य सन्दीप जी

बाहर से पधारे विद्यार्थियों को आश्रम की बालिका प्रज्ञा व नेहा वैदिक साहित्य भेंट करते हुए

मासिक अतिथि यज्ञ के ब्रह्मा सन्दीप जी रैकवार के साथ उपस्थित विद्यार्थियों, मुख्य यजमान एवं परिजनों के सामूहिक चित्र

एम.पी.एच.आई.एन.-२०१२/४५०६९ ● सम्पादक : ओमप्रकाश आर्य ● डाक पंजीयन : एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०२४-२६

मान्यवर! अगर आपने अभी तक 'वैदिक संसार विशेषांक' प्राप्त नहीं किया है तो निश्चित मानिये, यह स्वर्णिम अवसर आपके हाथ से निकल जाएगा और आप इसे

ढूँढते रह जाओगे

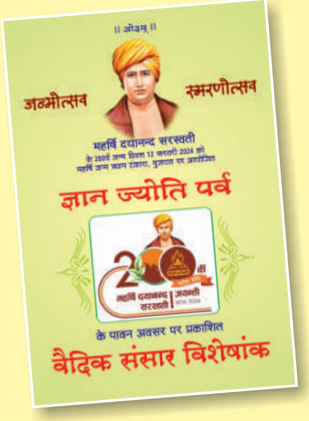

क्योंकि विशेषांक वितरण का कार्य द्रुत गति से संचालित हो रहा है और यह सम्पूर्ण भारत के कोने-कोने में पहुँच चुका है। सनातन धर्म संस्कृति में आस्था रखने वाले प्रत्येक जन को इसे मँगवाना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि यह कृति प्रभु कृपा और प्रेरणा से अस्तित्व में आई है अन्यथा मैं तो अत्यन्त सामान्य कोटि का एक कार्यकर्ता हूँ। मुझमें तो इस कार्य का ज्ञान और सामर्थ्य तो एक दिवास्वप्न है। यह वह विलक्षण और अद्भुत कृति है कि प्रभु कृपा और प्रेरणा के बिना उच्च कोटि का विद्वान् भी इसे इतने उत्कृष्ट स्वरूप और उपयोगी नहीं बना सकता। यह कृति आपके परिवार में होगी तो आपको तो जीवन पर्यन्त लाभान्वित करेगी ही। आपके न रहने पर आपकी भावी पीढ़ी को भी सनातन धर्म संस्कृति के मूलभूत वास्तविक सिद्धान्तों से अवगत करवाएगी। साथ ही विष पीकर मानव जाति को परमपिता परमेश्वर की कल्याणी वाणी वेद का अमृत पिलाने वाली, वेदोद्धारक, महान् विभूति देव दयानन्द के जीवन की प्रमुख घटनाओं को अत्यन्त आकर्षक चित्र व संक्षिप्त विवरण के साथ अवगत कराएगी। तो अभी इसी समय ९४२५०६९४९१ पर हमें विशेषांक सहयोगार्थ न्यूनतम सहयोग राशि ११०० रु. के साथ आदेश प्रदान करें। -धन्यवाद

विनम्र निवेदन : अगर आपने विशेषांक प्राप्त कर लिया है और आप विशेषांक के कार्य से सन्तुष्ट हैं तो अपने सम्पर्क के अधिक से अधिक बन्धुओं को विशेषांक प्रति मँगवाने के लिए प्रेरित कर पुण्यार्जन कीजिये। -धन्यवाद

शिवगंगा मार्बल, एनासन (नरोड़ा), अहमदाबाद के स्वामी, वैदिक धर्म के समर्पित भामाशाह, उदारमना श्री शिवजी भाई के. पटेल व आपके सुपुत्र श्री विठ्ठल भाई पटेल को उनके प्रतिष्ठान पर विशेषांक प्रति भेंट की गई। साथ में हैं श्री देवदत्त जी शर्मा अहमदाबाद। आपकी प्रेरणा से शिवजी भाई ने वैदिक संसार को पुण्यात्मक सहयोग प्रदान किया।

वैदिक संसार के प्रतिनिधि देवदत्त जी शर्मा, अहमदाबाद के द्वारा श्री गणेश वुडन इण्डस्ट्रीज, सरकेज के स्वामी श्री जयन्तीभाई पटेल, घोड़ासर, अहमदाबाद को वैदिक संसार की प्रति भेंट की गई। देवदत्त जी की प्रेरणा से श्री जयन्ती भाई लालजी भाई द्वारा वैदिक संसार को पुण्यात्मक सहयोग प्रदान किया गया।

वैदिक संसार के संरक्षक सदस्य व अभिन्न सहयोगी, वरिष्ठ समाजसेवी, आशुतोष इंटीरियर के स्वामी श्री सीतारामजी शर्मा को आपके वाडज, अहमदाबाद स्थित कार्यालय पर विशेषांक प्रति भेंट की गई।

वैदिक संसार के संरक्षक सदस्य व अभिन्न सहयोगी श्री ओमप्रकाश जी शर्मा व आपकी धर्मपत्नी वरिष्ठ समाजसेविका योगाचार्य श्रीमती सुमित्रादेवी शर्मा को आपके नरोडा, अहमदाबाद स्थित आवास पर विशेषांक प्रति भेंट की गई।

स्मृतिशेष पं. कमलेशकुमार अग्निहोत्री के परम शिष्य, वैदिक संसार के संरक्षक सदस्य व अभिन्न सहयोगी, वरिष्ठ समाजसेवी, गो दुग्ध उत्पाद प्रतिष्ठान गो अमृत, अहमदाबाद के स्वामी श्री महेन्द्र (कालू भाई) आर्य को आपके प्रतिष्ठान पर विशेषांक प्रति भेंट की गई।

वैदिक संसार के अभिन्न सहयोगी, वरिष्ठ समाजसेवी, दैनिक अग्निहोत्री, आर्य समाज ब्यावर के अनेक पदों को सुशोभित करने वाले ८५ वर्षीय योगाचार्य श्री किशनलालजी जांगिड एवं आपकी धर्मपत्नी श्रीमती कल्पना जी जांगिड दोनों अध्यापक पद से सेवानिवृत्त को आपके ब्यावर, राजस्थान स्थित आवास पर विशेषांक प्रति भेंट की गई।

भार्गव ब्राह्मण समाज के प्रान्ताध्यक्ष श्रीमान् अशोक जी चतुर्वेदी, चन्द्रभागा, इन्दौर को अखिल भारतीय कान्यकुब्ज महासभा के महामन्त्री तथा ब्राह्मण सेवा संगठन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, वैदिक संसार के अनन्य भक्त श्री रामचन्द्रजी दुबे, इन्दौर प्रतिनिधि के रूप में विशेषांक प्रति भेंट करते हुए।

गोपाल बॉडी बिल्डर, भमोरी, इन्दौर के स्वामी, मेरे काका श्वसुर श्री पूरणमलजी जांगिड एवं आपके सुपुत्र गोपाल जी जांगिड को विशेषांक प्रति भेंट करते हुए।

विजयनगर, जिला अजमेर के पार्षद श्री ऋषि जी शर्मा तथा आपकी धर्मपत्नी श्रीमती पूजा शर्मा अध्यापिका, आर्य समाज विजयनगर की सक्रिय सदस्य को आपके आवास पर विशेषांक प्रति भेंट की गई।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्राफिक्स, २४, कुँवर मण्डली से मुद्रित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर-१८ से प्रकाशित